माहेश्वरी परिवारों के लिए

माहेश्वरी विवाह की रस्में

हम जो करते हैं, क्यों करते हैं

अरुण अग्रवाल



॥ शुभ विवाह ॥

माहेश्वरी विवाह की रस्में



हम जो करते हैं, क्यों करते हैं

माहेश्वरी परिवारों के लिए

अरुण अग्रवाल

माहेश्वरी विवाह की रस्में

हम जो करते हैं, क्यों करते हैं

© 2026 अरुण अग्रवाल। सर्वाधिकार सुरक्षित।

पहला संस्करण, नवंबर 2026।

ISBN 978-81-184702-1-2 (PDF ई-बुक)

प्रकाशक: EbizIndia Consulting Pvt. Ltd.
Module 412, SDF Building, Salt Lake Sector V
Kolkata 700091, West Bengal, India
www.weddingplanning.in

शादी के रीति-रिवाज़ हर परिवार में और हर इलाके में थोड़े अलग होते हैं। यह किताब बताती है कि माहेश्वरी परिवार आम तौर पर क्या करते हैं, जैसा समाज के अपने लिखे हुए स्रोतों में दर्ज है। जिन अलग-अलग तरीकों की इसमें जानकारी है, उनका भी यह ज़िक्र करती है। शादी के दिन आपके परिवार की परंपरा और आपके परिवार के पंडित जी की बात ही मानी जाएगी।

इस किताब के सभी चित्र मौलिक हैं।

उन नए जोड़ों के लिए, जो इन रीतियों को आगे ले जाएँगे, और उन बड़े-बुज़ुर्गों के लिए, जिन्होंने इन्हें हमारे लिए सँभालकर रखा।

विषय-सूची

हर रस्म, थोड़े में 6

प्रस्तावना 9

आभार 11

इस किताब को कैसे पढ़ें 12

भाग शून्य: रस्मों से पहले 16

माहेश्वरी कौन हैं? 17

रस्में आख़िर क्यों? 21

शादी का पूरा क्रम, एक नज़र में 24

भाग एक: वचन 27

1 सगाई और रोकना: सबके सामने वचन 28

2 मुद्दा टीका और चीकणी कोथली: टीके की दो रस्में 32

3 बीच के महीने: त्योहारों के नेग और न्योते 36

आम सवाल 40

भाग दो: घर में शादी की शुरुआत 42

4 नान्दीमुख: सबसे पहले पुरखे 43

5 गीत: पहले पाँच गीत देवी-देवताओं के 47

6 बत्तीसी न्यूतना: माँ के भाइयों को न्योता 51

7 विवाह हाथ और मूंग बिखेरना: घर में शादी की शुरुआत 55

8 सावा पूजन, विनायक और लग्न 59

9 बान और तणी: घर में रहना और डोरी बाँधना 63

10 शादी की रसोई: धान रोळना, चाक पूजन और मूंगधणा 67

11 मायरा और बीर भोजन: मामा का आना 71

आम सवाल 75

भाग तीन: उत्सव 77

12 मेहंदी 78

13 बनोरी, सांझा और सांकड़ी: शामें और शादी से पहले की रात 82

14 पीठी, झोळ और लख: हल्दी, दही और बरकत की कामना 86
15 कांकण डोरा, मायां और गणगौर: डोरा, थापना और गौरी 90
16 बरी, स्तम्भ रोपण और कन्यावल: दुल्हन के द्वार पर ससुराल 94
आम सवाल 98

भाग चार: विवाह का दिन 100

17 बीन राजा: सजना, घोड़ी पूजा और निकासी 101
18 वरणा: गोत्र का उच्चारण 105
19 ढुकाव और तोरण: द्वार पर दूल्हा 109
20 सुवाली और वरमाला: मालाएँ 113
21 मामा फेरे: बाहर के फेरे 117
22 कन्यादान, गठजोड़ा और हथलेवा 121
23 लाजाहोम, शिला और अग्नि के चार फेरे 125
24 सप्तपदी, ध्रुव दर्शन और सिंदूर 129
25 फेरों के बाद: सुहागबीड़ी, जूता छुपाई और बड़ा भात 133
26 पेहरावनी, सिर-गूंथी और थली पूजन: लड़की वालों की ओर से मान 137
आम सवाल 141

भाग पाँच: नई शुरुआत 143

27 बिदाई 144
28 वधू प्रवेश और थालेड़ी: सात थालियाँ 148
29 सुहाग थाल, कोथली और मुंह दिखाई: घर बहू से मिलता है 152
30 जूवा-जूई और कांकण डोरा खोलना: खेल 156
31 कंवर कलेवा और मांडा झांकना: पीहर का बुलावा 160
32 मायां उठाना, गणेशजी का चूरमा और सीख: शादी का समापन 164
33 चूड़ा और गठजोड़े की जात 168
आम सवाल 172

समापन .....

पूरी शादी, एक कहानी की तरह 174
रस्मों का मतलब बनाए रखें: परिवारों के लिए कुछ सुझाव 176
शब्दावली 179
स्रोत और आगे पढ़ने के लिए 192
लेखक के बारे में 196

हर रस्म, थोड़े में

सभी तैंतीस रस्में, उसी क्रम में जिसमें वे आम तौर पर होती हैं, हर एक बस एक पंक्ति में। समय, जगह और कौन निभाता है, यह जानने के लिए "शादी का पूरा क्रम, एक नज़र में" देखिए।

भाग एक: वचन

1. **सगाई और रोकना: सबके सामने वचन** दोनों पक्ष एक-दूसरे की गोद भरते हैं और सबके सामने कहते हैं कि रिश्ते की तलाश पूरी हुई।

2. **मुद्दा टीका और चीकणी कोथली: टीके की दो रस्में** दुल्हन का भाई दूल्हे के घर जाकर उसके माथे पर टीका करता है; फिर दूल्हे के घर की महिलाएँ बदले में दुल्हन के घर आती हैं।

3. **बीच के महीने: त्योहारों के नेग और न्योते** हर त्योहार पर उपहार एक घर से दूसरे घर जाते हैं, और शादी से तीन महीने और एक महीने पहले कार्ड बँटते हैं।

भाग दो: घर में शादी की शुरुआत

4. **नान्दीमुख: सबसे पहले पुरखे** सबसे पहले पुरखों का सम्मान होता है, और अब परिवार में कुछ भी हो जाए, शादी रुक नहीं सकती।

5. **गीत: पहले पाँच गीत देवी-देवताओं के** पहले पाँच गीत देवी-देवताओं के, फिर बन्ना-बन्नी; हर रस्म का अपना गीत है।

6. **बत्तीसी न्यूतना: माँ के भाइयों को न्योता** माँ हर चीज़ बत्तीस-बत्तीस लेकर अपने पीहर जाती है और भाइयों को मायरा भरने का न्योता देती है।

7. **विवाह हाथ और मूंग बिखेरना: घर में शादी की शुरुआत** घर में शादी शुरू होती है; हरे मूंग बीने जाते हैं ताकि घर हरा-भरा रहे।

8. **सावा पूजन, विनायक और लग्न** गणेशजी का आह्वान होता है, परिवार का एक छोटा लड़का उनका रूप बनता है, और शुभ घड़ी गुलाबी काग़ज़ पर लिखी जाती है।

9. **बान और तणी: घर में रहना और डोरी बाँधना** दुल्हन या दूल्हे को घर में रखकर उसकी रक्षा की जाती है, और मंडप के आर-पार डोरी बाँधी जाती है।

10. **शादी की रसोई: धान रोळना, चाक पूजन और मूंगधणा** महिलाएँ अनाज को सात बार एक-दूसरे को देती हैं; बर्तन और ईंधन काम में लेने से पहले पूजे जाते हैं।

11. **मायरा और बीर भोजन: मामा का आना** माँ के भाई कपड़े और हाथीदाँत का चूड़ा लेकर आते हैं, और उनकी बहन उन्हें भोजन कराती है।

भाग तीन: उत्सव

12. **मेहंदी** मेहंदी दूल्हे के घर से आती है; दाई हथेली पर हथलेवे के लिए एक गोल जगह ख़ाली छोड़ी जाती है।

13. **बनोरी, सांझा और सांकड़ी: शामें और शादी से पहले की रात** शाम की बनोरी और गीत, रात भर का जागरण, और वह भोर जिससे शादी का दिन शुरू होता है।

14. **पीठी, झोळ और लख: हल्दी, दही और बरकत की कामना** ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर हल्दी, पिता के हाथों डाला गया दही, लखपति बनने की कामना; मामा आपको पाटे से उठाता है।

15. **कांकण डोरा, मायां और गणगौर: डोरा, थापना और गौरी** रक्षा का डोरा बँधता है, शादी की थापना होती है, और दुल्हन-दूल्हा दोनों अलग-अलग गौरी पूजते हैं।

16. **बरी, स्तम्भ रोपण और कन्यावल: दुल्हन के द्वार पर ससुराल** दूल्हे का घर दुल्हन को सजाता है, उसके बड़े दुल्हन के मंडप का खंभा गाड़ते हैं, और दुल्हन के माता-पिता का उपवास शुरू होता है।

भाग चार: विवाह का दिन

17. **बीन राजा: सजना, घोड़ी पूजा और निकासी** दूल्हा सजता है, उसकी माँ घोड़ी की पूजा करती है, जंवाई लगाम थामते हैं, और एक छोटी बच्ची उसकी रक्षा करती है।

18. **वरणा: गोत्र का उच्चारण** दुल्हन के पिता दूल्हे के पैर धोते हैं, और दोनों पंडित ऊँची आवाज़ में दोनों वंशों का उच्चारण करते हैं।

19. **ढुकाव और तोरण: द्वार पर दूल्हा** नीम और कटार से सात वार, और दुल्हन की माँ का दूल्हे की नाक पकड़ना।

20. **सुवाली और वरमाला: मालाएँ** सात तली हुई सुवालियाँ और चावल का एक गोला, फिर वरमाला, पहले दुल्हन।

21. **मामा फेरे: बाहर के फेरे** मामा के साथ दुल्हन फूल लेकर दूल्हे के चारों ओर तीन बार घूमती है, पार्वती की कथा की याद में।

22. **कन्यादान, गठजोड़ा और हथलेवा** पिता बेटी को सौंपते हैं, दूल्हा उसका हाथ थामता है, और मूंग और चावल के साथ गाँठ बाँधी जाती है।

23. **लाजाहोम, शिला और अग्नि के चार फेरे** भाई उसके हाथ खील से भरता है; वह शिला पर पैर रखती है; चार फेरे, जिनमें से तीन में वह आगे चलती है।

24. **सप्तपदी, ध्रुव दर्शन और सिंदूर** सात क़दम, अटल तारा, हृदय का स्पर्श, और वह दूल्हे के बाईं ओर आ जाती है।

25. **फेरों के बाद: सुहागबीड़ी, जूता छुपाई और बड़ा भात** महिलाओं के उपहार, छुपाए गए जूते, माता-पिता का उपवास टूटना, और ससुराल वालों से पहले देवताओं को भोग।

26. **पेहरावनी, सिर-गूंथी और थली पूजन: लड़की वालों की ओर से मान** लड़की वाले लड़के वालों का मान करते हैं; दुल्हन अपनी सास की गोद में बैठती है; देहरी की पूजा होती है।

भाग पाँच: नई शुरुआत

27. **बिदाई** पहिए के नीचे नारियल, पहियों पर पानी, और ट्रंक से बँधी सोलह रोटियाँ।

28. **वधू प्रवेश और थालेड़ी: सात थालियाँ** बहनें द्वार रोकती हैं; दूल्हा कटार से सात थालियाँ अलग करता है और दुल्हन बिना आवाज़ किए उन्हें एक के ऊपर एक रखती है।

29. **सुहाग थाल, कोथली और मुंह दिखाई: घर बहू से मिलता है** महिलाओं का थाल, सोने के सिक्के वाली रुपयों की थैली, और घर अपनी बहू से मिलता है।

30. **जूवा-जूई और कांकण डोरा खोलना: खेल** एक हाथ बनाम दो हाथ से अँगूठी ढूँढना, और कलाई के डोरे खोलना।

31. **कंवर कलेवा और मांडा झांकना: पीहर का बुलावा** दुल्हन के घर दूल्हे का कलेवा, और जोड़े का पहली बार पीहर लौटना, जिन्हें दुल्हन का भाई लेने आता है।

32. **मायां उठाना, गणेशजी का चूरमा और सीख: शादी का समापन** थापना उठाई जाती है, गणेशजी का धन्यवाद होता है, और दुल्हन पहली बार अपने पीहर जाती है।

33. **चूड़ा और गठजोड़े की जात** हाथीदाँत की चूड़ियों की जगह लाख की चूड़ियाँ, और जोड़े को परिवार के अपने देवी-देवताओं के सामने ले जाना।

मैंने यह किताब क्यों लिखी

इस किताब से पहले मैंने अग्रवाल शादी पर एक किताब लिखी थी। उसकी प्रस्तावना के आख़िर में मैंने कहा था कि शायद आगे माहेश्वरी शादी पर भी एक किताब आए। यह वही किताब है।

इसे लिखने की वजह भी वही है जो पहली किताब की थी। बहुत से परिवारों में शादी की रस्में बड़े ध्यान से निभाई जाती हैं, पर उन्हें कोई समझाता नहीं। पूछिए कि फलाँ चीज़ क्यों की जाती है, तो अक्सर जवाब मिलता है, "क्योंकि हमेशा से ऐसा ही होता आया है।" पहले की पीढ़ियों के लिए यह जवाब काफ़ी था। आज के बहुत से नौजवानों के लिए नहीं है, जो अपनी ज़िंदगी की हर दूसरी बात पर "क्यों" पूछते हैं। जब कोई उन्हें बता नहीं पाता, तो वे मान लेते हैं कि रस्में बेमतलब की पुरानी आदतें हैं, जिन्हें बस बड़ों का मन रखने के लिए बैठकर झेलना है। और कुछ की तो इनमें दिलचस्पी ही ख़त्म हो जाती है।

मुझे लगता है कि यह एक नुकसान है, और ऐसा नुकसान जिसे टाला जा सकता है। रस्में खोखली नहीं हैं। ज़्यादातर रस्मों का साफ़ मतलब है: आशीर्वाद का, रक्षा का, दो परिवारों के बंधन का, गवाहों के सामने दिए गए वचन का, एक बेटी के एक घर से विदा होकर दूसरे घर में आने का। बात बस इतनी है कि रस्में तो पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती रहीं, पर उनका मतलब साथ-साथ नहीं पहुँचा।

इसलिए यह किताब हर रस्म के लिए दो काम करती है। पहला, यह बताती है कि क्या होता है, क़दम-दर-क़दम, ताकि शादी के दिन कोई उलझन में न रहे। दूसरा, यह समझाती है कि ऐसा क्यों किया जाता है, ताकि दुल्हन, दूल्हा, खील लिए खड़ा भाई और फूलों की टोकरी थामे बहन, सब जानें कि वे क्या कर रहे हैं। जो नौजवान किसी रस्म को समझ लेता है, वह उसमें मन से शामिल होता है, उस दर्शक की तरह नहीं जो बस कहा हुआ करता जाता है।

माहेश्वरी संस्करण क्यों

माहेश्वरी शादी में बहुत कुछ दूसरी मारवाड़ी शादियों जैसा ही है: मायरा भरने आते माँ के भाई, पीठी की हल्दी, द्वार पर तोरण, बिदाई के आँसू। लेकिन समाज की अपनी रस्में हैं, अपने शब्द हैं और अपना क्रम है, और ये सब किसी और की किताब में बस एक छोटी-सी टिप्पणी से कहीं ज़्यादा जगह की हक़दार थीं।

परिवार का एक छोटा लड़का विनायक बनता है और हर रस्म में दुल्हन या दूल्हे के पास बैठता है। दुल्हन और दूल्हा, दोनों अलग-अलग सात सुहागिनों के साथ गणगौर पूजते हैं। अग्नि के फेरों से पहले, मामा फेरे में दुल्हन का मामा उसे दूल्हे के चारों ओर तीन बार घुमाता है, और यह उस कथा की याद है जिसमें पार्वती और महेश ने पहले माहेश्वरी विवाहों को फिर से जोड़ा था। अग्नि के सामने जोड़ा चार फेरे लेता है। दूल्हे के

द्वार पर थालेड़ी की रस्म में दुल्हन बिना आवाज़ किए सात थालियाँ उठाती है, और जो हाथीदाँत का चूड़ा वह पहनती है, वह कई हफ़्ते बाद जाकर बदला जाता है। इनमें से हर एक पर यहाँ अलग अध्याय है।

यह किताब किसकी बात मानती है

मैंने कोशिश की है कि समाज के प्रति आदर रखते हुए लिखूँ, और अपने अंदाज़ों के बजाय समाज के अपने स्रोतों पर चलूँ। यह किताब मुख्य रूप से उन बातों पर टिकी है जो माहेश्वरी परिवारों और समाज ने ख़ुद लिखकर रखी हैं, और अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा के अपने इतिहास पर। जहाँ कोई बात सिर्फ़ एक ही स्रोत में मिलती है या स्रोत आपस में मेल नहीं खाते, वहाँ अध्याय में यह साफ़ लिखा है।

कोई भी किताब हर परिवार का तरीका अपने में नहीं समेट सकती। हर अध्याय के आख़िर में बड़ों से पूछने के लिए कुछ सवाल हैं, और उनके जवाब लिखने के लिए जगह है। उसका ज़रूर इस्तेमाल कीजिए। उसमें अपने परिवार का तरीका लिखिए, आपकी दादी जो गीत गाती थीं वे लिखिए, आपके पंडित जी जो क़दम अलग ढंग से करते हैं वह लिखिए। अगर यहाँ लिखी कोई बात आपके परिवार की जानकारी से मेल नहीं खाती, तो मैं उसके बारे में जानना चाहूँगा; मुझसे संपर्क की जानकारी "लेखक के बारे में" वाले पृष्ठ पर है।

शादी के दिन आपके परिवार की परंपरा और आपके परिवार के पंडित जी की बात हमेशा सबसे पहले है। यह किताब उसे समझने में आपकी मदद के लिए है, उसकी जगह लेने के लिए नहीं।

जय महेश।

अरुण अग्रवाल

आभार

सबसे पहले मैं उन माहेश्वरी बड़े-बुज़ुर्गों और परिवारों का आभारी हूँ, जिनकी यादों और लिखे हुए दस्तावेज़ों में ये रीतियाँ बची हुई हैं। लगभग हर अध्याय के पीछे समाज के दो स्रोत खड़े हैं। पहला, मुंबई के एक माहेश्वरी परिवार की लिखी हुई विवाह-पुस्तिका (reetrivaz.in), जिसमें उस परिवार ने अपनी शादी की रीतियाँ, एक-एक रस्म और एक-एक गीत के साथ, लिखकर रखीं ताकि दूसरे भी उन्हें सीख सकें। दूसरा, माहेश्वरी समाज लुधियाना की रस्मों की सूची। जिन लोगों ने इतने ध्यान से यह सब लिखा, उनके बिना यह किताब लिखी ही नहीं जा सकती थी।

मैं माहेश्वरी महिलाओं की उन पीढ़ियों का भी आभारी हूँ, जिनके शादी के गीतों ने इन रीतियों को तब से ज़िंदा रखा, जब किसी ने इन्हें काग़ज़ पर उतारा भी नहीं था, और जो आज भी हर रस्म से पहले देवी-देवताओं के पाँच गीत गाती हैं। मैं परिवारों के उन पंडित जी लोगों का भी आभारी हूँ, जो इन रस्मों को चलाते आ रहे हैं और शादी-दर-शादी इन्हें हर परिवार के अपने तरीके के हिसाब से ढालते हैं।

यह किताब मैंने Anthropic के बनाए एआई सहायक Claude.ai को सह-लेखक बनाकर लिखी है। Claude.ai ने रस्मों और उनके पीछे के पुराने ग्रंथों पर खोजबीन करने में, उन्हें उसी क्रम में जमाने में जिसमें वे होती हैं, अध्यायों का मसौदा लिखने में और चित्र बनाने में मेरी मदद की, और यह सब मेरी देखरेख में हुआ। किताब में क्या कहा गया है, यह फ़ैसला मेरा है, और इसमें जो भी ग़लती हो, उसकी ज़िम्मेदारी भी मेरी है।

अरुण अग्रवाल

इस किताब को कैसे पढ़ें

इस किताब को पहले पन्ने से आख़िरी पन्ने तक पढ़ना ज़रूरी नहीं है। ज़्यादातर लोग सीधे उन रस्मों पर जाएँगे जिनमें उनकी कोई भूमिका है, या उस रस्म पर जो कल होने वाली है।

किताब भाग शून्य से शुरू होती है: माहेश्वरी कौन हैं, शादी में रस्में होती ही क्यों हैं, और शादी के पूरे हफ़्ते की एक तालिका। उसके बाद पाँच भागों में रस्मों के तैंतीस अध्याय हैं, उसी क्रम में जिसमें रस्में आम तौर पर होती हैं: वचन, घर में शादी की शुरुआत, उत्सव, विवाह का दिन और नई शुरुआत। हर भाग के आख़िर में आम सवालों का एक पृष्ठ है। पूरी शादी को दो पृष्ठों में देखना हो तो "हर रस्म, थोड़े में" देखिए।

हर अध्याय कैसे बना है

रस्मों का हर अध्याय एक ही ढाँचे में है, ताकि आपको हमेशा पता रहे कि क्या कहाँ मिलेगा।

- **एक मिनट में:** एक छोटा बॉक्स, जो बताता है कि रस्म किसलिए है।
- **एक नज़र में:** रस्म कब होती है, कौन निभाता है, कहाँ होती है और किस भाव से जुड़ी है। जहाँ उस मौके का कोई गीत दर्ज है, वहाँ उसकी पहली पंक्ति यहीं दी गई है।
- **क्या होता है:** रस्म का क्रम, एक-एक करके गिनाए गए आसान क़दमों में।
- **हम ऐसा क्यों करते हैं:** रस्म का मतलब, और सबसे पहले उन लोगों के शक का जवाब जिन्हें इन बातों पर भरोसा नहीं। जहाँ किसी स्रोत में कोई कारण दर्ज नहीं है, वहाँ अध्याय यह साफ़ कहता है।
- **जड़ें:** रस्म कहाँ से आई है, एक निशान के साथ, जिसके बारे में नीचे बताया गया है।
- **कुछ परिवारों में:** अलग-अलग परिवारों का तरीका कैसे अलग है।
- **इसमें आपकी भूमिका:** छोटे-छोटे, ठोस काम जो दुल्हन, दूल्हा, भाई-बहन और चचेरे-ममेरे भाई-बहन कर सकते हैं।
- **बड़ों से पूछिए:** अपने माता-पिता या दादा-दादी, नाना-नानी से पूछने के लिए दो सवाल, और उनके जवाब लिखने की जगह। भर देने पर ये आपके परिवार का तरीका दर्ज कर देते हैं।

कुछ अध्यायों में एक और बॉक्स है, "मेहमान क्या देखते हैं", जो बताता है कि किसी उलझन भरे पल के पीछे असल में क्या हो रहा है।

जड़ों के निशान

हर अध्याय पर जड़ों का एक निशान है, और जहाँ ज़रूरत है वहाँ दो।

- **वैदिक संस्कार:** जो गृह्यसूत्रों में (सबसे ज़्यादा पारस्कर गृह्यसूत्र में) या ऋग्वेद के विवाह-सूक्त में मिलता है। अग्नि के फेरे और सप्तपदी इसके उदाहरण हैं।
- **शास्त्रीय या पौराणिक विधि:** जो बाद के धर्मशास्त्रों में, पुराणों में या पंडित जी की विवाह-पद्धति में बताई गई है। गणेश पूजा और सिंदूर इसके उदाहरण हैं।
- **समाज की रीत:** माहेश्वरी, मारवाड़ी या बड़े राजस्थानी समाज की रीत, जिसे परिवार और महिलाओं के गीत आगे ले जाते हैं। बत्तीसी, मायरा और थालेड़ी इसके उदाहरण हैं।
- **रक्षा या लोक-विश्वास:** जो नज़र और अनहोनी से बचाने के लिए किया जाता है। कांकण डोरा और नमक-राई की लूणराई इसके उदाहरण हैं।

इन निशानों से भी ज़्यादा ज़रूरी एक बात है। निशान यह बताता है कि रस्म कहाँ से आई है, यह नहीं कि वह कितनी ज़रूरी है। मामा फेरे समाज की रीत है, सूत्रों में इसका कोई आधार नहीं है, और फिर भी यह पूरी शादी का सबसे माहेश्वरी पल है। इसलिए कृपया "समाज की रीत" का मतलब "चाहें तो छोड़ दें" मत समझिए।

पाठकों के निशान और पढ़ने के रास्ते

हर अध्याय के शीर्षक के नीचे के निशान (दुल्हन, दूल्हा, भाई-बहन) बताते हैं कि उस रस्म में किसकी भूमिका है। नीचे दिए रास्ते इन्हीं के हिसाब से हैं।

- **दुल्हन, दूल्हा, या कोई भाई-बहन या चचेरा-ममेरा भाई-बहन जिसके ज़िम्मे कोई काम है:** वे अध्याय पढ़िए जिन पर आपका निशान है।
- **मामा, या माँ के पीहर वाले:** अध्याय 6, 11, 14, 17, 21, 22 और 31 पढ़िए। माहेश्वरी शादी का बड़ा हिस्सा माँ के परिवार के कंधों पर होता है।
- **किसी दूसरे समाज से शादी करके आ रहे हैं:** भाग शून्य से शुरू कीजिए, फिर "विवाह का दिन" वाला भाग पढ़िए।
- **जल्दी में हैं:** हर अध्याय में बस "एक मिनट में" वाला बॉक्स पढ़ लीजिए।

पाँच भाव

लगभग हर रस्म पाँच में से एक या दो मक़सदों के लिए होती है। हर "एक नज़र में" बॉक्स में उनका नाम दिया गया है, और भाग शून्य में उन्हें समझाया गया है।

- **आशीर्वाद:** भगवान, कुलदेवी, पुरखों और बड़े-बुज़ुर्गों की शुभकामना माँगना।
- **रक्षा:** उन दिनों में दुल्हन और दूल्हे की हिफ़ाज़त, जिन्हें परिवार हमेशा से नाज़ुक मानता आया है।
- **दो परिवारों का बंधन:** दो घरों को, और उनके रिश्तेदारों को, एक-दूसरे से जोड़ना, जिसमें माँ के पीहर वालों को बड़ी भूमिका दी गई है।
- **सहमति और साक्षी:** विवाह को सबके सामने, सबकी रज़ामंदी से और सबकी आँखों के सामने करना।
- **नए घर की ओर:** दुल्हन का अपने माता-पिता के घर से अपने नए घर तक का सफ़र।

इस किताब की जानकारी कहाँ से आई है

अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा की छपी हुई कोई विवाह-पुस्तिका नहीं है। यह किताब समाज के दो ब्योरेवार स्रोतों पर टिकी है: मुंबई के एक माहेश्वरी परिवार की लिखी हुई विवाह-पुस्तिका (reetrivaz.in), जिसकी जड़ें नागौर ज़िले के जसवंतगढ़ में हैं, और माहेश्वरी समाज लुधियाना की रस्मों की सूची। इनके अलावा 1916 का जातियों और समुदायों का एक अध्ययन, महासभा का अपना इतिहास और पारस्कर गृह्यसूत्र भी इसके आधार हैं। अध्यायों में इन दोनों को छोटे में "परिवार की पुस्तिका" और "लुधियाना की सूची" कहा गया है। जहाँ कोई बात सिर्फ़ एक ही स्रोत में है या स्रोत आपस में मेल नहीं खाते, वहाँ अध्याय यह साफ़ कहता है। जो बात सिर्फ़ एक स्रोत में मिली है, उसके साथ पाठ में "एक परिवार की पुस्तिका के अनुसार" या "कुछ परिवारों में" जैसे शब्द लिखे गए हैं। पूरी सूची "स्रोत और आगे पढ़ने के लिए" वाले पृष्ठ पर है।

अलग-अलग तरीके, और फ़ैसला किसका

कोई भी दो माहेश्वरी परिवार हर रस्म एक ही तरह से नहीं करते। राजस्थान के मूल इलाकों, महाराष्ट्र, मालवा, पंजाब, हैदराबाद और कोलकाता के परिवारों में रस्मों के नाम, क्रम और बारीकियाँ अलग हैं, और एक ही शहर के घरों में भी फ़र्क होता है। किताब वह बताती है जो आम है, और अलग तरीकों का भी ज़िक्र करती है। अगर आपका परिवार कुछ अलग ढंग से करता है, तो आपका परिवार ग़लत नहीं है।

यह किताब कहीं नहीं कहती कि आपको क्या करना ही है। यह हर रस्म का मतलब समझाती है, ताकि फ़ैसला आपका और आपके परिवार का हो। शादी के दिन आपके परिवार की परंपरा और आपके परिवार

के पंडित जी की बात ही मानी जाएगी।

उपहारों के बारे में एक बात

इस किताब की बहुत सी रस्मों में उपहार दिए जाते हैं: मुद्दा टीका और चीकणी कोथली में, शादी से पहले के हर त्योहार पर, मायरे में, बरी के साथ, पेहरावनी में और कोथली में। ये दोनों परिवारों के बीच सद्भाव की निशानी हैं।

इस किताब में बताया गया हर उपहार अपनी मर्ज़ी से दिया जाता है। दहेज प्रतिषेध अधिनियम, 1961 के तहत भारत का क़ानून ऐसी कोई भी रक़म या चीज़ देना, लेना या माँगना मना करता है। कोई माँग, चाहे खुलकर की जाए या इशारे में, सद्भाव की रस्म को कुछ और ही बना देती है। समाज ख़ुद लंबे समय से इस पर काम करता आया है: 1894 में उसके पहले अधिवेशन ने शादी के ख़र्च की सीमा तय की थी, और तब से महासभा ज़बरदस्ती के उपहारों और दिखावे के ख़िलाफ़ बोलती आई है। आगे के अध्याय इस बात को दोबारा नहीं उठाते, क्योंकि यह उन सब पर लागू होती है।

भाग शून्य

रस्मों से पहले



माहेश्वरी कौन हैं, रस्में आख़िर क्यों, और शादी का पूरा क्रम दो पन्नों में।

माहेश्वरी कौन हैं?

माहेश्वरी एक वैश्य व्यापारी समाज है, जिसका मूल इलाका राजस्थान है: शेखावाटी, मारवाड़ और बीकानेर का क्षेत्र। यह नाम महेश यानी शिव से आया है, और समाज का अभिवादन है "जय महेश"। माहेश्वरियों की गिनती मारवाड़ियों में होती है, और उनकी शादियों में दूसरी मारवाड़ी शादियों से बहुत कुछ मिलता-जुलता है, लेकिन उनकी कुछ रस्में सीधे समाज की उत्पत्ति की कथा से निकली हैं।

शुरुआत की कथा

समाज जिस तरह उत्पत्ति कथा सुनाता है, उसके अनुसार खड्गलसेन नाम के एक क्षत्रिय राजा खंडेला पर राज करते थे, जो आज के सीकर ज़िले का एक कस्बा है। उनके कोई संतान नहीं थी। उन्होंने महादेव की आराधना की और उन्हें सुजान कंवर नाम का बेटा हुआ। बड़ा होकर राजकुमार अपने बहत्तर उमरावों यानी सरदारों के साथ घोड़ों पर निकला और सूर्य कुंड पहुँचा, जहाँ ऋषि यज्ञ कर रहे थे। घुड़सवारों ने यज्ञ में विघ्न डाला, और ऋषियों के श्राप से वे सब पत्थर बन गए।

उनकी पत्नियों ने, राजकुमार की पत्नी चंद्रावती के नेतृत्व में, उनके लिए प्रार्थना की। पार्वती का मन पसीजा और उन्होंने महेश से उन पुरुषों को फिर से जीवित करने को कहा। महेश ने ऐसा किया, पर एक शर्त पर: वे हथियार छोड़ देंगे और व्यापार अपनाएँगे। उनके हथियार कुंड में गल गए, और कई कथाओं के अनुसार इसी वजह से उस जगह का नाम लोहार्गल पड़ा। महेश ने उनसे कहा, "तुम सब माहेश्वरी कहलाओगे।" वे बहत्तर लोग बहत्तर खांपों के संस्थापक बने, और कहा जाता है कि बाद में पाँच और क्षत्रिय परिवार इनमें आ मिले।

लेकिन अब पति वैश्य थे और पत्नियाँ अभी भी क्षत्राणियाँ। एक कथा के अनुसार उनसे कहा गया कि वे अपने पतियों के चारों ओर तीन बार घूमें; दूसरी कथाओं के अनुसार, पार्वती के चारों ओर चार बार। इन फेरों से वे भी वैश्य हो गईं और विवाह फिर से जुड़ गए। यही वह कथा है जिसे परिवार मामा फेरे (अध्याय 21) के समय याद करते हैं।

यह कथा एक से ज़्यादा तरह से सुनाई जाती है

राजा का नाम खड्गलसेन, खड़कसेन, खड्गसेन या खंडेलसेन मिलता है; एक कथा में उनकी चौबीस रानियाँ बताई गई हैं। ऋषि सात हैं या छह। सभी कथाएँ कहती हैं कि राजकुमार ने यज्ञ में विघ्न डाला; कुछ यह भी जोड़ती हैं कि वह जैन प्रभाव में आ गया था, और एक बस इतना कहती है

कि शिकार में बहुत शोर हुआ। पत्नियाँ अपने पतियों के या एक नीम के पेड़ के चारों ओर तीन बार घूमती हैं, या पार्वती के चारों ओर चार बार। हो सकता है आपका परिवार इसे फिर किसी और तरह सुनाता हो।

बाहर का सबसे पुराना लिखित विवरण आर. वी. रसेल और हीरा लाल का 1916 का है, जो मध्य प्रांत से है। उसमें एक राजा और उनके बहत्तर साथियों की बात है, जिन्हें उन तपस्वियों ने पत्थर बना दिया जिनके काम में उन्होंने विघ्न डाला था; जब पत्नियाँ उन पत्थरों के पास सती होने आईं, तो शिव ने पुरुषों को जीवित किया और उनसे हथियार छोड़कर व्यापार करने को कहा। उसमें न पार्वती हैं, न फेरे और न महेश नवमी; ये बातें हम तक समाज की अपनी कथाओं से पहुँची हैं। फिर भी कथा का मूल रूप सौ साल पहले, राजस्थान से बहुत दूर, अच्छी तरह जमा हुआ था। विद्वान जिस सबसे पुराने छपे हुए रूप का हवाला देते हैं, वह दरक का 1923 का इतिहास है।

लोहार्गल और उसका सूर्य कुंड झुंझुनूं ज़िले में एक असली तीर्थ है, जहाँ हथियार गलने की कथा पांडवों के बारे में भी सुनाई जाती है। खंडेला भी एक असली कस्बा है, जिसे परंपरा कई समाजों से जोड़ती है। परंपरा यह दिन ज्येष्ठ शुक्ल नवमी बताती है और साल युधिष्ठिर संवत में गिनती है। इतिहासकार किसी एक तारीख़ पर एकमत नहीं हैं, और यह किताब उसे तय करने की कोशिश नहीं करती।

मानवशास्त्री लॉरेंस बैब इसे एक ऐसे समूह की कथा के रूप में पढ़ते हैं जो हिंसा पीछे छोड़कर व्यापार के रास्ते समाज में लौटता है। समाज की नींव का काम है हथियार डाल देना। इसकी गूँज रोज़ की माहेश्वरी बोली में भी सुनाई देती है: पक्के शाकाहारी घरों में सब्ज़ी "काटी" नहीं जाती, "बंदारी" यानी सजाई जाती है, और दुकान कभी "बंद" नहीं होती, "बढ़ाई" जाती है।

महेश नवमी, महेश और पार्वती

ज्येष्ठ शुक्ल नवमी, जो मई या जून में पड़ती है, महेश नवमी के रूप में मनाई जाती है। यह समाज का स्थापना दिवस है। इस दिन शिव पूजा, प्रभात फेरियाँ और शोभायात्राएँ, महेश वंदना, भजन, सेवा शिविर और ऐसे भोज होते हैं जिनमें सब एक ही दरी पर बैठकर खाते हैं।

अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा महेश को समाज का रचयिता और पार्वती को माता माहेश्वरी मानती है। रोज़ की भक्ति में ज़्यादातर घर किसी वैष्णव या स्मार्त परंपरा को भी मानते हैं, इसलिए एक माहेश्वरी घर में अक्सर शिव, ठाकुरजी और कुलदेवी साथ-साथ विराजते हैं। रसेल ने 1916 में लिखा था कि माहेश्वरी "संप्रदाय से वैष्णव" हैं। दूसरे लोग जवाब देते हैं कि समाज अपनी उत्पत्ति से ही शैव है। यह किताब किसी का पक्ष नहीं लेती।

खांप, गोत्र और विवाह का नियम

खांप वह कुल है जो परंपरा के अनुसार बहत्तर उमरावों में से किसी एक का वंश है; उसका नाम आम तौर पर उपनाम होता है। गोत्र किसी खांप से जुड़ा ऋषि का नाम है, जिसका उच्चारण वरणा और कन्यादान के समय होता है। कई खांपों का एक ही गोत्र होता है: बिड़ला, बलदवा, बियानी और जाजू, सब बालांस गोत्र के हैं; राठी, तोतला और कांकाणी कपिलांस गोत्र के। खांप आगे उप-खांप या नख में बँटती हैं।

हर कथा में संख्या बहत्तर ही है, लेकिन आज छपी सूचियों में सतहत्तर से पचासी तक नाम मिलते हैं, क्योंकि बाद में परिवार जुड़े और नाम बँटते गए। जिन खांपों के प्रमाण अच्छे हैं, उनमें अजमेरा, बाहेती, बजाज, बियानी, बिड़ला, चांडक, डागा, दरक, धूत, काबरा, लाहोटी, मालपाणी, मूंधड़ा, राठी, सारडा, सोमानी और तापड़िया हैं। सूचियाँ अलग-अलग हैं, और कुछ प्रचलित सूचियों में ग़लती से ओसवाल या खंडेलवाल नाम भी शामिल हैं।

माहेश्वरी अपनी ही खांप या गोत्र में शादी नहीं करते। समाज की एक पत्रिका में दर्ज है कि पहले मामाओं की खांपें भी टाली जाती थीं, और कोई स्रोत यह तय नहीं करता कि नियम खांप के नाम से चलता है या ऋषि गोत्र से। आज ज़्यादातर परिवारों में नियम अपनी खांप का है; कुछ बड़े-बुज़ुर्गों को इससे बड़ा नियम याद है; अपने बड़ों से पूछिए। यह नियम वंश के बारे में है, और यह किताब इसके पक्ष में कोई जीव-विज्ञान का दावा नहीं करती।

जैसलमेरी, बीकानेरी, ढाकर और कोलवार जैसी लगभग अट्ठाईस क्षेत्रीय शाखाएँ कभी आपस में शादी नहीं करती थीं। 1894 और 1908 के अधिवेशनों ने इसे ख़त्म करने के लिए काम किया, और 1924 में महासभा के एक आयोग ने पाया कि कोलवार माहेश्वरी पूरी तरह माहेश्वरी हैं और समाज के भीतर शादी करने के लिए स्वतंत्र हैं।

कुलदेवी

सभी माहेश्वरियों की एक ही कुलदेवी नहीं है। हर खांप की अपनी कुलदेवी है, और वह लगभग हमेशा राजस्थान के किसी मंदिर की देवी होती है: बहुत सी खांपों के लिए ओसियां की सच्चियाय माता, और दूसरों के लिए नागणेची, चावंडा, आशापुरा, जीण माता और हिंगलाज। कुलदेवी पिता के वंश से आगे चलती है, और शादी के बाद दुल्हन अपने पति की कुलदेवी को अपना लेती है। ऑनलाइन मिलने वाली तालिकाएँ आपस में मेल नहीं खातीं, इसलिए आपके परिवार की जानकारी ही मानी जाए (अध्याय 33)।

महासभा

समाज का संगठन 1891 में अजमेर में शुरू हुआ। 1894 में सहारनपुर में हुए पहले अधिवेशन ने कई माँगें रखीं: क्षेत्रीय शाखाओं के बीच शादी हो, शादी और अंतिम संस्कार के ख़र्च की सीमा हो, बेटी के बदले पैसे लेना बंद हो, और शादी की कम से कम उम्र लड़की के लिए चौदह और लड़के के लिए अठारह साल हो। यह देश के क़ानून के ऐसा करने से पहले की बात है। अपने लगातार चलते रूप में महासभा 1908 के अमरावती अधिवेशन से है, और उसका आज का नाम 1922 में कलकत्ता में रखा गया; इसका मुख्यालय नागपुर में है। इसका प्रतीक चिह्न नौ पंखुड़ियों वाला सफ़ेद कमल है, जिस पर लिंग रूप में महेश हैं, और नीचे बेल के तीन पत्ते हैं, जो सेवा, त्याग और सदाचार के प्रतीक हैं। बाद के अधिवेशनों ने सामाजिक बहिष्कार पर रोक लगाई और महिला परिषद की स्थापना की (1927), पर्दे के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाई (1929), घूँघट छोड़ने की अपील की (1934), विधवा विवाह को स्वीकार किया (1931 और 1940), और शादी में ज़बरदस्ती उपहार देने-लेने का विरोध किया (1946)। हाल के समय में महासभा और स्थानीय समाज संस्थाओं ने शादियों में दिखावे से बचने को कहा है।

माहेश्वरी कहाँ रहते हैं

मारवाड़ी व्यापार के साथ-साथ परिवार हैदराबाद, बंबई, बरार और नागपुर, और कलकत्ता तक गए। आज पूरे भारत में लगभग 160 माहेश्वरी भवन हैं, ज़्यादातर राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात, मालवा और पश्चिम बंगाल में। समाज के अपने अनुमान के अनुसार दुनिया भर में माहेश्वरियों की संख्या दस लाख से तीस लाख के बीच है।

जब जोड़े में से एक माहेश्वरी न हो

जब जोड़े में से एक माहेश्वरी न हो, तब भी इस किताब की रस्में की जा सकती हैं, और अक्सर की जाती हैं। पंडित जी वरणा और दूसरी बारीकियों को उसके हिसाब से ढाल लेते हैं, और दोनों परिवार मिलकर तय करते हैं कि कौन-सी रीतियाँ निभानी हैं।

रस्में आख़िर क्यों?

रजिस्ट्रार दस मिनट में, एक दस्तख़त और दो गवाहों के साथ, दो लोगों की शादी करा सकता है। माहेश्वरी शादी कई दिन या हफ़्ते पहले होने वाले नान्दीमुख से शुरू होती है और कई हफ़्ते बाद की जात तक चलती है, और इसमें सैकड़ों लोग जुड़ते हैं। तो बाकी यह सब किसलिए है?

छोटा-सा जवाब यह है कि माहेश्वरी शादी कभी सिर्फ़ दो लोगों की नहीं रही। यह दो परिवारों की बात है, जो अपने सारे रिश्तेदारों के साथ यह तय करते हैं कि अब एक-दूसरे को अपना मानेंगे। दस्तख़त शादी को दर्ज करता है। रस्में उसके चारों ओर रिश्ते बनाती हैं। सभी तैंतीस अध्याय पढ़ें तो पाँच मक़सद बार-बार सामने आते हैं। हर अध्याय में उनमें से एक या दो का नाम दिया गया है।

आशीर्वाद

कुछ भी नया शुरू करने से पहले परिवार शुभकामना माँगता है। नान्दीमुख में सबसे पहले पुरखों का सम्मान होता है। सावा पूजन में गणेशजी का आह्वान होता है, और परिवार का एक छोटा लड़का विनायक बनता है, यानी हर रस्म में दुल्हन या दूल्हे के पास गणेशजी का रूप। गीतों की हर बैठक में महिलाएँ देवी-देवताओं के पाँच गीतों से शुरुआत करती हैं: विनायक, बालाजी, श्यामजी, माताजी और पितरजी। शादी से पहले दुल्हन और दूल्हा दोनों अलग-अलग गणगौर पूजते हैं, यानी ईसर के साथ गौरी, देवताओं की पति-पत्नी की जोड़ी। आख़िर में जोड़ा चूरमे से गणेशजी का धन्यवाद करता है और परिवार के देवी-देवताओं की जात देने जाता है।

रक्षा

शादी से पहले के दिनों को हमेशा नाज़ुक माना गया है। बान में दुल्हन या दूल्हे को घर में रखा जाता है, और उनके सामने नमक, कोयला और चाँदी की एक अँगूठी रखी जाती है। लोहे, कौड़ी और लाख वाला कांकण डोरा कलाई और टखने पर बाँधा जाता है। द्वार पर नमक और राई वारकर लूणराई की जाती है, घोड़ी पर दूल्हे के पीछे बैठी एक छोटी बच्ची अपनी पोटली वारती है, और तोरण पर नीम और एक झुनझुना उसकी रक्षा करते हैं। नज़र के बारे में कोई कुछ भी सोचे, इन रीतियों में दिखने वाली परवाह सच्ची है।

दो परिवारों का बंधन

माहेश्वरी शादी में माँ के पीहर वालों का हिस्सा ज़्यादातर शादियों से बड़ा होता है। बत्तीसी में माँ हर चीज़ बत्तीस-बत्तीस लेकर अपने पीहर जाती है और भाइयों को न्योता देती है। वे शादी के कपड़े और हाथीदाँत का चूड़ा लेकर मायरा भरने आते हैं। लख के समय मामा दुल्हन या दूल्हे को पाटे से उठाता है, और मामा फेरे में दुल्हन को दूल्हे के चारों ओर घुमाता है। अग्नि के सामने दुल्हन का भाई उसके हाथ खील से भरता है। पेहरावनी में दुल्हन के बड़े उसे उसकी सास की गोद में बिठाते हैं।

सहमति और साक्षी

विवाह पर सबकी सहमति होनी चाहिए और सबको वह दिखना भी चाहिए। सगाई सबके सामने दिया गया वचन है। वरणा में दोनों परिवारों के पंडित दोनों गोत्रों और तीन पीढ़ियों के नामों का ऊँची आवाज़ में, हर एक का तीन-तीन बार, उच्चारण करते हैं। अग्नि चार फेरों और सात क़दमों की साक्षी बनती है। फिर दुल्हन दूल्हे के दाईं ओर से हटकर उसके बाईं ओर आ जाती है: उस पल से वह उसकी पत्नी के रूप में बैठती है।

नए घर की ओर

दुल्हन के लिए शादी का मतलब है उस घर को छोड़ना जिसमें वह पली-बढ़ी। बिदाई के समय कार के पहिए के नीचे नारियल रखा जाता है और सोलह रोटियाँ उसके ट्रंक से बँधकर साथ जाती हैं। नए घर के द्वार पर दूल्हा अपनी कटार से सात थालियाँ अलग करता है और दुल्हन अपनी सास के लिए बिना आवाज़ किए उन्हें उठाती है; वह कोथली से सिक्के निकालती है। फिर उसका भाई उसे मांडा झांकने के लिए पीहर ले आता है: वह किसी भी घर से छूटी नहीं है।

माहेश्वरी शादी की बनावट

दूसरी मारवाड़ी शादियों के साथ रखकर देखें, तो इस किताब की समझ में माहेश्वरी क्रम की तीन अपनी ख़ास बातें हैं। पहली, घर में नाम वाली रस्मों की एक लंबी शुरुआत, जिसमें महिलाओं की रस्में और गीत ही मुख्य हैं, और जिसमें विनायक बना लड़का और मायां, यानी दीवार पर घर की शादी की थापना, शुरू से आख़िर तक बने रहते हैं। दूसरी, शादी के दिन का मूल हिस्सा: बाहर के तीन फेरे और अग्नि के चार फेरे, और साथ में दूल्हे की कटार, पहले तोरण पर और फिर उसकी अपनी देहरी पर। तीसरी, दूल्हे के घर पर ज़्यादा लंबा और ज़्यादा रस्मी स्वागत, जिसका अंत हाथीदाँत के चूड़े को लाख के चूड़े से बदलने और जात के साथ होता है।

जो परिवार क्षत्रिय उत्पत्ति की कथा सुनाते हैं, वे कटार और चार फेरों को उसी रोशनी में देखते हैं, और राजपूत शादी में भी अग्नि के चार फेरे होते हैं, जिनमें से तीन में दुल्हन आगे चलती है। और अगर आप सोचें कि इस सब में महेश कहाँ हैं, तो वे दो जगह मौजूद हैं: गणगौर पूजा में, जो शिव के अपने परिवार का सम्मान है, और मामा फेरे में, जिसमें वह कथा है कि उन्होंने और पार्वती ने पहले माहेश्वरी विवाहों को फिर से कैसे जोड़ा।

समझकर निभाना

इस सबका यह मतलब नहीं है कि हर रस्म ठीक वैसे ही निभाई जाए जैसे पहले होती थी। परिवार हमेशा से बदलाव करते आए हैं, और ख़ुद अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा ने उनसे ऐसा करने को कहा है। यह किताब बस इतना चाहती है कि बदलाव जानकारी के साथ हो। जो परिवार जानता है कि मायरा या कांकण डोरा किसलिए है, वह सही कारणों से तय कर सकता है कि क्या रखना है और क्या छोटा करना है, न कि बेसब्री में। और जो नया जोड़ा किसी रस्म का मतलब जानता है, वह अक्सर पाता है कि उसका मन उसे ठीक से निभाने का करता है।

शादी का पूरा क्रम, एक नज़र में

इस तालिका में किताब की हर रस्म उसी क्रम में दी गई है जिसमें वह आम तौर पर होती है। समय आम चलन के हिसाब से हैं, पक्के नहीं: बहुत से परिवार कुछ रस्में एक साथ कर लेते हैं, कुछ आगे-पीछे कर देते हैं और कुछ छोड़ देते हैं। असली क्रम आपका परिवार और आपके पंडित जी तय करेंगे।

रस्म	कब	कहाँ	कौन निभाता है
भाग एक: वचन			
1. सगाई और रोकना: सबके सामने वचन	कई महीने पहले	दोनों घर, अब अक्सर एक ही जगह	दोनों पक्षों के बड़े-बुज़ुर्ग
2. मुद्दा टीका और चीकणी कोथली: टीके की दो रस्में	सगाई के बाद	दूल्हे का घर; फिर दुल्हन का	दुल्हन का भाई; दूल्हे के घर की महिलाएँ
3. बीच के महीने: त्योहारों के नेग और न्योते	शादी तक हर त्योहार पर; कार्ड 3 महीने और 1 महीने पहले	दोनों घर	दोनों परिवार
भाग दो: घर में शादी की शुरुआत			
4. नान्दीमुख: सबसे पहले पुरखे	लगभग 10 दिन पहले	दोनों घर	माता-पिता के साथ पंडित जी
5. गीत: पहले पाँच गीत देवी-देवताओं के	बत्तीसी से आगे गीतों की हर बैठक में	दोनों घर	घर की महिलाएँ
6. बत्तीसी न्यूतना: माँ के भाइयों को न्योता	मायरे से कुछ दिन पहले	माँ का पीहर	माँ
7. विवाह हाथ और मूंग बिखेरना: घर में शादी की शुरुआत	5, 7 या 11 दिन पहले	दोनों घर	घर की महिलाएँ; बुआ या बहन
8. सावा पूजन, विनायक और लग्न	5 से 21 दिन पहले; अब अक्सर बान के साथ	दोनों घर	पंडित जी; घर के सबसे बड़े
9. बान और तणी: घर में रहना और डोरी बाँधना	कुछ दिन पहले; अब सावा पूजन के साथ	दोनों घर	पंडित जी; माता-पिता; बड़ी महिलाएँ
10. शादी की रसोई: धान रोळना, चाक पूजन और मूंगधणा	कुछ दिन पहले	दोनों घर	माँ और बहुएँ
11. मायरा और बीर भोजन: मामा का आना	शादी का हफ़्ता	दोनों घर, अलग-अलग	माँ के भाई
भाग तीन: उत्सव			
12. मेहंदी	सावा पूजन या बान के बाद	दोनों घर	महिलाएँ; मेहंदी दूल्हे के घर से

रस्म	कब	कहाँ	कौन निभाता है
13. बनोरी, सांझा और सांकड़ी: शामें और शादी से पहले की रात	बान के बाद की शामें; शादी से पहले की रात; शादी के दिन की भोर	दोनों घर	परिवार; एक ब्राह्मण; घर की महिलाएँ
14. पीठी, झोळ और लख: हल्दी, दही और बरकत की कामना	शादी की सुबह या एक दिन पहले	दोनों घर	सुहागिनें; पिता; मामा
15. कांकण डोरा, मायां और गणगौर: डोरा, थापना और गौरी	पीठी के बाद	दोनों घर	पंडित जी; सात सुहागिनें
16. बरी, स्तम्भ रोपण और कन्यावल: दुल्हन के द्वार पर ससुराल	शादी की सुबह	दुल्हन का घर	दूल्हे के घर के बड़े या जंवाई; दुल्हन के माता-पिता
भाग चार: विवाह का दिन			
17. बीन राजा: सजना, घोड़ी पूजा और निकासी	शादी का दिन, बारात से पहले	दूल्हे का घर	माँ; बहन या बुआ; मामा; जंवाई
18. वरणा: गोत्र का उच्चारण	ढुकाव से पहले, या मंडप में	बारात के ठहरने की जगह या विवाह स्थल	दोनों पंडित; दुल्हन के माता-पिता
19. ढुकाव और तोरण: द्वार पर दूल्हा	बारात पहुँचने पर	विवाह स्थल	दूल्हा; दुल्हन की माँ और महिलाएँ
20. सुवाली और वरमाला: मालाएँ	शादी की शाम	विवाह स्थल	दुल्हन और दूल्हा; दुल्हन की बहन या सहेली
21. मामा फेरे: बाहर के फेरे	वरमाला के ठीक बाद	स्टेज या द्वार	दुल्हन का मामा
22. कन्यादान, गठजोड़ा और हथलेवा	मंडप में	विवाह स्थल	पंडित जी; दुल्हन के माता-पिता; मामा
23. लाजाहोम, शिला और अग्नि के चार फेरे	मंडप में	विवाह स्थल	पंडित जी; दुल्हन का भाई
24. सप्तपदी, ध्रुव दर्शन और सिंदूर	मंडप में	विवाह स्थल	पंडित जी; दुल्हन और दूल्हा
25. फेरों के बाद: सुहागबीड़ी, जूता छुपाई और बड़ा भात	फेरों के बाद	विवाह स्थल	दुल्हन के घर की महिलाएँ; भाई-बहन; दोनों परिवार
26. पेहरावनी, सिर-गूंथी और थली पूजन: लड़की वालों की ओर से मान	भोज के बाद	विवाह स्थल	दुल्हन के घर के बड़े; बुआ; पंडित जी
भाग पाँच: नई शुरुआत			
27. बिदाई	दुल्हन के घर से विदा होते समय	विवाह स्थल या दुल्हन का घर	दुल्हन की माँ और महिलाएँ
28. वधू प्रवेश और थालेड़ी: सात थालियाँ	पहुँचने पर	दूल्हे का घर	दूल्हे की बहनें; माँ
29. सुहाग थाल, कोथली और मुंह दिखाई: घर बहू से मिलता है	पहले कुछ दिन	दूल्हे का घर	बड़ी महिलाएँ; घर के सबसे बड़े

रस्म	कब	कहाँ	कौन निभाता है
30. जूवा-जूई और कांकण डोरा खोलना: खेल	अगले दिन	दुल्हन का घर, फिर दूल्हे का	भाभियाँ और बहनें
31. कंवर कलेवा और मांडा झांकना: पीहर का बुलावा	अगले दिन; एक-दो दिन बाद	दुल्हन का घर	दुल्हन के घर की महिलाएँ और भाई
32. मायां उठाना, गणेशजी का चूरमा और सीख: शादी का समापन	बाद में कोई शुभ दिन	दूल्हे का घर; गणेश मंदिर; दुल्हन का घर	दूल्हे के माता-पिता; जोड़ा
33. चूड़ा और गठजोड़े की जात	7, 11 या 40 दिन बाद; कोई शुभ मौसम	दूल्हे का घर; परिवार के देवस्थान	सास; पंडित जी; जोड़ा

भाग एक

वचन



दोनों परिवार ज़बान देते हैं, टीके की रस्में होती हैं, और बीच के महीनों में नेग और न्योते आते-जाते हैं।

सगाई और रोकना · मुद्दा टीका और चीकणी कोथली · बीच के महीने

अध्याय 1

सगाई और रोकना: सबके सामने वचन

दुल्हन · दूल्हा · भाई-बहन



एक मिनट में

सगाई वह दिन है जब दोनों परिवार गवाहों के सामने कह देते हैं कि अब रिश्ते की तलाश ख़त्म हुई। रोकना का मतलब ही है रोक देना: दोनों पक्ष अब और रिश्ते देखना रोक देते हैं। पुराने समय में इसके दो हिस्से होते थे, दोनों घरों में एक-एक। जो पक्ष मिलने जाता, वह लड़की या लड़के के माथे पर टीका करता और उसकी खोळ भरता। आजकल अक्सर दोनों हिस्से एक ही जगह साथ-साथ हो जाते हैं, और साथ में अंगूठी पहनाने की रस्म भी जुड़ गई है।

कब	रिश्ता पक्का होने के बाद, किसी शुभ दिन; अक्सर शादी से कई महीने पहले
कौन निभाता है	दोनों तरफ़ के बड़े-बुज़ुर्ग
कहाँ	पहले बारी-बारी से दोनों घरों में; अब अक्सर एक ही जगह
भाव	दो परिवारों का बंधन; सहमति और साक्षी

क्या होता है

1. रिश्ता पक्का होते ही एक शुभ दिन चुना जाता है। पुराने समय में यह रस्म दो हिस्सों में होती थी, जिन्हें दस्तूर कहते हैं, और ये दोनों घरों में होते थे।
2. लड़की के घर पर लड़के वाले उसका तिलक करते हैं, उसे माला पहनाते हैं और गहने देते हैं। फिर उसकी खोळ भरते हैं। खोळ यानी साड़ी या ओढ़नी का वह हिस्सा जो गोद में फैलाकर पकड़ा जाता है। इसमें सिक्के, नारियल और सूखे मेवे रखे जाते हैं, और उसे साड़ियाँ दी जाती हैं।
3. लड़के के घर पर लड़की वालों की ओर से कोई बड़ा उसका तिलक करता है, उसे माला पहनाता है, उसकी खोळ भरता है और उसे कपड़े और एक घड़ी देता है।
4. आजकल, जैसा कि मुंबई के एक माहेश्वरी परिवार की लिखी हुई विवाह-पुस्तिका (reetrivaz.in) में दर्ज है, दोनों पक्ष अक्सर एक ही जगह इकट्ठा होते हैं और दोनों दस्तूर साथ-साथ कर लेते हैं। (आगे से यह किताब इसे परिवार की पुस्तिका कहेगी।)
5. पुस्तिका अंगूठी पहनाने को आज का चलन बताती है, जो रोकने के दस्तूर के ऊपर से जोड़ा गया है।
6. इस पहली रस्म से लेकर सप्तपदी तक लड़की लड़के के दाहिनी ओर बैठती है। सात क़दम पूरे होने के बाद ही वह उसके बाईं ओर आती है (अध्याय 24)।

हम ऐसा क्यों करते हैं

सगाई तक लड़का-लड़की अक्सर एक-दूसरे को हाँ कह चुके होते हैं, कभी-कभी तो महीनों पहले। यह रस्म जो जोड़ती है, वह है परिवारों की हाँ, और वह भी गवाहों के सामने। इससे पहले तक कोई भी पक्ष चुपचाप पीछे हट सकता था। इसके बाद दोनों तरफ़ के रिश्तेदारों को पता होता है, और पुराना शब्द रोकना बता देता है कि इसका मतलब क्या है: तलाश रुक गई।

दो दस्तूरों से वचन दोनों तरफ़ से बनता है। हर परिवार दूसरे के घर जाता है, या एक जगह वाले तरीके में अपनी बारी लेता है, और उस घर की संतान का मान करता है। कोई भी पक्ष सिर्फ़ लेता नहीं। एक तरफ़ से दिया गया वचन बस एक विनती है; दोनों तरफ़ से, एक-दूसरे के सामने दिया गया वचन पक्की बात है।

ये सब मान देने के आम हिंदू तरीके हैं। तिलक वह निशान है जो किसी आदरणीय मेहमान के माथे पर लगाया जाता है। खोळ भरना भरपूर जीवन की सबसे पुरानी भारतीय तस्वीरों में से एक है: मिलने आया परिवार कामना करता है कि इस लड़की या लड़के की ज़िंदगी भरी-पूरी रहे। माहेश्वरी परिवार इसे खोळ भरना कहते हैं; अग्रवाल संस्करण पढ़ने वाले इसे गोद भराई या झोली भरना के नाम से जानते होंगे। नारियल तो किसी भी शुभ काम की शुरुआत में चढ़ाई जाने वाली आम भेंट है।

इस समाज में नारियल का लिखा हुआ इतिहास भी है। 1916 में रसेल और हीरालाल ने मध्य प्रांत के माहेश्वरियों के बारे में लिखते हुए "रिश्ते की बात के निशान के तौर पर नारियल भेजने के राजपूती रिवाज" का ज़िक्र किया था। यानी दो माहेश्वरी परिवारों के बीच पक्के इरादे के निशान के तौर पर नारियल कम से कम सौ साल पुराना है।

अंगूठी सबसे नई चीज़ है। परिवार की पुस्तिका इसे आज का चलन कहती है, और पुरानी मारवाड़ी सगाई में अंगूठी होती ही नहीं थी: तिलक, भेंट और भरी हुई खोळ ही सारा काम कर देते थे। बिना अंगूठी की सगाई अधूरी नहीं, बल्कि पुराना तरीका है।

जड़ें **समाज की रीत**

न सगाई गृह्यसूत्रों में मिलती है, न रोकना। दोनों माहेश्वरी और बड़े मारवाड़ी समाज की घरेलू रीत का हिस्सा हैं, और इस किताब में इस्तेमाल हुए दोनों माहेश्वरी स्रोत दो दस्तूरों का ज़िक्र करते हैं।

कुछ परिवारों में

कुछ परिवार आज भी दोनों दस्तूर अलग-अलग दिन करते हैं, हर बार उस पक्ष के घर पर जिसकी संतान का मान किया जा रहा है। ज़्यादातर परिवार अब दोनों को एक साथ कर लेते हैं, क्योंकि बाहर से आने वाले रिश्तेदारों के लिए एक ही बार इकट्ठा होना आसान रहता है।

कौन किस तरफ़ बैठे, यह हर जगह एक जैसा तय नहीं है। माहेश्वरी समाज लुधियाना की रस्मों की सूची कहती है कि आजकल लड़की को लड़के के बाईं ओर बैठाया जाता है, लेकिन पुरानी रीत के हिसाब से फेरों तक वह उसके दाहिनी ओर बैठती थी। अगर फोटोग्राफर या स्टेज सँभालने वाला जोड़े को बैठा रहा हो, तो पहले से पंडित जी के साथ तय कर लेना अच्छा रहता है कि कौन किस तरफ़ बैठेगा।

अग्रवाल संस्करण जानने वाले पाठकों के लिए एक बात: उसमें लिखा है कि राजस्थानी बोलचाल में सगाई को कभी-कभी मुद्दा टिक्का भी कहते हैं। माहेश्वरी परिवार की पुस्तिका में मुद्दा टीका एक अलग रस्म है, जिसमें दुल्हन का भाई दूल्हे के घर जाता है (अध्याय 2)। अगर घर का कोई बड़ा मुद्दा टीका कहे, तो हो सकता है उसका मतलब सगाई से न होकर इसी मुलाक़ात से हो।

खोळ में क्या रखा जाता है, और लड़के को घड़ी या कोई और भेंट दी जाती है या नहीं, यह हर घर में अलग होता है।

इसमें आपकी भूमिका

- **दुल्हन:** जब तक औरतें अपना काम पूरा न कर लें, खोळ को मज़बूती से फैलाए रखिए; गिरा हुआ नारियल ही वह एक चीज़ है जो सबको याद रह जाती है। उस दिन से पहले दूल्हे के घर के बड़ों के नाम और उनसे रिश्ता जान लीजिए।
- **दूल्हा:** आपकी खोळ भी भरी जाती है। उसे सँभालकर रखिए और बड़ों को आराम से अपना काम करने दीजिए। याद रखिए कि सप्तपदी तक आपकी दुल्हन आपके दाहिनी ओर बैठती है (अध्याय 24)।
- **भाई-बहन और चचेरे-ममेरे भाई-बहन:** आप वह इंसान बनिए जो दोनों परिवारों को नाम और रिश्ते के साथ एक-दूसरे से मिलवाए। किसने क्या दिया, इसकी सूची रखिए।

बड़ों से पूछिए

1. आपकी अपनी सगाई में क्या दोनों दस्तूर दोनों घरों में अलग-अलग दिन हुए थे, और खोळ में क्या-क्या रखा गया था?

2. हमारे परिवार में दुल्हन सात क़दमों तक दूल्हे के दाहिनी ओर बैठती है, या शुरू से ही बाईं ओर?

अध्याय 2

मुद्दा टीका और चीकणी कोथली: टीके की दो रस्में

दूल्हा · दुल्हन · भाई-बहन



एक मिनट में

माहेश्वरी क्रम में टीका सगाई के अंदर शामिल नहीं होता; यह अपनी अलग मुलाक़ात है। मुद्दा टीके में दुल्हन का भाई दूल्हे के घर जाता है। साथ में भेंट होती है और लड्डू होते हैं, जो हर रिश्तेदार के हिसाब से गिनकर बनाए जाते हैं। वह दूल्हे के माथे पर टीका करता है और उसकी खोळ भरता है। चीकणी कोथली में दूल्हे के परिवार की चार-पाँच औरतें दुल्हन के यहाँ जाकर यह मुलाक़ात लौटाती हैं। दो मुलाक़ातें, दो दिशाओं में, हर पक्ष दूसरे के घर।

कब	सगाई के बाद, शादी से पहले
कौन निभाता है	दुल्हन का भाई (कुछ घरों में कोई बड़ा); फिर दूल्हे की बहन, बुआ और भाभी
कहाँ	दूल्हे का घर; फिर दुल्हन का घर
भाव	दो परिवारों का बंधन; आशीर्वाद

क्या होता है

1. मुद्दा टीका: दुल्हन का भाई और घरवाले दूल्हे के घर जाते हैं। साथ में कपड़े, गहने, सूखे मेवों से भरी चाँदी की कटोरी, लिफ़ाफ़े और मुद्दा लड्डू होते हैं, जो दूल्हे के रिश्तेदारों की गिनती के हिसाब से बनाए जाते हैं।
2. पंडित जी पहले गणेश पूजा करते हैं।
3. भाई दूल्हे का तिलक करता है (कुछ घरों में परिवार का कोई बड़ा करता है), उसे माला पहनाता है और उसकी खोळ भरता है।
4. दूल्हे की बहन या बुआ आरता करती है।
5. भाई उवारी करता है: वह दूल्हे के सिर पर से पैसे वारता है, और ये पैसे नाई या घर के किसी नौकर को दे दिए जाते हैं। इन्हें रखा नहीं जाता।
6. चीकणी कोथली: किसी और दिन दूल्हे की तरफ़ की चार-पाँच औरतें, यानी उसकी बहन, बुआ और भाभी, दुल्हन से मिलने जाती हैं।
7. गणेश पूजा के बाद वे उसका तिलक करती हैं, उसे माला पहनाती हैं, गहने देती हैं, उसकी खोळ भरती हैं और उसे चार साड़ियाँ और एक पर्स देती हैं।

हम ऐसा क्यों करते हैं

मुंबई के एक माहेश्वरी परिवार की लिखी हुई विवाह-पुस्तिका (reetrivaz.in) इन दोनों मुलाक़ातों का मुख्य स्रोत है, लेकिन वह इन्हें शगुन के अलावा कोई और मतलब नहीं देती। आगे जो लिखा है, वह वही है जो ये रस्में ख़ुद दिखाती हैं।

पहले यह देखिए कि जाता कौन है। मुद्दा टीका दुल्हन का भाई निभाता है, उसके पिता नहीं। जिस आदमी से उसकी बहन की शादी होने वाली है, उसके साथ यह भाई का पहला रस्मी काम है, और यह उसी आदमी के घर में, उसके रिश्तेदारों के सामने होता है। अग्नि के पास यही भाई अपनी बहन के हाथों में खील डालेगा (अध्याय 23)। यहाँ, महीनों पहले, दूल्हे का मान करने वही पहुँचता है।

लड्डू चुपचाप एक बात कह देते हैं। वे दूल्हे के रिश्तेदारों की गिनती के हिसाब से बनते हैं, इसलिए उस घर का कोई भी सदस्य छूटता नहीं। दुल्हन वालों ने यह जानने की मेहनत की है कि उस घर में कौन-कौन है।

अब देखिए कि मुलाक़ात लौटाता कौन है। चीकणी कोथली दूल्हे के घर की औरतें लेकर जाती हैं: बहन, बुआ और भाभी, जो नए घर में दुल्हन के सबसे क़रीब होंगी। वे दुल्हन की खोळ ठीक वैसे ही भरती हैं जैसे

भाई ने दूल्हे की खोळ भरी थी। मिलकर ये दोनों मुलाक़ातें टीके के लिए वही करती हैं जो सगाई के लिए दो दस्तूरों ने किया था (अध्याय 1): हर पक्ष दूसरे के यहाँ जाता है।

उवारी, जैसा परिवार की पुस्तिका इसे लिखती है, वही रीत है जो पूरे राजस्थान में दिखती है: किसी के सिर पर से पैसे घुमाकर नज़र उतारना। इसीलिए पैसे रखे नहीं जाते, आगे दे दिए जाते हैं। यह आपको मायरे में और दूल्हे के घोड़ी चढ़कर निकलने से पहले फिर दिखेगा।

अब थोड़ी बात दिखावे की। अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा ने "मुद्दा प्रथा" को उन रिवाजों में गिना है जिन्हें हटाने के लिए उसने काम किया है। उसकी वेबसाइट के उस पन्ने पर इस शब्द का मतलब नहीं दिया गया, और यह किताब इसका मतलब टीके की भेंटों में हद से ज़्यादा दिखावा मानती है। इस तरह समझें तो आपत्ति ज़्यादती से थी, उस भाई से नहीं जो लड्डुओं की थाली और तिलक लेकर पहुँचता है।

जड़ें **समाज की रीत**

दोनों में से कोई भी मुलाक़ात गृह्यसूत्रों में नहीं है। टीका और चीकणी कोथली जाने-माने राजस्थानी शब्दकोश में दर्ज हैं; मुद्दा टीका नाम और दोनों मुलाक़ातों का पूरा ब्योरा एक परिवार की पुस्तिका से आता है।

कुछ परिवारों में

कुछ घरों में मुद्दा टीके पर भाई की जगह दुल्हन के परिवार का कोई बड़ा तिलक करता है। परिवार की पुस्तिका दोनों तरीके दर्ज करती है।

राजस्थानी शब्दकोश के हिसाब से चीकणी कोथली वह भेंट और मिठाई है जो सगाई के बाद दूल्हे वालों की ओर से दुल्हन को भेजी जाती है। वह इसका एक और नाम भी देता है, रावणी गोद भरना। कुछ परिवारों में औरतों की टोली लेकर जाने की जगह भेंट भेज दी जाती है।

अग्रवाल संस्करण जानने वाले पाठक यह न मान लें कि यहाँ भी वैसा ही होता है। वहाँ तिलक रोके के साथ होता है और उसे दुल्हन के पिता या भाई निभाते हैं। माहेश्वरी पुस्तिका में यह एक अलग मौका है, और इसकी लौटती मुलाक़ात का अपना अलग नाम है।

कितने लड्डू, किस तरह के, और उनके साथ और क्या जाता है, यह हर परिवार में अलग होता है।

इसमें आपकी भूमिका

- **दूल्हा:** जब भाई तिलक करे तो शांत बैठिए और उसे आराम से करने दीजिए; हो सकता है वह घबराया हुआ हो। उससे ठीक से मिलिए, और उसके साथ आए दुल्हन के किसी भी बड़े के पैर छुइए।
- **दुल्हन का भाई:** यह रस्म आपकी है। दूल्हे के परिवार से समय रहते रिश्तेदारों की गिनती पूछ लीजिए ताकि लड्डू गिनकर बन सकें, और तिलक का अभ्यास कर लीजिए: अंगूठा रोली में, फिर नीचे से ऊपर एक पक्की लकीर।
- **दुल्हन:** चीकणी कोथली में जब तक औरतें अपना काम पूरा न कर लें, खोळ फैलाए रखिए। जो बहन, बुआ और भाभी आएँ, उनके नाम याद कर लीजिए; नए घर में वही आपकी पहली सहेलियाँ होंगी।
- **दूल्हे की बहन या बुआ:** मुद्दा टीके पर आरता आप करती हैं, और चीकणी कोथली की मुलाक़ात में आप ही आगे रहती हैं।

बड़ों से पूछिए

1. क्या आपकी शादी में मुद्दा टीका अलग दिन हुआ था, और तिलक किसने किया था, भाई ने या किसी बड़े ने?

2. कितने मुद्दा लड्डू बने थे, और रिश्तेदारों की गिनती कैसे तय की गई थी?

अध्याय 3

बीच के महीने: त्योहारों के नेग और न्योते

दुल्हन · दूल्हा · भाई-बहन



एक मिनट में

सगाई और शादी के बीच हर त्योहार दोनों परिवारों के लिए एक मौका बन जाता है। लड़की वाले जंवाई के लिए कपड़े और मिठाई भेजते हैं; लड़के वाले तीज और गणगौर के सिंजारे के लिए बहू को चटख रंगों के कपड़े और मेहंदी भेजते हैं। इन्हीं महीनों में न्योते भी जाते हैं: मनुहार पत्रिका लगभग तीन महीने पहले, ताकि रिश्तेदार समय पर टिकट करा सकें, और कुमकुम पत्रिका लगभग एक महीने पहले।

कब	सगाई से शादी तक हर त्योहार पर; कार्ड लगभग तीन महीने और एक महीने पहले
कौन निभाता है	दोनों घर
कहाँ	भेंट दोनों घरों के बीच आती-जाती है
भाव	दो परिवारों का बंधन

क्या होता है

1. सगाई और शादी के बीच हर त्योहार पर (दिवाली, संक्रांति, होली, तीज, गणगौर, चांदनी चौथ) दोनों घरों के बीच भेंट का लेन-देन होता है। इस किताब में इस्तेमाल हुए दोनों माहेश्वरी स्रोत इसे शादी का एक अलग पड़ाव मानते हैं।
2. लड़की वाले जंवाई के लिए कपड़े और मिठाई भेजते हैं। मुंबई के एक माहेश्वरी परिवार की लिखी हुई विवाह-पुस्तिका (reetrivaz.in) होली पर चाँदी की पिचकारी और केसर, और संक्रांति पर घेवर और फीणी का नाम लेती है।
3. लड़के वाले बहू के लिए चटख, ख़ुशी वाले रंगों (लाल, पीला, केसरिया) के कपड़े और मेहंदी भेजते हैं, दोनों सिंजारों के लिए: तीज पर और गणगौर पर।
4. शादी से लगभग तीन महीने पहले मनुहार पत्रिका जाती है। यह पहला न्योता है, ताकि दूसरे शहरों के रिश्तेदार समय पर रेल का टिकट करा सकें।
5. लगभग एक महीने पहले कुमकुम पत्रिका जाती है: यह रस्मी, पक्का कार्ड है।
6. कुछ परिवार आज भी पुरानी लगन पत्रिका भेजते हैं, जो दुल्हन की तरफ़ के हर पुरुष की ओर से दूल्हे की तरफ़ के हर पुरुष के नाम लिखी जाती है। परिवार की पुस्तिका कहती है कि अब यह आम रिवाज नहीं रहा।

हम ऐसा क्यों करते हैं

रिश्ता तय होने और शादी के बीच कई महीने लग सकते हैं, कभी-कभी साल भर। इस समय में दो परिवारों को, जो शायद एक-दूसरे को ठीक से जानते भी नहीं, रिश्तेदार बनना होता है, और त्योहारों के नेग इसी का अभ्यास हैं। हर त्योहार एक पक्ष को दूसरे की संतान के बारे में सोचने, कुछ बाँधने और भेजने की वजह देता है। शादी आते-आते होली पर जंवाई की ख़ातिर हो चुकी होती है, और बहू तीज पर वे रंग पहन चुकी होती है जो उसके होने वाले घर ने उसके लिए चुने थे।

लेन-देन की दिशाएँ वही हैं जो अध्याय 2 की टीके वाली मुलाक़ातों में थीं। लड़की का परिवार उस आदमी का ख़याल रखता है जो उनका जंवाई बनेगा; लड़के का परिवार उस लड़की का ख़याल रखता है जो उनकी बहू बनेगी। कोई भी पक्ष सिर्फ़ देता या सिर्फ़ लेता नहीं, और किसी को भी परिवार जैसा बर्ताव शुरू करने के लिए शादी का इंतज़ार नहीं करना पड़ता।

दुल्हन के लिए सिंजारे की भेंट सबसे ज़्यादा मायने रखती है। तीज और गणगौर के लिए दूल्हे के घर से आई मेहंदी उसके हाथों के लिए उस घर का पहला तोहफ़ा है। गौर का सिंजारा सगाई को गणगौर से भी

जोड़ता है। गणगौर यानी गौरी की पूजा, जो माहेश्वरी समाज के बड़े त्योहारों में से है, और जिसे दुल्हन अपनी शादी से ठीक पहले सात सुहागिनों के साथ फिर करेगी (अध्याय 15)।

दोनों न्योते सीधी-सादी समझदारी की बात हैं। परिवार की पुस्तिका साफ़ कहती है कि मनुहार पत्रिका जल्दी इसलिए जाती है ताकि बाहर रहने वाले रिश्तेदार अपनी यात्रा का इंतज़ाम कर सकें। मनुहार राजस्थानी शब्द है, जिसका मतलब है प्यार भरा, ज़ोर देकर किया गया आग्रह: पहला कार्ड यानी परिवार आपसे बार-बार कह रहा है कि आइए ज़रूर। कुमकुम से सजी कुमकुम पत्रिका उसके बाद आने वाला शुभ कार्ड है।

लगन, यानी शादी का तय मुहूर्त, बाद की एक रस्म का हिस्सा है। परिवार की पुस्तिका में यह सावा पूजन पर लिखा जाता है (अध्याय 8) और वरणा पर दूल्हे के पास ले जाया जाता है (अध्याय 18)। इन महीनों के कार्ड शादी की ख़बर देते हैं; उसे तय नहीं करते।

जड़ें **समाज की रीत**

त्योहारों का लेन-देन और न्योते के कार्ड मारवाड़ी घरों की रीत हैं, पुरोहितों के ग्रंथों का हिस्सा नहीं। दोनों माहेश्वरी स्रोत इस लेन-देन को दर्ज करते हैं; दोनों कार्डों का समय एक परिवार की पुस्तिका से लिया गया है।

कुछ परिवारों में

माहेश्वरी समाज लुधियाना की रस्मों की सूची त्योहारों में कजली तीज भी जोड़ती है, लड़की वालों की ओर से आम और चिरौंजी भेजने की बात कहती है, और संक्रांति और होली पर मिठाई का नाम लेती है। परिवार की पुस्तिका चांदनी चौथ पर एक सिंजारा और जोड़ती है। कुछ परिवार अब जन्मदिन पर भी कुछ भेजते हैं।

कहा जाता है कि राजस्थान के बहुत से परिवार पहला शादी का कार्ड किसी इंसान को देने से पहले रणथंभौर गणेश को भेजते हैं, जो राजस्थान में गणेश जी का बड़ा धाम है। कुछ परिवार पहला कार्ड अपने कुल के मंदिर में चढ़ाते हैं। यह रिवाज बहुत जगह सुनने में आता है, लेकिन माहेश्वरी स्रोत इसका ज़िक्र नहीं करते।

नेग कितने बड़े हों, यह हर परिवार की अपनी बात है। संक्रांति पर मिठाई का एक डिब्बा भी वही मतलब रखता है जो कपड़ों से भरी थाली, और जब शादी साल भर दूर हो तो परिवार अक्सर बाद के त्योहारों के नेग छोटे रखते हैं।

इसमें आपकी भूमिका

- **दुल्हन:** सिंजारे के कपड़े और मेहंदी पहनने के लिए ही आते हैं। त्योहार पर उन्हें पहनिए, और दूल्हे के परिवार को पता चलने दीजिए कि आपने पहने।
- **दूल्हा:** होली की पिचकारी और संक्रांति का घेवर आपके होने वाले ससुराल वालों के प्यार और ध्यान के साथ आते हैं। धन्यवाद कहने के लिए किया गया एक फ़ोन सबको याद रहता है।
- **भाई-बहन और चचेरे-ममेरे भाई-बहन:** पतों की सूची जल्दी बना लीजिए, बाहर रहने वाले रिश्तेदारों को सबसे ऊपर रखकर, ताकि मनुहार पत्रिका तीन महीने पहले जा सके। हर त्योहार पर क्या आया, इसे लिखते जाइए।

बड़ों से पूछिए

1. आपकी सगाई और शादी के बीच किन त्योहारों पर नेग आए-गए, और आपके लिए क्या आया था?

2. क्या हमारा परिवार पहला शादी का कार्ड रणथंभौर गणेश को भेजता है, या अपने किसी मंदिर में?

आम सवाल

क्या अंगूठी ज़रूरी है?

परंपरा के हिसाब से नहीं। मुंबई के एक माहेश्वरी परिवार की लिखी हुई विवाह-पुस्तिका (reetrivaz.in) अंगूठी पहनाने को आज का चलन बताती है, जो रोकने में ऊपर से जोड़ा गया है, और पुरानी मारवाड़ी सगाई में अंगूठी होती ही नहीं थी: तिलक, भेंट और भरी हुई खोळ ही सारा काम कर देते थे। जो परिवार अंगूठी नहीं रखते, वे पुराने तरीके पर चल रहे हैं।

पहले कौन देता है?

सगाई में स्रोत दो दस्तूरों की बात करते हैं, हर पक्ष का एक, और आजकल ये अक्सर साथ-साथ होते हैं, इसलिए साफ़ तौर पर कोई भी पक्ष पहले नहीं आता। टीके वाली मुलाक़ातों में क्रम साफ़ है: मुद्दा टीके पर दुल्हन का भाई दूल्हे के यहाँ जाता है, और चीकणी कोथली पर दूल्हे के घर की औरतें मुलाक़ात लौटाती हैं। असली बात यह है कि दोनों तरफ़ से आना-जाना हो।

मुद्दा टीका और सगाई में क्या फ़र्क है?

सगाई ख़ुद रिश्ते का पक्का होना है, दोनों परिवारों के बीच सबके सामने दिया गया वचन। मुद्दा टीका उसके बाद आता है: दुल्हन का भाई लड्डू और भेंट लेकर दूल्हे के घर जाता है और उसके माथे पर टीका करता है। कुछ बड़े-बुज़ुर्ग, और अग्रवाल संस्करण भी, "मुद्दा टिक्का" शब्द को मोटे तौर पर सगाई के लिए इस्तेमाल करते हैं, इसलिए पूछ लेना अच्छा है कि कोई रिश्तेदार किसकी बात कर रहा है।

शादी साल भर बाद है। क्या पूरे साल त्योहारों के नेग चलते रहने चाहिए?

दोनों माहेश्वरी स्रोत सगाई और शादी के बीच हर त्योहार पर लेन-देन की बात करते हैं, लेकिन यह कहीं तय नहीं कि नेग कितने बड़े हों। बहुत से परिवार बाद वाले नेग छोटे रखते हैं: मिठाई का एक डिब्बा, तीज पर कपड़ों का एक जोड़ा। दोनों परिवार आपस में यह तय कर सकते हैं; मतलब तो उस भावना में है।

कार्ड कब भेजे जाएँ?

परिवार की पुस्तिका मनुहार पत्रिका लगभग तीन महीने पहले भेजती है, ताकि दूसरे शहरों के रिश्तेदार अपनी यात्रा का इंतज़ाम कर सकें, और कुमकुम पत्रिका लगभग एक महीने पहले। आज के सफ़र और शादी की जगहों को देखते हुए भी, दूर से आने वालों के लिए तीन महीने पहले बताना समझदारी है।

अगर लड़का या लड़की में से कोई एक माहेश्वरी न हो तो?

जब दोनों में से एक किसी और समाज से हो, तब भी इन अध्यायों की रस्में निभाई जा सकती हैं, और अक्सर निभाई जाती हैं। पंडित जी बारीकियों में फेरबदल कर लेते हैं, और दूसरे परिवार को पहले से बताया जा सकता है कि हर मुलाक़ात का क्या मतलब है। वचन का ढाँचा, यानी हर पक्ष का गवाहों के सामने दूसरे की संतान का मान करना, किन्हीं भी दो परिवारों के लिए काम करता है।

भाग दो

घर में शादी की शुरुआत



पुरखों का मान, गीतों की शुरुआत, माँ के भाइयों को न्योता, और घर शादी में उतरता है।

नान्दीमुख · गीत · बत्तीसी न्यूतना · विवाह हाथ और मूंग बिखेरना · सावा पूजन, विनायक और लग्न · बान और तणी · शादी की रसोई · मायरा और बीर भोजन

अध्याय 4

नान्दीमुख: सबसे पहले पुरखे

दुल्हन दूल्हा



एक मिनट में

शादी से लगभग दस दिन पहले पंडित जी माता-पिता के साथ बैठकर नान्दीमुख करते हैं, जो परिवार के पुरखों का श्राद्ध है। शादी की शुरुआत गुज़र चुके लोगों की रस्म से करना अजीब लगता है, लेकिन यह ख़ुशी के मौके का श्राद्ध है, शोक की रस्म नहीं। मुंबई के एक माहेश्वरी परिवार की लिखी हुई विवाह-पुस्तिका (reetrivaz.in) इसका मक़सद साफ़ बताती है: नान्दीमुख हो जाने के बाद परिवार में किसी का जन्म या मृत्यु शादी को नहीं रोक सकती।

कब	मुहूर्त से लगभग दस दिन पहले; कुछ घरों में लगभग एक हफ़्ता पहले
कौन निभाता है	पंडित जी, माता-पिता के साथ या उस जोड़े के साथ जो कन्यादान के लिए बैठेगा
कहाँ	हर घर में, अपने-अपने पुरखों के लिए
भाव	आशीर्वाद; रक्षा

क्या होता है

1. पंडित जी दिन तय करते हैं, शादी के मुहूर्त से लगभग दस दिन पहले। कुछ घरों में यह लगभग एक हफ़्ता पहले होता है।
2. माता-पिता पंडित जी के सामने बैठते हैं। दुल्हन की तरफ़, अगर परिवार का कोई और जोड़ा कन्यादान के लिए बैठने वाला है, तो वही जोड़ा बैठता है।
3. माहेश्वरी समाज लुधियाना की रस्मों की सूची में नान्दीमुख गणेश पूजा के बाद आता है।
4. पंडित जी अपनी पद्धति से नान्दी श्राद्ध करते हैं: परिवार के पुरखों के लिए अर्पण करते हैं और आने वाली शादी के लिए उनका आशीर्वाद माँगते हैं।
5. परिवार की पुस्तिका में लिखा है कि इसके बाद परिवार में जन्म या मृत्यु होने पर भी शादी पर सूतक नहीं लगता, और शादी अपने समय पर होती है।

हम ऐसा क्यों करते हैं

इस रस्म को समझने की चाबी सूतक है। हिंदू घरों की रीत में परिवार में जन्म या मृत्यु होने पर कुछ समय के लिए अशुद्धि मानी जाती है, जिसे सूतक कहते हैं, और इस दौरान शुभ काम नहीं किए जाते। शादी की तैयारी महीनों पहले से होती है: हॉल तय हो चुके होते हैं, रिश्तेदार सफ़र पर निकल चुके होते हैं, कार्ड बँट चुके होते हैं। वरना आख़िरी हफ़्ते में दादा-दादी या नाना-नानी में से किसी बुज़ुर्ग के गुज़र जाने से सब कुछ टल सकता है।

परिवार की पुस्तिका यह बात बिना किसी लाग-लपेट के कहती है। वह लिखती है कि मृत्यु कभी भी आ सकती है, इसलिए नान्दीमुख किया जाता है ताकि शुभ काम में रुकावट न आए; वह यह भी जोड़ती है कि गृह प्रवेश या किसी और शुभ काम से दस दिन पहले भी यही किया जाता है। लुधियाना की सूची यही कारण कम शब्दों में देती है: यह इसलिए किया जाता है "ताकि कोई अनहोनी न हो"। यह समाज का अपना बताया हुआ कारण है, जो दो अलग-अलग स्रोतों में लिखा मिलता है।

इस सीधे जवाब के पीछे एक पुराना जवाब भी है। नान्दीमुख आभ्युदयिक श्राद्ध है, यानी बढ़ती और सौभाग्य के समय का श्राद्ध। पंडित जी की पद्धति इसे हर संस्कार से पहले रखती है, यानी जीवन के पड़ाव मनाने वाली हर रस्म से पहले, सिर्फ़ शादी से पहले नहीं। इसके नाम का मतलब अक्सर "हँसते चेहरे वाले" बताया जाता है: पुरखों को शोक में डूबे गुज़रे लोगों की तरह नहीं, परिवार की ख़ुशख़बरी के ख़ुश गवाहों की तरह बुलाया जाता है। पद्धति में गुज़रे लोगों के श्राद्ध वाले काले तिल की जगह जौ लिया जाता है, जो इस बात का छोटा सा निशान है कि यह बढ़ती की रस्म है।

सीधे शब्दों में, परिवार सबसे पहले अपने पुरखों को बताता है। विनायक बने लड़के के साथ गणेश जी को बैठाने से पहले, गीतों और हल्दी से पहले, जिन लोगों से यह परिवार बना है उनसे अगली पीढ़ी को आशीर्वाद देने को कहा जाता है। आगे चलकर पितरजी का गीत भी यही कहता है (अध्याय 5)। एक बार पुरखों से पूछ लिया, तो परिवार मान लेता है कि शादी शुरू हो चुकी है, और घर में जन्म या मृत्यु उसे वापस नहीं मोड़ सकती।

इस रस्म की सीमाएँ भी साफ़ कह देनी चाहिए। यह सूतक को शादी रोकने नहीं देती; यह किसी दुखी परिवार को यह नहीं बताती कि उसे कैसा महसूस करना चाहिए या और क्या बदलना चाहिए। अगर नान्दीमुख के बाद सचमुच किसी की मृत्यु हो जाए, तो शादी के दिनों में परिवार उसे कैसे निभाए, यह आपके पंडित जी और आपके बड़े-बुज़ुर्ग तय करेंगे।

जड़ें **शास्त्रीय या पौराणिक विधि**

नान्दीमुख वह आभ्युदयिक श्राद्ध है जिसे पद्धतियाँ हर संस्कार से पहले रखती हैं। यहाँ इसका बताया गया मक़सद, यानी सूतक को शादी रोकने न देना, इस किताब में इस्तेमाल हुए दोनों माहेश्वरी स्रोतों में दर्ज है।

कुछ परिवारों में

परिवार की पुस्तिका मुहूर्त से दस दिन पहले का समय बताती है, और लिखती है कि कुछ घरों में यह लगभग एक हफ़्ता पहले होता है। लुधियाना की सूची इसे गणेश पूजा के ठीक बाद रखती है।

अलग-अलग इलाकों के माहेश्वरी परिवार इसे कैसे अलग ढंग से निभाते हैं, इस पर कोई लिखा हुआ स्रोत नहीं मिलता। आपका परिवार इसे घर पर करता है या पंडित जी के यहाँ, और किस दिन, यह अपने बड़ों से पूछिए।

इसमें आपकी भूमिका

- **दुल्हन और दूल्हा:** उस दिन से पहले अपने दादा और परदादा के नाम जान लीजिए। पंडित जी उन्हें पूछ सकते हैं, और वरणा पर आपको फिर से तीन पीढ़ियों के नाम चाहिए होंगे (अध्याय 18)।
- **दुल्हन और दूल्हा:** भले ही रस्म में सिर्फ़ आपके माता-पिता बैठें, कोशिश कीजिए कि आप कमरे में मौजूद रहें। पूरी शादी में यही एक रस्म है जो उन लोगों के नाम है जो वहाँ नहीं हैं।

बड़ों से पूछिए

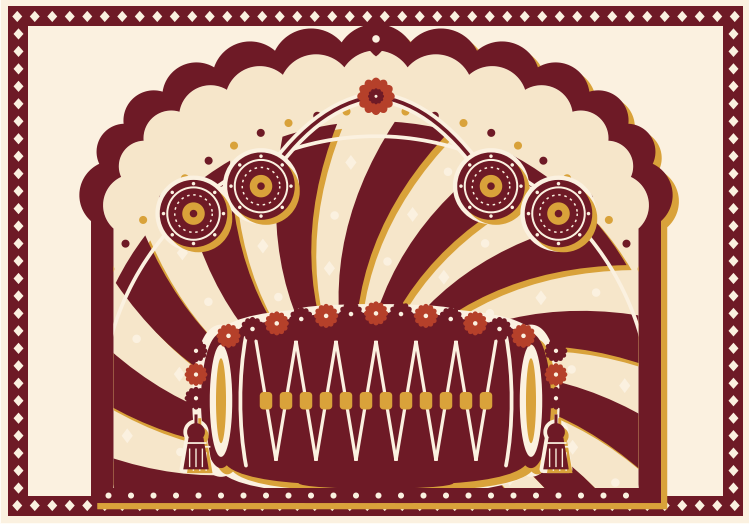
1. आपकी अपनी शादी से पहले नान्दीमुख कब हुआ था, और उसमें कौन बैठा था?

2. क्या हमारे परिवार में कभी नान्दीमुख और शादी के बीच किसी का जन्म या मृत्यु हुई है, और तब परिवार ने क्या किया था?

अध्याय 5

गीत: पहले पाँच गीत देवी-देवताओं के

दुल्हन दूल्हा भाई-बहन



एक मिनट में

इस किताब में इस्तेमाल हुए दोनों माहेश्वरी स्रोतों में संगीत की कोई अलग शाम नहीं मिलती। गीत रस्मों के अंदर ही रहते हैं, और बत्तीसी से आगे जब भी गाना होता है, एक ही क्रम चलता है: पहले पाँच गीत देवी-देवताओं के (विनायक, बालाजी, श्यामजी, माताजी, पितरजी), फिर उस मौके के गीत। लड़के के यहाँ गाना घोड़ी और सेवरे से ख़त्म होता है, लड़की के यहाँ कामण से। यह क्रम यहीं समझ लीजिए, ताकि आगे के अध्यायों में बस गीत का नाम लेना काफ़ी रहे।

कब	बत्तीसी से आगे, हर बार जब गीत गाए जाते हैं
कौन निभाता है	घर की औरतें
कहाँ	हर घर में
भाव	आशीर्वाद; दो परिवारों का बंधन
इस मौके का गीत	"किसा नगर स्यूं आया ओ बाबा दूंदाळा", विनायक का गीत, जिससे हर बार गाना शुरू होता है

क्या होता है

1. औरतें ढोलक लेकर दुल्हन या दूल्हे के चारों ओर बैठती हैं। मुंबई के एक माहेश्वरी परिवार की लिखी हुई विवाह-पुस्तिका (reetrivaz.in) में, जिससे इस अध्याय के सारे गीतों के बोल लिए गए हैं, ब्राह्मण औरतें भी आती हैं और उन्हें लिफ़ाफ़े दिए जाते हैं।
2. पहला गीत विनायक यानी गणेश जी का होता है: "किसा नगर स्यूं आया ओ बाबा दूंदाळा"। गीतों में उन्हें दूंदाळा कहा जाता है।
3. फिर सालासर के बालाजी ("कठोड़ तो बाजा ओ बजरंग बाजिया"), खाटू के श्यामजी ("धन खाटू धन सांवला श्यामजी"), माताजी ("डूंगर स्यूं माताजी उतरी") और पितरजी यानी पुरखों के गीत ("उतर दिखण स्यूं ओ गांधी को आयो")।
4. माताजी और पितरजी के गीतों में परिवार हर अंतरे में अपने लोगों के नाम जोड़ता जाता है। जो परिवार किसी भैरूं को मानता है, वह भैरूंजी का एक गीत भी जोड़ता है।
5. फिर मौके के गीत आते हैं: दूल्हे के लिए बन्ना, दुल्हन के लिए बन्नी, और जो रस्म चल रही हो उसका गीत, जैसे पीठी का गीत "म्हारी हळदी रो रंग सुरंग, निपज मालवे"।
6. दूल्हे के घर गाना घोड़ी ("इंद्रलोक सूं आई ओ राज घोड़ी") और सेवरे ("बन्ना कहेरी थारी दुवात लेखण") से ख़त्म होता है। दुल्हन के घर यह कामण ("बनड़ी सुहाग मांगण चाली आप रा दादा रा दरबार") से ख़त्म होता है।

हम ऐसा क्यों करते हैं

असली बात क्रम में है। दूल्हे की घोड़ी या दुल्हन की सुंदरता का कोई भी गीत गाने से पहले घर अपने देवी-देवताओं और अपने पुरखों को बुलाता है, एक तय क्रम में, हर बार। परिवार की पुस्तिका यह नियम तीन बार दोहराती है, और जिन लोकगीत-जानकारों ने राजस्थानी औरतों के गीत रिकॉर्ड किए हैं, वे भी यही बात कहते हैं: पहले कुल के देवता आते हैं, और क्रम मायने रखता है।

देखिए किसे बुलाया जाता है। गणेश जी को, क्योंकि हर शुभ काम उन्हीं से शुरू होता है। सालासर के बालाजी और खाटू के श्यामजी को, जो शेखावाटी के दो बड़े धाम हैं। माताजी को, यानी परिवार की देवी को। पितरजी को, यानी पुरखों को। यह सूची एक परिवार की दुनिया का नक्शा है, जिसकी जड़ें शेखावाटी की सीमा के पास मारवाड़ में हैं। किसी और जगह का परिवार किसी दूसरी माताजी का नाम ले सकता है या अपने भैरूं को जोड़ सकता है; ढाँचा वही रहता है।

हर अंतरे में जोड़े गए नाम वह काम करते हैं जो छपा हुआ गीत नहीं कर सकता। हर बार औरतें परिवार के अपने दादाजी, बाबाजी, काकाजी और मामाजी के नाम गीत में गाती हैं, जो हैं और जो गुज़र गए, सब साथ।

बीच में बैठे दुल्हन या दूल्हे को शादी से पहले दर्जन भर बार अपना पूरा कुनबा अपने चारों ओर गाया जाता सुनाई देता है।

आख़िरी गीत बता देता है कि शादी किसकी है। घोड़ी और सेवरा, दूल्हे की घोड़ी और उसके सिर पर बँधने वाले सेवरे (सेहरे) के गीत हैं: उस लड़के के गीत जो घोड़ी चढ़कर निकलेगा। कामण के दो मतलब हैं। लोकगीतों की सूचियों में यह रक्षा का गीत है, जादू-टोने से बचाने वाला; परिवार की पुस्तिका वाले रूप में दुल्हन सुहाग माँगने अपने दादा के दरबार में जाती है। रक्षा और सुखी शादी की प्रार्थना, दोनों एक ही गीत में। (इस किताब में गीतों की पंक्तियों के जो अर्थ दिए गए हैं, वे मोटे तौर पर हैं; असली गीत राजस्थानी में हैं।)

अग्रवाल संस्करण के पाठक एक चीज़ ढूँढेंगे और नहीं पाएँगे। राजस्थानी शादियों में सीठणे होते हैं, यानी दूसरे पक्ष को छेड़ने वाले गीत। परिवार की पुस्तिका में ऐसा कोई गीत नहीं है; उसमें हँसी-ठिठोली बस दुल्हन के आने पर थालेड़ी के नकली झगड़े में है (अध्याय 28), और आरते के गीत में ननद और भौजाई की नोक-झोंक में। हो सकता है कुछ परिवारों में सीठणे गाए जाते रहे हों; स्रोत उन्हें नहीं दिखाते, इसलिए मान लेने की जगह पूछ लीजिए।

जड़ें **समाज की रीत**

पंडित जी की विधियों में गीतों की कोई जगह नहीं है। ये घर की औरतों के हैं और याद के सहारे आगे बढ़ते हैं; देवी-देवताओं के पाँच गीतों का क्रम एक परिवार की पुस्तिका में लिखा है, और लोकगीत-जानकार पूरे राजस्थान में यही दर्ज करते हैं।

कुछ परिवारों में

बन्ना गीतों में दूल्हे को रायजादा और उमराव कहा जाता है, यानी राजकुमार और सरदार। कुछ सुनने वालों को इसमें समाज की क्षत्रिय उत्पत्ति वाली कथा की गूँज सुनाई देती है। गीतों का सचमुच यही मतलब है, या वे बस वही पुराने दरबारी शब्द इस्तेमाल करते हैं जो हर राजस्थानी शादी में चलते हैं, यह अपने बड़ों से पूछिए।

कुछ परिवारों में दुल्हन के घर की औरतें बारात का डेरा देखने जाती हैं और जाला गीत गाती हैं: "म्हैं तो थारा डेरा निरखण आई ओ", यानी मोटे तौर पर "मैं तुम्हारा डेरा देखने आई हूँ"। स्रोतों से यह तय नहीं होता कि माहेश्वरी परिवार आज भी ऐसा करते हैं या नहीं।

जो गीत सुनना चाहें, उनके लिए reetrivaz.in पर लगभग दो सौ गीतों का संग्रह है, सूची के साथ, और इन्हें सुना भी जा सकता है। जोधपुर के रूपायन संस्थान की गाँव-गाँव जाकर की गई रिकॉर्डिंग, यानी

कोमल कोठारी का संग्रह, इंटरनेट आर्काइव पर है; इनमें बहुत से समाजों के गीत हैं, सिर्फ़ माहेश्वरियों के नहीं।

इसमें आपकी भूमिका

- **दुल्हन और दूल्हा:** पता कीजिए कि आपका परिवार गीतों में किस माताजी और किन पुरखों का नाम लेता है।
- **भाई-बहन और चचेरे-ममेरे भाई-बहन:** घर की बड़ी औरतों को गाते हुए रिकॉर्ड कर लीजिए, और पितरजी के गीत में वे जिस क्रम में नाम लेती हैं, उसे लिख लीजिए। अगर किसी के पास हाथ से लिखी गीतों की कॉपी है, तो उसके हर पन्ने की फोटो ले लीजिए।
- **संगीत की शाम रखने वाले:** किसी बड़े से कहिए कि शाम की शुरुआत देवी-देवताओं के पाँच गीतों से करें।

बड़ों से पूछिए

1. हमारा परिवार गीतों में किस माताजी और किन पुरखों का नाम लेता है, और उन्हें किस क्रम में गाया जाता है?

2. क्या हमारे घर में हर बार गाने से पहले देवी-देवताओं के पाँच गीत गाए जाते हैं, और क्या किसी के पास अब भी हाथ से लिखी गीतों की कॉपी है?

अध्याय 6

बत्तीसी न्यूतना: माँ के भाइयों को न्योता

भाई-बहन



एक मिनट में

भाई मायरा लेकर आएँ, इससे पहले दुल्हन या दूल्हे की माँ ख़ुद उनके पास जाती है। हाथों में मेहंदी लगाकर, घर की औरतों के गीतों के साथ, वह अपने पीहर जाती है, हर भाई को उसकी पत्नी के साथ बैठाती है, तिलक करती है और उन्हें हर चीज़ बत्तीस-बत्तीस देती है: रुपये, सुपारी, लौंग, इलायची, बादाम, छुहारे और पतासे। यही बत्तीसी है, यानी उसका मायरा भरने का रस्मी न्योता। जाने से पहले उसे लापसी खिलाई जाती है।

कब	मायरे से पहले कोई शुभ दिन
कौन निभाता है	दुल्हन या दूल्हे की माँ
कहाँ	उसका पीहर
भाव	दो परिवारों का बंधन
इस मौके का गीत	"कागा रे कीजी बीराजी ने जाय", जिसमें कौए को संदेश लेकर भाई के पास भेजा जाता है

क्या होता है

1. पहले माँ के हाथों में मेहंदी लगाई जाती है।
2. अपने घर की औरतों के साथ वह अपने पीहर जाती है।
3. देवी-देवताओं के पाँच गीत गाए जाते हैं (अध्याय 5), फिर न्योते के गीत, जैसे "बीरो भात भरण ने आवेगो" और "कागा रे कीजी बीराजी ने जाय"।
4. हर भाई और उसकी पत्नी को जोड़े में साथ बैठाया जाता है। बहन तिलक करती है, उन्हें मिठाई खिलाती है, भाई को भेंट देती है और भाभी को एक ब्लाउज़।
5. वह अपने भाइयों को हर चीज़ बत्तीस-बत्तीस देती है: 32 रुपये और 32-32 सुपारी, लौंग, इलायची, बादाम, छुहारे और पतासे, साथ में सवा किलो गेहूँ और सवा किलो गुड़। उसके चचेरे, फुफेरे और ममेरे भाइयों को, यानी काका, बुआ और मामा के बेटों को, एक नारियल और एक लिफ़ाफ़ा मिलता है।
6. गेहूँ और गुड़ से लापसी और बड़ी की सब्ज़ी बनती है, और बहन को खिलाई जाती है।

हम ऐसा क्यों करते हैं

बत्तीस की गिनती क्यों, यह कोई स्रोत नहीं बताता। न मुंबई के एक माहेश्वरी परिवार की लिखी हुई विवाह-पुस्तिका (reetrivaz.in) कोई कारण देती है, न माहेश्वरी समाज लुधियाना की रस्मों की सूची, और यह किताब अपनी ओर से कोई कारण गढ़ेगी नहीं। रस्म का नाम इसी गिनती से पड़ा है, और लिखी हुई जानकारी यहीं ख़त्म हो जाती है।

रस्म जो दिखाती है, वह कहीं ज़्यादा साफ़ है। भाई उसके घर आएँ, इससे पहले बहन ख़ुद उनके पास जाती है, उसी घर में जहाँ वह पली-बढ़ी। मायरा (अध्याय 11) बहन की संतान की शादी में भाइयों की बड़ी भेंट है। बत्तीसी यह पक्का करती है कि यह भेंट माँगी नहीं जाती, बल्कि बुलावे का जवाब होती है: वह गीतों के साथ, हाथों में भेंट लेकर न्योता देती है, और पहले वह ख़ुद देती है।

अब गेहूँ और गुड़ पर ध्यान दीजिए। वह इन्हें अपनी भेंट के हिस्से के तौर पर लाती है, और ये पककर लापसी बनकर उसी के पास लौटते हैं, उसके माँ-बाप के घर में उसे परोसे जाते हैं। एक दोपहर के लिए वह फिर से उस घर की बेटी बन जाती है, जिसे वही घर खिलाता है। अग्रवाल संस्करण मायरे के बारे में जो बात कहता है, वह यहाँ भी लागू होती है: शादीशुदा औरत के पीछे भी उसका पीहर खड़ा रहता है, और ज़रूरत के समय उसके भाई पहुँचते हैं। बत्तीसी वह दिन है जब वह यही माँगने अपने घर जाती है।

हर भाई को उसकी पत्नी के साथ बैठाना भी मायने रखता है। भाभी को अपनी अलग भेंट मिलती है, और जब मायरा आएगा, तब भाई और भाभी चौकी पर साथ-साथ खड़े होकर बहन का स्वागत लेंगे (अध्याय

11)।

जड़ें **समाज की रीत**

बत्तीसी पूरे राजस्थान में होती है; पारीक ब्राह्मण परिवार भी भाई को न्योता देने के ऐसे ही गीत गाते हैं। बत्तीस चीज़ों वाला माहेश्वरी रूप इस किताब में इस्तेमाल हुए समाज के दोनों स्रोतों में दर्ज है।

कुछ परिवारों में

लुधियाना की सूची 32 लड्डू और 32 रुपये बताती है, साथ में पान, सुपारी, बादाम, लौंग, इलायची, खारक और काजू, जो बड़े भाई की गोद में रखे जाते हैं। वह कहती है कि यह रस्म बहन के माँ-बाप के घर होती है, या अगर वह घर दूर हो तो मायरे से ठीक पहले। यह उन परिवारों के लिए सुविधा की बात है जिनका पीहर अब किसी और शहर में है।

बहुत से परिवार इस दिन को भात न्योतना भी कहते हैं। अग्रवाल संस्करण में यह न्योता मायरे वाले अध्याय की बस एक पंक्ति है; माहेश्वरी स्रोतों में यह एक अलग दिन है, जिसका अपना नाम और अपने गीत हैं। परिवार की पुस्तिका यह भी जोड़ती है कि जब बहन विदा होती है, तो भाई उसे तिलक करके एक साड़ी देते हैं, और अगर उसके पति साथ आए हों, तो उन्हें तिलक और एक लिफ़ाफ़ा।

इसमें आपकी भूमिका

- **दुल्हन या दूल्हे के भाई-बहन और चचेरे-ममेरे भाई-बहन:** अपनी माँ के साथ जाइए और थाली आप उठाइए। एक दिन पहले हर चीज़ के बत्तीस गिनकर छोटी-छोटी थैलियों में रख लीजिए, ताकि नानी के दरवाज़े पर हड़बड़ी में कुछ गिनना न पड़े।
- **मामा का परिवार:** जो गेहूँ और गुड़ वह लाती है, उनसे लापसी और बड़ी की सब्ज़ी आपकी रसोई में बनती है। उसे अपने हाथों से परोसना ही इस रस्म का असली मतलब है।
- **मामा के बच्चे:** जब आपकी बुआ आपके माता-पिता को बैठाए, तब उनके साथ बैठिए। आप देख रहे हैं कि एक बहन और एक भाई एक-दूसरे के लिए क्या फ़र्ज़ निभाते हैं।

बड़ों से पूछिए

1. क्या आपके बच्चों की शादियों से पहले बत्तीसी अलग दिन हुई थी, और बत्तीस में ठीक-ठीक क्या-क्या था?

2. न्योते के कौन-से गीत गाए गए थे, और क्या किसी को कौए वाले गीत के बोल याद हैं?

अध्याय 7

विवाह हाथ और मूंग बिखेरना: घर में शादी की शुरुआत

दुल्हन दूल्हा भाई-बहन



एक मिनट में

शादी से कुछ दिन पहले, तय मुहूर्त पर, दुल्हन या दूल्हा पूरब की ओर मुँह करके बैठते हैं और उन्हें तिलक लगाकर मौली बाँधी जाती है। फिर माँ और घर की बहुएँ हरे मूंग का ढेर बीनती हैं और औरतें गीत गाती हैं। यही वह दिन है जब घर शादी का काम अपने हाथ में लेता है। मुंबई के एक माहेश्वरी परिवार की लिखी हुई विवाह-पुस्तिका (reetrivaz.in) मूंग का मतलब एक पंक्ति में बताती है: शादी के दौरान घर हरा-भरा रहे और सबमें प्यार बना रहे।

कब	शादी से 5, 7 या 11 दिन पहले, मुहूर्त पर
कौन निभाता है	घर की औरतें; तिलक बुआ या बहन करती है
कहाँ	दोनों घरों में, अलग-अलग
भाव	आशीर्वाद
इस मौके का गीत	पहले देवी-देवताओं के पाँच गीत, फिर लड़के के लिए घोड़ी के गीत ("इंद्रलोक सूं आई ओ राज घोड़ी") और लड़की के लिए कामण ("बनड़ी सुहाग मांगण चाली आप रा दादा रा दरबार")

क्या होता है

1. मुहूर्त पर बंदा या बंदी (परिवार की पुस्तिका में दूल्हे और दुल्हन के लिए यही शब्द हैं) पूरब की ओर मुँह करके चौकी पर बैठते हैं, और घर की औरतें आसपास दरी पर बैठती हैं।
2. बुआ या कोई बहन माथे पर तिलक लगाती है और कलाई पर मौली बाँधती है। गुड़ से मुँह मीठा कराया जाता है।
3. माँ, या घर की सबसे बड़ी औरत, सात थालियों में से हर एक पर रोली से स्वस्तिक बनाती है।
4. सवा किलो मूंग पहले माँ को और फिर घर की छह बहुओं को दिया जाता है, और वे उसे बीनती हैं।
5. औरतें पहले देवताओं के पाँच गीत गाती हैं, फिर मौके के गीत: लड़के के घर बन्ना, घोड़ी और आख़िर में सेवरा; लड़की के घर बन्नी और आख़िर में कामण।
6. जो ब्राह्मण औरतें आई होती हैं, उन्हें लिफ़ाफ़े दिए जाते हैं।

हम ऐसा क्यों करते हैं

दाल बीनना रसोई का रोज़ का काम है, इसके लिए किसी मुहूर्त की ज़रूरत नहीं होती। असल बात यही है। माहेश्वरी शादी का पहला काम घर की औरतें करती हैं, अपने हाथों से, उसी अनाज पर जो घर में पकेगा। पुस्तिका सीधे शब्दों में कहती है: जब शादी का काम शुरू होता है, तो सबसे पहले मूंग बिखेरे जाते हैं।

पुस्तिका इसका कारण भी अपने शब्दों में देती है, और यह किसी शास्त्र की नहीं, एक परिवार की समझ है। मूंग हरा होता है। हरी धरती उपजाऊ धरती होती है। जैसे मूंग हरा है, वैसे ही बेटे या बेटी की शादी में हम भी हरे-भरे रहें और आपस में प्यार बना रहे। शादी में पैसे की चिंता और परिवार की पुरानी खटपट, सब एक ही घर में आकर इकट्ठा हो जाते हैं, और यह कामना ठीक उसी के लिए है।

देखिए कौन बैठता है: माँ, फिर छह बहुएँ, यानी सात औरतों की वही टोली जो धान रोळना (अध्याय 10) में अनाज एक-दूसरे को देगी। यह रस्म उन औरतों को इकट्ठा करती है जिनके कंधों पर शादी चलनी है, और कुछ भी गड़बड़ होने से पहले उनके सामने पहला साझा काम रख देती है।

इसके बाद मूंग बार-बार आता है। सावा पूजन (अध्याय 8) में यह चौकी के नीचे रखा जाता है, गठजोड़े (अध्याय 22) की गाँठ में बँधता है, थालेड़ी की थालियों में जाता है और थली पूजन में पत्ते पर रखा जाता है। स्वस्तिक वाली सात थालियाँ भी लौटकर आती हैं, जब दुल्हन अपने नए घर में प्रवेश करती है (अध्याय 28)। इन सबकी शुरुआत यहीं से होती है।

जड़ें **समाज की रीत**

यह राजस्थानी घरों की रस्म है, जिसे औरतें और उनके गीत पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाते आए हैं। पुरोहितों के किसी ग्रंथ में इसे करने को नहीं कहा गया है; मूंग का जो मतलब बताया गया है, वह परिवार की पुस्तिका का अपना है।

कुछ परिवारों में

माहेश्वरी समाज लुधियाना की रस्मों की सूची में इसका अपना रूप है: गणेश पूजा के दिन चार औरतें हाथ में मूंग की दाल लेती हैं, और मूंग के पकौड़े बनते हैं। बारीकियाँ अलग हैं, लेकिन एक-दूसरे से दूर के दो स्रोत इस बात पर एक हैं कि शादी की शुरुआत मूंग से होती है। यह इस बात का अच्छा सबूत है कि यह माहेश्वरी चलन है, किसी एक परिवार की आदत नहीं।

अग्रवाल परिवार इस पड़ाव को ब्याह हाथ कहते हैं, यानी घर का शादी को अपने हाथ में लेना। उनके यहाँ यह गणेश पूजा से शुरू होता है और मूंग की कोई रस्म नहीं होती। हमारे यहाँ घर के शादी में उतरने का अपना एक दिन है और अपनी एक रस्म।

इसमें आपकी भूमिका

- **दुल्हन और दूल्हा:** पूरब की ओर मुँह करके बैठिए और गीत पूरे होने तक रुकिए। यह पहली रस्म है जिसमें आप बंदा या बंदी हैं, और औरतें आपके लिए गा रही हैं।
- **भाई-बहन:** सवा किलो मूंग पहले से तौलकर रखिए, और बाद में स्वस्तिक वाली सातों थालियाँ सँभालकर एक साथ रखिए। इनमें से कुछ फिर काम आएँगी।
- **सब लोग:** देवी-देवताओं के पाँचों गीत क्रम से सीखिए (अध्याय 5); अब से हर बैठक इन्हीं से शुरू होगी।

बड़ों से पूछिए

1. आपकी शादी से कितने दिन पहले विवाह हाथ हुआ था, और मूंग किसने बीने थे?

2. बाद में उन मूंग का क्या किया गया, और क्या आपको कोई ऐसा गीत याद है जो सिर्फ़ इसी दिन गाया जाता था?

अध्याय 8

सावा पूजन, विनायक और लग्न

दुल्हन · दूल्हा · भाई-बहन



एक मिनट में

दोनों घरों में गणेश जी का आह्वान होता है, और परिवार के किसी छोटे लड़के को विनायक बनाया जाता है, जिसे गणेश जी का ही रूप माना जाता है। अब से वह दुल्हन या दूल्हे के दाहिनी ओर बैठता है और हर रस्म पहले उसी की होती है। दुल्हन के घर पंडित जी गुलाबी काग़ज़ पर लग्न लिखते हैं; दूल्हे के घर बारात के पुरुषों के लिए हल्दी वाले चावल बाँधे जाते हैं। शादी के कार्ड वाला कलश उस जगह रखा जाता है जहाँ आगे चलकर मायां स्थापित होगी।

कब	पुराने हिसाब से शादी से 5 से 21 दिन पहले; आजकल अक्सर बान वाले दिन ही
कौन निभाता है	पंडित जी, घर के सबसे बड़े पुरुष के साथ; आरता बुआ या बहन करती है
कहाँ	दोनों घरों में, अलग-अलग
भाव	आशीर्वाद; रक्षा

क्या होता है

1. मुंबई के एक माहेश्वरी परिवार की लिखी हुई विवाह-पुस्तिका (reetrivaz.in) के अनुसार दो चौकियाँ रखी जाती हैं: दाहिनी ओर विनायक, बाईं ओर दुल्हन या दूल्हा। चौकी के नीचे मूंग और एक रुपया रखा जाता है।
2. पंडित जी घर के सबसे बड़े, दादा या बाबा, से गणेश पूजा करवाते हैं। आरता बुआ या कोई बहन करती है।
3. आम के पत्तों और नारियल वाला मिट्टी का कलश उस जगह रखा जाता है जहाँ बाद में मायां (घर में शादी का पूजा-स्थान, अध्याय 15) स्थापित होगी। शादी का कार्ड मौली से इस पर बाँधा जाता है।
4. दुल्हन की शादी में पंडित जी गुलाबी काग़ज़ पर लग्न, यानी शादी का समय, लिखते हैं, और इसे कलश के पास रखा जाता है। दूल्हे की शादी में इसकी जगह पीले चावल बनते हैं: घी और हल्दी में मले हुए चावल, जो सफ़ेद कपड़े में बाँधे जाते हैं।
5. औरतें देवी-देवताओं के पाँच गीत गाती हैं, फिर लड़के के लिए बन्ना, घोड़ी और सेवरा, या लड़की के लिए बन्नी और कामण।
6. मायरदार, यानी माँ के पीहर वालों, को शादी का बाक़ायदा न्योता दिया जाता है।

हम ऐसा क्यों करते हैं

लगभग हर हिंदू काम की शुरुआत विघ्नहर्ता गणेश जी से होती है, और ज़्यादातर परिवारों के लिए शादी सबसे बड़ा काम होता है। पुस्तिका भी अपने शब्दों में यही कहती है: हर शुभ काम भगवान की कृपा से होता है, और शुरुआत में गणेश जी और परिवार के अपने देवताओं की पूजा इसलिए की जाती है कि शादी बिना किसी रुकावट के आगे बढ़े। इतनी बात अग्रवाल शादी में भी है।

माहेश्वरी शादी इसमें जो जोड़ती है, वह है यह लड़का। मूर्ति अपने कोने में रहती है; लेकिन दुल्हन या दूल्हे के दाहिने बैठा बच्चा हर जगह उनके साथ जाता है। पुस्तिका के अनुसार उसे गणेश जी का रूप माना जाता है, और आगे की रस्में इस बात को सचमुच निभाती हैं। पीठी, झोळ और लख (अध्याय 14) में हल्दी, दही और लखधन पहले विनायक को जाते हैं, उसके बाद ही दुल्हन या दूल्हे को। इस तरह विघ्नहर्ता का यह रूप हर क़दम पर जोड़े से आगे चलता है, जब तक गणगौर पूजा (अध्याय 15) में उसे नए कपड़े देकर घर नहीं भेज दिया जाता।

पुस्तिका एक नियम भी बताती है: सगे भाई को कभी विनायक नहीं बनाया जाता; लड़का काका, बाबा, बुआ, बहन या मामा की तरफ़ से चुना जाता है। इसका कारण नहीं दिया गया। हाँ, इतना ध्यान देने लायक है कि सगे भाई की अपनी भूमिका आगे आती है, अग्नि के पास (अध्याय 23)।

दोनों घर लग्न को अलग-अलग ढंग से निभाते हैं। लग्न दुल्हन की तरफ़ से दूल्हे की तरफ़ जाता है, वरणा (अध्याय 18) के साथ, इसलिए यह दुल्हन के घर लिखा जाता है और उस कलश के पास रहता है जहाँ घर के देवता होंगे। कई अग्रवाल घरों की तरह पीला नहीं, गुलाबी क्यों, यह कहीं दर्ज नहीं है। दूल्हे की तरफ़ को मेहमान बुलाने होते हैं, इसलिए उसकी निशानी न्योता है: पहले पीले चावल हर उस पुरुष के पास जाते थे जिसे बारात में चलने को कहा जाता था। आज, पुस्तिका वाले परिवार में, ये घर के चार-पाँच पुरुषों को दिए जाते हैं।

जड़ें **शास्त्रीय या पौराणिक विधि और समाज की रीत**

संस्कार से पहले गणेश पूजा पंडित जी की पद्धति से आती है, गृह्यसूत्रों से नहीं। विनायक लड़का और पीले चावल राजस्थानी परिवारों की रीत हैं, और मुहूर्त ज्योतिष पर टिका है।

कुछ परिवारों में

सावा पूजन नाम परिवार की पुस्तिका का दिया हुआ है। माहेश्वरी समाज लुधियाना की रस्मों की सूची इसे सीधे गणेश पूजा कहती है, इसे शादी से कम से कम 5 से 21 दिन पहले रखती है, और बताती है कि विनायक पूजा का सामान और शादी का कार्ड लेकर गणेश मंदिर जाता है। इसमें एक पंच पूजन भी दर्ज है, जिसमें विनायक बैठता है, और अनाज, हल्दी, मूंग और धनिया रखे जाते हैं।

माता पूजन सिर्फ़ लुधियाना की सूची में दर्ज है: शादी से पहले सोमवार, बुधवार, गुरुवार या शुक्रवार को शीतला माता की पूजा, और उस दिन माता-पिता और दुल्हन या दूल्हा सिर्फ़ ठंडा खाना खाते हैं।

अग्रवाल संस्करण में यह लड़का सिर्फ़ एक क्षेत्रीय रूप में आता है, जिसे बिंदायक कहा गया है। दोनों माहेश्वरी स्रोतों में वह हमेशा होता है। अग्रवाल परिवारों में लग्न पढ़ने के लिए एक अलग मुलाक़ात भी होती है, जिसका ज़िक्र किसी भी माहेश्वरी स्रोत में नहीं है।

इसमें आपकी भूमिका

- **दुल्हन और दूल्हा:** आपका विनायक कई दिन तक आपके दाहिने बैठेगा। उसे खिलाते-पिलाते रहिए और उसका मन लगाए रखिए; वह भी काम पर है।
- **भाई-बहन:** विनायक की देखभाल का ज़िम्मा ख़ुद आगे बढ़कर लीजिए। गणगौर तक हर रस्म के लिए उसे तैयार और जागा हुआ रहना है, जो एक छोटे बच्चे के लिए भी भारी है और उसे सँभालने वाले के लिए भी।

- **भाई-बहन:** दूल्हे की शादी में पता कीजिए कि घर के किन पुरुषों को पीले चावल जाने हैं, और देखिए कि हर एक तक पहुँचें।
- **सब लोग:** लग्न का गुलाबी काग़ज़ कलश के पास रखिए, किसी दराज़ में नहीं।

बड़ों से पूछिए

1. आपकी शादी में विनायक कौन बना था, और क्या "सगा भाई कभी नहीं" हमारे परिवार का भी नियम है?

2. क्या हमारा लग्न गुलाबी काग़ज़ पर लिखा गया था, और परिवार में पीले चावल किसे मिले थे?

अध्याय 9

बान और तणी: घर में रहना और डोरी बाँधना

दुल्हन · दूल्हा · भाई-बहन



एक मिनट में

"बान बिठाना" का मतलब है दुल्हन या दूल्हे को उबटन लगाना और उन्हें घर के अंदर ही रखना। पहले बान कई दिन चलता था; आजकल यह अक्सर सावा पूजन के दिन ही हो जाता है। दुल्हन या दूल्हे के सामने नमक, कोयला, दूब, चाँदी की अंगूठी और पानी रखा जाता है, वे अपने हाथों से मूंग की सात बड़ियाँ बनाते हैं, और घर की बड़ी औरतें घी के साथ पतासा खिलाती हैं। माता-पिता तणी बाँधते हैं, यानी मंडप के आर-पार बँधी शुभ डोरी।

कब	शादी से कुछ दिन पहले; अब अक्सर सावा पूजन के साथ
कौन निभाता है	पंडित जी और माता-पिता; घर की बड़ी औरतें
कहाँ	दोनों घरों में, अलग-अलग
भाव	रक्षा

क्या होता है

1. सावा पूजन की तरह, दुल्हन या दूल्हा एक चौकी पर बैठते हैं और विनायक दूसरी पर। आगे का क्रम मुंबई के एक माहेश्वरी परिवार की लिखी हुई विवाह-पुस्तिका (reetrivaz.in) के अनुसार है।
2. माता-पिता पंडित जी के सामने बैठकर तणी बाँधते हैं, यानी मंडप के आर-पार तनी शुभ डोरी।
3. सामने सफ़ेद कपड़े पर कोयले का टुकड़ा, नमक की डली, दूब, चाँदी की अंगूठी और पानी का लोटा रखा जाता है।
4. दुल्हन या दूल्हा अपने हाथों से पिसे हुए मूंग की सात बड़ियाँ बनाते हैं। बाकी बड़ियाँ परिवार की कुँवारी लड़कियाँ बनाती हैं।
5. दादी, बड़ी माँ, माँ और काकी, सब बारी-बारी से घी के साथ पतासा खिलाती हैं। जो चाहे तिलक करके पैसे देता है; इसे "बान भरना" कहते हैं।
6. दुल्हन या दूल्हे से कहा जाता है कि अब से शादी तक हर समय चाँदी की चिटिया और पान-सुपारी की डिबिया अपने पास रखें।
7. बान का जीमण: परिवार साथ बैठकर खाना खाता है, और औरतें जाते समय गुड़ की एक पुड़िया और मिश्री की एक पुड़िया लेकर जाती हैं।

हम ऐसा क्यों करते हैं

शादी से पहले किसी बड़े हो चुके इंसान को घर के अंदर रखना किसी और ज़माने का नियम लगता है, और असल में यह है भी। पुस्तिका बान का कोई मतलब नहीं बताती, बस इसे शगुन कहती है। राजस्थानी शब्दकोश की परिभाषा इसकी सबसे सीधी व्याख्या है: दुल्हन या दूल्हे को उबटन, और घर से बाहर नहीं जाना।

इस नज़र से देखें तो बान दो काम करता है। यह शादी से पहले के आख़िरी दिनों में बच्चे को रोज़ की ज़िंदगी से अलग कर देता है, ताकि हल्दी और गीतों का असर ऐसे इंसान पर हो जो घर पर है, आराम से है और अपनों के बीच है। और यह उसकी रक्षा करता है। नमक, कोयला और धातु वे चीज़ें हैं जो राजस्थानी घर बहुत पहले से नज़र और अनहोनी से बचने के लिए रखते आए हैं, और चाँदी की जो चिटिया अब वह हर जगह साथ रखता है, वह भी इसी सामान का हिस्सा है। घरवालों की नज़र में इन चीज़ों का यही मतलब है; ये सचमुच असर करती हैं या नहीं, यह सवाल रस्म पूछती ही नहीं।

सात बड़ियाँ दुल्हन या दूल्हे का अपना योगदान हैं। हफ़्तों तक दूसरे उनके लिए काम करते रहे; अब वे ख़ुद मूंग में हाथ डालते हैं, और परिवार की लड़कियाँ बाकी बड़ियाँ पूरी करती हैं। घर की चार औरतों का

बारी-बारी से घी के साथ पतासा खिलाना, बड़ी औरतों का आशीर्वाद है, अपने सबसे सीधे रूप में। पान-सुपारी की डिबिया साथ रखने का कारण कहीं दर्ज नहीं है।

जो बात बान इंसान के बारे में कहता है, वही बात तणी जगह के बारे में कहती है। जब तक डोरी नहीं बँधती, जहाँ फेरे होने हैं वह बस एक आँगन या हॉल है। माता-पिता के बाँधते ही वह मंडप बन जाता है। दुल्हन के घर, उसके माता-पिता की बाँधी डोरी फेरों के बाद दूल्हा खोलता है (अध्याय 26), यानी जो आदमी उनकी बेटी से शादी करने आया, वही उस जगह को समेटता है जिसे उन्होंने खोला था।

जड़ें **समाज की रीत और रक्षा या लोक-विश्वास**

बान और तणी राजस्थानी घरों की पुरानी परंपराएँ हैं; ये क्षेत्रीय शब्दकोश में भी हैं और दोनों माहेश्वरी स्रोतों में भी। घर में रहना, नमक और कोयला, और चिटिया, ये सब रक्षा वाले विश्वास से जुड़े हैं।

कुछ परिवारों में

माहेश्वरी समाज लुधियाना की रस्मों की सूची तणी के बारे में ज़्यादा विस्तार से बताती है: विवाह-वेदी पर पूजा के धागे बाँधे जाते हैं, एक चंदवे के ऊपर राखी बाँधी जाती है, और वहाँ एक साड़ी रखी जाती है। इसी चंदवे के नीचे दुल्हन या दूल्हे को सात बार तेल चढ़ाया जाता है और माता-पिता उन्हें दही से नहलाते हैं, इसलिए लुधियाना के क्रम में अध्याय 14 का दही-स्नान तुरंत बाद आता है। सूची में इस दिन के पकवान थूली और ग्वार का रायता बताए गए हैं।

परिवार की पुस्तिका कहती है कि जब शादी किसी हॉल में हो, तो बाद में कोई ज़िम्मेदार व्यक्ति तणी घर ले आए और उसे परिवार की ठाकुर बाड़ी में बाँध दे। यह एक परिवार का निर्देश है, और समझदारी भरा भी, ख़ासकर वहाँ जहाँ रस्मों का सामान सजावट के साथ ही पीछे छूट जाता है।

पुराने चलन में बान शादी से कई दिन पहले शुरू हो जाता था और दुल्हन या दूल्हा पूरे समय घर में ही रहते थे, और हर शाम एक जुलूस निकलता था (अध्याय 13)। पुस्तिका बताती है कि अब बान सावा पूजन के साथ होता है; उसके बाद घर में रहने का नियम कितनी सख़्ती से माना जाए, यह हर परिवार ख़ुद तय करे।

इसमें आपकी भूमिका

- **दुल्हन और दूल्हा:** मूंग की सात बड़ियाँ ख़ुद बनाइए, चाहे टेढ़ी-मेढ़ी ही बनें। यह काम कोई और आपके लिए नहीं कर सकता।

- **दुल्हन और दूल्हा:** इस दिन से चिटिया अपने पास रखिए। अगर परिवार का नियम है कि आप घर में रहेंगे, तो दफ़्तर में यह बात पहले से बता दीजिए, ऐन मौके पर नहीं।
- **बहनें और चचेरी-ममेरी बहनें:** अगर आप कुँवारी हैं, तो बाकी बड़ियाँ आप बनाएँगी। किसी चाची या मौसी से पूछ लीजिए कि कितनी बड़ी बनानी हैं।
- **भाई-बहन:** लिख लीजिए कि किस-किस ने बान भरा, और एक व्यक्ति तय कर दीजिए जो शादी की जगह से तणी घर लाएगा।

बड़ों से पूछिए

1. आपको कितने दिन बान में रखा गया था, और किन बातों की मनाही थी?

2. आपकी शादी के बाद हमारे परिवार की तणी कहाँ गई, और आपने चिटिया के रूप में क्या साथ रखा था?

अध्याय 10

शादी की रसोई: धान रोळना, चाक पूजन और मूंगधणा

भाई-बहन



एक मिनट में

तीन पुरानी रस्मों से शादी की रसोई खुलती है। धान रोळना में माँ और छह बहुएँ, चंदवे की तरह ऊपर ताने गए ओढ़ने के नीचे, अनाज का छाजला सात बार आगे-पीछे देती हैं। चाक पूजन में पहले माँ कुम्हार के चाक की पूजा करती थीं और ग्यारह मटके घर लाती थीं। मूंगधणा में हरी नीम की डाली के साथ लकड़ियों के गट्ठर की दरवाज़े पर पूजा होती है। खाना बनना शुरू होने से पहले अनाज, बर्तन और ईंधन, तीनों को आशीर्वाद मिल जाता है।

कब	शादी से पहले के दिनों में, बान के आसपास
कौन निभाता है	दुल्हन या दूल्हे की माँ और घर की बहुएँ
कहाँ	दोनों घरों में, अलग-अलग (पहले कुम्हार के घर भी)
भाव	आशीर्वाद
इस मौके का गीत	"धान रोळ, धान रोळ जी कुलबहुवां", जो अनाज आगे-पीछे देते समय गाया जाता है

क्या होता है

1. धान रोळना, मुंबई के एक माहेश्वरी परिवार की लिखी हुई विवाह-पुस्तिका (reetrivaz.in) के अनुसार: चार औरतें एक ओढ़ने के चारों कोने पकड़कर उसे चंदवे की तरह तानती हैं।
2. उसके नीचे माँ, और फिर बारी-बारी से परिवार की छह बहुएँ, एक छाजला सात बार आगे-पीछे देती हैं। उसमें बेलन, हल्दी की गाँठें, नकद पैसे, जौ, चावल, मूंग और नमक की डलियाँ होती हैं। आख़िर में अनाज माँ के छाजले में ही रहना चाहिए।
3. यही औरतें ओखली में मूसल से जौ और चने कूटती हैं, चक्की को हाथ लगाती हैं (आजकल अक्सर मिक्सी को), और शगुन की मेहंदी पीसती हैं।
4. चाक पूजन: पुराने दिनों में माँ कुम्हार के घर जाकर उसके चाक की पूजा करती थीं, और ग्यारह मटके घर आते थे: थांब, बिहाणा, दही और मायां पूजन के लिए एक-एक कलश, और एक के ऊपर एक रखी सात "बेह की हांडी"। आज, पुस्तिका कहती है, मटके बाज़ार से ख़रीदे जाते हैं।
5. मूंगधणा: हरी नीम की डाली के साथ लकड़ियों का एक छोटा गट्ठर दरवाज़े पर घर के किसी सहायक या नाई के सिर पर रखा जाता है। माँ उसकी पूजा करती हैं और नेग देती हैं, और शादी पूरी होने तक वह गट्ठर घर के एक कोने में रखा रहता है।

हम ऐसा क्यों करते हैं

अनाज आगे-पीछे देने का क्या मतलब है, यह किसी भी माहेश्वरी स्रोत में नहीं लिखा, और यह किताब अपनी ओर से कोई मतलब नहीं गढ़ेगी। हाँ, रस्म में जो दिखता है, वह बताया जा सकता है।

घर की सात औरतें एक ही कपड़े के नीचे रसोई के औज़ारों के साथ बैठती हैं: छाजला, बेलन, अनाज, नमक और हल्दी। वे यह सब सात बार एक-दूसरे को देती हैं। फिर अनाज कूटती हैं, चक्की को हाथ लगाती हैं और मेहंदी बनाती हैं। इसका और जो भी मतलब हो, धान रोळना में परिवार की औरतें किसी हलवाई के आने से पहले मिलकर शादी की रसोई खोलती हैं। और बीच में छाजला किसी के भी हाथ में जाए, अनाज को आख़िर में माँ के पास ही पहुँचना है।

चाक पूजन को समझाना आसान है। जब हर चीज़ की दुकान नहीं थी, तब पानी भरकर रखना, दीये जलाना, दही जमाना और कलश रखना, सब कुम्हार के चाक से निकले बर्तनों से होता था। इसलिए परिवार उसके पास जाता था, उसके हुनर के औज़ार का मान करता था और उसे अच्छा मेहनताना देता था, बिल्कुल वैसे ही जैसे कारीगर विश्वकर्मा पूजा पर अपनी मशीनों की पूजा करते हैं। पानी से भरा मिट्टी का कलश भी भरे-पूरेपन की सबसे पुरानी हिंदू निशानियों में से एक है।

ख़रीदे हुए हों तब भी ये ग्यारह मटके मायने रखते हैं, क्योंकि हर एक का अपना काम है। कलश और बेह के सात मटकों की पूजा स्तम्भ रोपण (अध्याय 16) में होती है। पेहरावनी में दूल्हा बेह के मटकों का नेग करता है और वे उसके घर जाते हैं (अध्याय 26)। सबसे नीचे वाला मटका मिठाई से भरकर लौटता है, जब मांडा झांकना में दुल्हन का भाई जोड़े को लेने आता है (अध्याय 31)।

मूंगधणा ईंधन की बात है। शादी की दावतें कई दिन तक लकड़ी पर पकती थीं, और लुधियाना की सूची याद दिलाती है कि कभी लकड़ी जंगल से गाड़ी में आती थी, इसलिए गाड़ी की पूजा होती थी। अब एक गट्ठर और नीम की एक डाली पूरे बोझ की जगह रखे जाते हैं। हरी नीम फिर तोरण पर दिखती है (अध्याय 19)।

जड़ें **समाज की रीत**

तीनों राजस्थानी घरों की रीतें हैं। क्षेत्रीय शब्दकोश में मूंगधणा का मतलब रसोई के लिए सूखी लकड़ियों की पूजा दिया गया है; तीनों में से कोई भी पुरोहितों के ग्रंथों में नहीं है।

कुछ परिवारों में

माहेश्वरी समाज लुधियाना की रस्मों की सूची अनाज वाली रस्म को "धान हाथ" कहती है: चंदवे के नीचे चार से आठ औरतें, साथ में चावल, मूंग, हल्दी, चाँदी का घुंघरू, पैसे, सात फल, दो सूप और दो बेलन। मटकों वाली रस्म को यह "चाक भात" कहती है, जिसमें औरतें गीत गाते हुए मटके घर लाती हैं, और बिना कोई कारण बताए यह भी जोड़ती है कि उस दिन दुल्हन के घर दाल नहीं बनती और दूल्हे के घर पापड़ नहीं तले जाते।

अग्रवाल संस्करण पढ़ने वाले एक सुधार पर ध्यान दें। उस किताब में चाक पूजन को मुख्य रूप से हरियाणा और दिल्ली का रिवाज बताया गया है, जो राजस्थान से आए परिवारों में कम होता है। माहेश्वरियों पर यह बात लागू नहीं होती: दोनों स्रोत चाक पूजन को समाज का पुराना चलन बताते हैं, जो अब छोटा हो गया है।

जहाँ घर में छह बहुएँ न हों, वहाँ पुस्तिका मामी या मौसी को बैठने की छूट देती है।

इसमें आपकी भूमिका

- **भाई-बहन और चचेरे-ममेरे भाई-बहन:** ओढ़ने का एक कोना पकड़ने के लिए आगे आइए, और पूरी रस्म के दौरान उसे स्थिर रखिए।

- **भाई-बहन:** ग्यारह मटकों की ज़िम्मेदारी लीजिए। बेह के सातों मटकों पर पहचान का निशान लगाइए और उन्हें एक के ऊपर एक साथ रखिए; ये आगे पूरी शादी में काम आते हैं।
- **भाई-बहन:** शहर में हों तो एक हफ़्ता पहले बड़ों से पूछ लीजिए कि लकड़ी और नीम की जगह क्या रखा जाएगा।
- **सब लोग:** "धान रोळ" गीत रिकॉर्ड कर लीजिए, गाने वाली की इजाज़त लेकर। राजस्थानी गीतों के जो आम संग्रह इस किताब को मिले, उनमें यह गीत नहीं है।

बड़ों से पूछिए

1. क्या आपकी शादी में हमारे घर की औरतों ने ओढ़ने के नीचे अनाज आगे-पीछे दिया था, और कौन-कौन बैठा था?

2. क्या कोई कुम्हार के पास गया था, और बेह के सात मटके आख़िर कहाँ पहुँचे?

अध्याय 11

मायरा और बीर भोजन: मामा का आना

दुल्हन · दूल्हा · भाई-बहन



एक मिनट में

बत्तीसी (अध्याय 6) में न्योता पाकर माँ के भाई अपनी पत्नियों और पूरे पीहर परिवार, यानी मायरदार, के साथ आते हैं। उनकी बहन दरवाज़े पर उनका स्वागत करती है, हर भाई को नेतरे से नापती है और शरबत पिलाती है; सब भाई मिलकर उसे चुनरी ओढ़ाते हैं। वे उसके बच्चे के शादी के कपड़े लाते हैं, और दुल्हन के लिए हाथीदाँत का चूड़ा। बाद में बीर भोजन में बहन अपने हाथों से भाइयों को खाना खिलाती है।

कब	शादी वाला हफ़्ता, बत्तीसी के बाद
कौन निभाता है	दुल्हन या दूल्हे की माँ और उनके भाई
कहाँ	हर घर में अलग-अलग
भाव	दो परिवारों का बंधन
इस मौके का गीत	मायरे के गीत, जैसे "भात भरण की बेला आई" और "बीरो बिणजारो", जिनमें भाई सामान से लदे व्यापारी की तरह आता है

क्या होता है

1. मुंबई के एक माहेश्वरी परिवार की लिखी हुई विवाह-पुस्तिका (reetrivaz.in) में दिए क्रम के अनुसार: बहन अपनी औरतों के साथ गाती हुई दरवाज़े तक जाती है। भाई शगुन के तौर पर दरवाज़े पर एक साड़ी बिछाते हैं।
2. अंदर एक भाई और उसकी पत्नी चौकी पर खड़े होते हैं। बहन चाँदी के रुपये से तिलक करती है, भाई को माला पहनाती है, भाभी को गजरा और उपहार देती है, और लाल कपड़े से ढके चाँदी के गिलास में शरबत पिलाती है।
3. वह नेतरा लेती है, यानी मथानी की रस्सी, चाँदी की चेन, मोतियों और मौली से बनी डोरी, उससे भाई को चार बार तिरछा नापती है, और उसे गले लगाती है।
4. सब भाई मिलकर उसे चुनरी ओढ़ाते हैं। अगर परिवार में पितर हैं, तो उनके कपड़े पहले किसी ब्राह्मण या ब्राह्मणी को दिए जाते हैं। फिर आरता, लिफ़ाफ़े, और उवारी, यानी सिर पर से पैसे वारना, दोनों ओर से होते हैं।
5. भाई घर की दूसरी बहनों और बेटियों को लिफ़ाफ़े देते हैं, और जंवाइयों और भानजों को तिलक करके लिफ़ाफ़े देते हैं।
6. दुल्हन या दूल्हे को बिठाकर मायरे में आए कपड़े और गहने दिए जाते हैं। आख़िर में भाई अपनी बहन और बहनोई को बिठाकर उनके कपड़े-गहने देते हैं।
7. बीर भोजन: बहन अपने भाइयों को खाने पर बुलाती है और ख़ुद परोसती है।

हम ऐसा क्यों करते हैं

बाहर से देखें तो मायरा एक महँगा दिखावा लग सकता है, जिसका बोझ मामा के परिवार पर पड़ता है। यह ऐसा बन भी सकता है। इसका असली मतलब इस बात में है कि शादी के बाद किसी औरत की जगह उसके माता-पिता के घर में क्या रह जाती है।

पुराने परिवारों में बेटी अपने माता-पिता का घर छोड़कर पति के घर जाती थी। वह आ-जा सकती थी, लेकिन उसकी गिनती अलग तरह से होती थी। मायरा वह मौका है, जब उसके अपने बच्चे की शादी में उसका पूरा पीहर ससुराल वालों की आँखों के सामने आता है और कहता है कि वह अब भी हमारी है। जिस औरत के भाई प्यार से उसका मायरा भरते हैं, सबको दिखता है कि वह अकेली नहीं है। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि भाई के उपहार बहन के उस हिस्से की जगह थे जो जायदाद बेटों को जाने से उसे नहीं मिलता था; लेकिन यह बाद में लगाया गया अंदाज़ा है, कहीं दर्ज बात नहीं।

माहेश्वरी रूप इस बात को और साफ़ कर देता है, और ऐसे कि आँखों से दिखे। दुल्हन की शादी की पोशाक उसके मामा के घर से आती है, यहाँ तक कि कोरा भाता भी, यानी वह सादा सफ़ेद कपड़ा जो नीचे पहना जाता है और बाद में रंगा जाता है। उसका हाथीदाँत का चूड़ा भी वहीं से आता है (अध्याय 33 में इसकी बात है)। लुधियाना की सूची कहती है कि दूल्हा पूरी शादी में मामा के दिए कपड़े पहनता है, और दुल्हन बारात आने से पहले नहाकर मामा के दिए कपड़े पहनती है। शादी के बीचोंबीच खड़े दूल्हा या दुल्हन सचमुच माँ के पीहर के पहनाए कपड़ों में होते हैं।

घर के देवता और पितर के लिए आए कपड़े दिखाते हैं कि मायरा घर के देवताओं और पुरखों के लिए चढ़ावा भी है। और यह एकतरफ़ा नहीं है। बीर भोजन में वही बहन, जिसने सब कुछ पाया, अपने हाथों से भाइयों को परोसती है।

नेतरे के बारे में कोई स्रोत कुछ नहीं समझाता। यह बार-बार आता है: दूल्हे के घोड़ी पर निकलने से पहले उसकी माँ उसे इसी तरह नापती है (अध्याय 17), और दुल्हन की माँ अपने दरवाज़े पर (अध्याय 19)। हर बार नापने का काम परिवार की कोई औरत करती है। इससे आगे की बात अपने बड़ों से पूछिए।

अग्रवाल संस्करण जानने वालों के लिए

ढाँचा वही है: भाई बहन के लिए, उसके ससुराल में। फ़र्क ये हैं: पीला या पोमचा नहीं होता, ओढ़नी चुनरी होती है; हाथीदाँत का चूड़ा और जोड़े के शादी के कपड़े मायरे में आते हैं; नेतरे से नापने और बीर भोजन जैसा कुछ अग्रवाल शादी में नहीं है; और न्योता एक अलग दिन, बत्तीसी, पर दिया जाता है।

जड़ें **समाज की रीत**

मायरा राजस्थानी परिवारों के चलन और औरतों के गीतों का हिस्सा है। यह पुरोहितों के ग्रंथों में नहीं है।

कुछ परिवारों में

माहेश्वरी समाज लुधियाना की रस्मों की सूची के अनुसार बहनें अपने सभी भाइयों और भाभियों को शरबत पिलाती हैं, भाभी को साड़ी और ब्लाउज़ देती हैं, और पुरुषों को नारियल देकर तिलक करती हैं। इसमें "कालश बांधना" भी जुड़ा है, जिसमें भाई अपनी बहनों से पैसों से भरा एक कलश लेते हैं।

बहुत से राजस्थानी परिवार "नानीबाई रो मायरो" गाते हैं। यह संत नरसी मेहता की कथा है (आम तौर पर इन्हें पंद्रहवीं सदी का माना जाता है, हालाँकि इनके समय पर मतभेद है), जो इतने ग़रीब थे कि अपनी बेटी का मायरा नहीं भर पा रहे थे, तब कृष्ण ने आकर उनकी ओर से मायरा भरा। किसी भी माहेश्वरी स्रोत में इसका ज़िक्र नहीं है। पूछिए कि आपके परिवार में यह गाया जाता है या नहीं।

इसमें आपकी भूमिका

- **दुल्हन:** अगर आपकी पोशाक और चूड़ा मामा के घर से आ रहे हैं, तो शादी से पहले मामा और मामी का नाम लेकर उन्हें धन्यवाद दीजिए।
- **दूल्हा:** अगर आपका साफ़ा और शेरवानी मामा के यहाँ से आ रहे हैं, तो नाप देने और पहनकर देखने का काम जल्दी करवा लीजिए।
- **भाई-बहन:** भाइयों के दरवाज़े पर पहुँचने से पहले चाँदी का गिलास, लाल कपड़ा और नेतरा तैयार रखने में माँ की मदद कीजिए।
- **मामा के बच्चे:** कोई थाली उठाइए। आप देख रहे हैं कि एक भाई अपनी बहन के लिए क्या करता है।

बड़ों से पूछिए

1. क्या आपकी शादी के कपड़े और चूड़ा आपके मायरे में आए थे, और नेतरे से किसने किसे नापा था?

2. क्या हमारे परिवार में नानीबाई रो मायरो गाया जाता है, और क्या आपकी शादी में बीर भोजन हुआ था?

आम सवाल

विनायक कौन बन सकता है?

परिवार का कोई छोटा लड़का, जिसे इन दिनों के लिए गणेश जी का ही रूप माना जाता है। मुंबई के एक माहेश्वरी परिवार की लिखी हुई विवाह-पुस्तिका (reetrivaz.in) में यह भी लिखा है कि सगे भाई को कभी नहीं चुना जाता; लड़का काका, बाबा, बुआ, बहन या मामा की तरफ़ से होता है। यह एक परिवार का नियम है, इसलिए अपने परिवार का नियम पता कर लीजिए। ऐसा लड़का चुनिए जो लंबी रस्मों में बैठ सके, और गणगौर पूजा में उसकी विदाई तक उसे सँभालने के लिए किसी बड़े को साथ लगा दीजिए।

मेरी माँ का कोई भाई नहीं है। मायरा कौन भरेगा?

मायरा मायरदार की ओर से आता है, यानी माँ के पूरे पीहर की ओर से, किसी एक आदमी की ओर से नहीं। बहुत से परिवार किसी चचेरे-ममेरे भाई, किसी चाचा-ताऊ, या माँ के पिता की ओर देखते हैं। राजस्थानी परिवार ठीक इसी चिंता के लिए बहुत पहले से नानीबाई के मायरे की कथा सुनाते आए हैं, जिसे कृष्ण ने तब भरा था जब उसके पिता नहीं भर पाए: ज़रूरी यह है कि माँ के पीहर की ओर से कोई आगे आए।

हम फ्लैट में रहते हैं और दोनों नौकरी करते हैं। क्या बान में घर के अंदर रहने का नियम मानना ज़रूरी है?

परिवार की पुस्तिका में ख़ुद लिखा है कि बान, जो कभी कई दिन चलता था, अब सावा पूजन के दिन होता है। सारी चीज़ें, मूंग की सात बड़ियाँ, घी के साथ पतासा, और उस दिन से साथ रखी जाने वाली चिटिया, ये सब शहर के फ्लैट में भी निभ सकती हैं। उसके बाद आप कितनी सख़्ती से घर में रहें, यह बड़ों से पूछने की बात है, और यह छुट्टी लेने से पहले तय हो जाए तो बेहतर, बाद में नहीं।

अगर हाल ही में किसी की मृत्यु हुई हो, तो क्या नान्दीमुख हो सकता है?

दोनों माहेश्वरी स्रोत नान्दीमुख को वह रस्म बताते हैं जिसके बाद कोई जन्म या मृत्यु होने पर शादी नहीं रुकती। लेकिन अगर मृत्यु उससे पहले हो जाए तो क्या करें, यह दोनों में से कोई नहीं बताता। यह फ़ैसला आपके पंडित जी और बड़े-बुज़ुर्ग मिलकर करें।

क्या अब भी कुम्हार की ज़रूरत है?

ख़ुद उसके पास जाने की नहीं। पुस्तिका कहती है कि अब मटके बाज़ार से ख़रीदे जाते हैं। लेकिन मटके छोड़े नहीं गए: थांब, बिहाणा, दही और मायां के लिए एक-एक कलश, और बेह के सात मटके जो शादी में आख़िर तक साथ चलते हैं। ग्यारहों ख़रीदिए और उन्हें एक साथ रखिए।

हमारे घर में किसी को गीत नहीं आते। गाएगा कौन?

क्रम से शुरू कीजिए: पहले देवताओं के पाँच गीत (विनायक, बालाजी, श्यामजी, माताजी, पितरजी), फिर मौके के गीत। reetrivaz.in पर लगभग 200 गीतों का ऑडियो संग्रह है, जिसकी सूची बनी हुई है, और रूपायन संस्थान की राजस्थानी शादी के गीतों की गाँवों में जाकर की गई रिकॉर्डिंग इंटरनेट आर्काइव पर हैं। शुरुआत के लिए एक चाची या मौसी जिसे कुछ गीत आते हों, और चचेरे-ममेरे भाई-बहन जो एक-एक गीत सीखने को तैयार हों, इतना काफ़ी है।

भाग तीन

उत्सव



मेहंदी, शाम की बनोरी, हल्दी और दही, कांकण डोरा, गणगौर, और दुल्हन के द्वार पर ससुराल।

मेहंदी · बनोरी, सांझा और सांकड़ी · पीठी, झोळ और लख · कांकण डोरा, मायां और गणगौर · बरी, स्तम्भ रोपण और कन्यावल

अध्याय 12

मेहंदी

दुल्हन · दूल्हा



एक मिनट में

सावा या बान के बाद दुल्हन और दूल्हा, दोनों के हाथ-पैरों में मेहंदी लगती है, अपने-अपने घर में। कई माहेश्वरी परिवारों में दुल्हन की मेहंदी उसकी सास की ओर से आती है, जैसे उसके सिंजारे आए थे। एक बात ख़ास है: बाएँ हाथ पर स्वस्तिक बनाया जाता है, और दाहिनी हथेली के बीच में एक रुपये के सिक्के जितना गोल हिस्सा ख़ाली छोड़ा जाता है। वह जगह हथलेवे के लिए रखी जाती है।

कब	सावा पूजन या बान के बाद; माँ की मेहंदी सावे से पहले लगती है
कौन निभाता है	हर घर की औरतें; दुल्हन की मेहंदी लड़के वालों की ओर से आती है
कहाँ	दोनों घरों में, अलग-अलग
भाव	दो परिवारों का बंधन; आशीर्वाद

क्या होता है

1. सावा पूजन से पहले दुल्हन या दूल्हे की माँ अपनी मेहंदी लगवाती हैं: बाएँ हाथ पर स्वस्तिक और दाहिने पर कलश।
2. दुल्हन की मेहंदी उसकी ससुराल की ओर से आती है, ठीक वैसे ही जैसे तीज और गणगौर पर सिंजारे की मेहंदी आई थी (अध्याय 3)।
3. सावा या बान के बाद दुल्हन के दोनों हाथों और दोनों पैरों में उसके घर पर मेहंदी लगती है, और दूल्हे के उसके घर पर।
4. दोनों के बाएँ हाथ पर स्वस्तिक बनाया जाता है। दाहिनी हथेली के बीच में क़रीब एक रुपये के सिक्के जितना गोल हिस्सा ख़ाली छोड़ दिया जाता है।
5. जब तक मेहंदी सूखती और रंग पकड़ती है, औरतें गीत गाती हैं। जब तक मेहंदी उतर न जाए, दुल्हन या दूल्हे को दूसरे लोग अपने हाथ से खिलाते हैं।

हम ऐसा क्यों करते हैं

बात उस ख़ाली गोले से शुरू करनी चाहिए, क्योंकि इस अध्याय में यही एक चीज़ है जो किसी दूसरे समाज से आए मेहमान को देखने को नहीं मिलेगी। मुंबई के एक माहेश्वरी परिवार की लिखी हुई विवाह-पुस्तिका (reetrivaz.in) इसे सीधे शब्दों में समझाती है। मंडप में हथलेवे के समय (अध्याय 22), जब दुल्हन और दूल्हे के दाहिने हाथ मिलाए जाते हैं, तब दोनों हथेलियों के बीच मेहंदी का एक गोला रखा जाता है, और उस मेहंदी के रंग को बहुत अहम माना जाता है। इसलिए दाहिनी हथेली उसके लिए साफ़ रखी जाती है।

यानी पूरे हफ़्ते की सबसे भरी-पूरी और बारीक मेहंदी भी एक जगह ख़ाली छोड़ती है, और वह ख़ाली जगह शादी की सबसे छोटी मेहंदी के लिए है, वह मेहंदी जो दूल्हा-दुल्हन आपस में बाँटते हैं।

सजावट की भी अपनी जगह है। मेहंदी सुहागन के सोलह श्रृंगार में गिनी जाती है।

मेहंदी कौन भेजता है, यही बात सजावट को दो घरों के बीच के रिश्ते में बदल देती है। जब दुल्हन की मेहंदी लड़के वाले भेजते हैं, तो उसके हाथों का रंग उन्हीं की ओर से आया होता है। सिंदूर से पहले ही वह उस घर की कोई चीज़ पहन लेती है जहाँ उसे जाना है।

जो पाठक अग्रवाल शादी से वाकिफ़ हैं, वे एक फ़र्क ध्यान में रखें। वहाँ दूल्हे के आम तौर पर बस नाम के लिए एक बिंदी लगती है। परिवार की पुस्तिका में दुल्हन की तरह दूल्हे के भी हाथ-पैरों में पूरी मेहंदी लगती है, वही स्वस्तिक और वही ख़ाली गोला, क्योंकि उसकी दाहिनी हथेली भी तो दुल्हन की हथेली से मिलेगी।

यह कहावत कि मेहंदी का रंग गहरा चढ़े तो पति बहुत प्यार करेगा, या सास बहुत प्यार करेगी, बस हँसी-मज़ाक की बात है, कोई भविष्यवाणी नहीं। यह बात कि मेहंदी भागदौड़ वाले दिन से पहले शरीर को ठंडक देती है, आजकल अक्सर कही जाती है, लेकिन परिवार इस वजह से मेहंदी नहीं लगाते। मारवाड़ी शादी में मेहंदी कब से आई, यह कहीं दर्ज नहीं है।

जड़ें **समाज की रीत**

गृह्यसूत्रों में मेहंदी का कोई ज़िक्र नहीं है। यह शादी में औरतों के हिस्से की रीत है, जो यहाँ हथलेवे के लिए छोड़े गए गोले के ज़रिए मंडप की एक विधि से जुड़ जाती है।

कुछ परिवारों में

माहेश्वरी शादी में मेहंदी शुरू से आख़िर तक चलती है। परिवार की पुस्तिका के अनुसार धान रोळना पर औरतें शगुन की मेहंदी पीसती हैं (अध्याय 10), सुबह-सुबह बिहाणा पर उसे अपने नाख़ूनों पर लगाती हैं (अध्याय 13), और दुल्हन या दूल्हा मायां के पास मेहंदी से अपने बाएँ हाथ की छाप लगाता है (अध्याय 15)। दूल्हे की माँ घोड़ी के खुरों पर मेहंदी लगाती हैं (अध्याय 17), और दुल्हन की बुआ और फूफा हथलेवे की मेहंदी सिल पर पीसते हैं (अध्याय 22)।

आजकल यह अक्सर एक शाम का कार्यक्रम होता है, जिसमें मेहंदी लगाने वाली कलाकार बुलाई जाती है, और कुछ घरों में दूल्हे की मेहंदी घटकर बस एक निशान रह गई है। राजस्थान को अपनी मेहंदी पर नाज़ है: पाली ज़िले के सोजत की मेहंदी को 2021 में भौगोलिक संकेत यानी जीआई टैग मिला, और कुछ परिवार आज भी नाम लेकर वही मेहंदी मँगवाते हैं।

इसमें आपकी भूमिका

- **दुल्हन:** मेहंदी लगाने वाली के शुरू करने से पहले ही उसे दाहिनी हथेली के ख़ाली गोले के बारे में बता दीजिए। पूरी मेहंदी रच जाए तो उसे मिटाना मुश्किल है।
- **दूल्हा:** अगर आपका परिवार पुस्तिका वाली रीत मानता है, तो हाथ-पैरों में पूरी मेहंदी लगवाइए, स्वस्तिक और गोले समेत। आपकी दाहिनी हथेली को हथलेवे में हाज़िर होना है।

बड़ों से पूछिए

1. हमारे परिवार में क्या दुल्हन की मेहंदी लड़के वालों की ओर से आती है, और क्या हम दाहिनी हथेली पर ख़ाली गोला छोड़ते हैं?

2. आपकी शादी में दूल्हे के हाथ-पैरों में पूरी मेहंदी लगी थी, या बस एक निशान?

अध्याय 13

बनोरी, सांझा और सांकड़ी: शामें और शादी से पहले की रात

दुल्हन · दूल्हा · भाई-बहन



एक मिनट में

बान बैठ जाने के बाद शामें दुल्हन या दूल्हे की होती हैं। पुराने समय में हर शाम बनोरी निकलती थी, और आख़िरी रात बहुत धूमधाम वाली। बान वाली शाम को एक ब्राह्मण द्वार पर पहला आशीर्वाद देता है और औरतें सांझा, यानी शाम के गीत, गाती हैं। सांकड़ी शादी से पहले की रात है, जो जागकर, उत्सव मनाते हुए बिताई जाती है। भोर में बिहाणा के गीत देवी-देवताओं को बुलाकर शादी के दिन की शुरुआत करते हैं।

कब	बान के बाद की शामें; शादी से पहले की रात; शादी के दिन की भोर
कौन निभाता है	परिवार; ब्राह्मण बनोरी में एक ब्राह्मण; घर की औरतें
कहाँ	दोनों घरों में, अलग-अलग, और एक बार शहर की गलियों में
भाव	आशीर्वाद; रक्षा

क्या होता है

1. **ब्राह्मण बनोरी,** उसी शाम जिस दिन बान बैठता है (अध्याय 9)। पहले दुल्हन या दूल्हे को किसी जाने-पहचाने ब्राह्मण परिवार के घर ले जाया जाता था। अब वे द्वार के बाहर कुर्सी पर बैठते हैं, और एक ब्राह्मण गुड़ से उनका मुँह मीठा करता है और उनकी खोळ में एक नारियल और ग्यारह रुपये भरता है।
2. चार औरतें एक ओढ़ने को चारों कोनों से पकड़कर चंदवा, यानी छतरी, बनाती हैं, और गीत गाते हुए दुल्हन या दूल्हे को उसके नीचे अंदर लाया जाता है। दरवाज़े पर बुआ तिलक करती है और लूणराई करती है, यानी नज़र से बचाने के लिए नमक और राई उनके चारों ओर घुमाती है।
3. दीया जलाया जाता है और सांझा, यानी शाम के गीत, गाए जाते हैं। मुंबई के एक माहेश्वरी परिवार की लिखी हुई विवाह-पुस्तिका (reetrivaz.in) यह भी लिखती है कि उस शाम "वारणा लिया जाता है"। यह किताब इसे नज़र उतारने वाला राजस्थानी शब्द मानती है, जैसा उवारी में होता है, अध्याय 18 वाला वरणा नहीं; आपके बड़े इसका क्या मतलब लेते हैं, उनसे पूछ लीजिए।
4. **बनोरी:** पुराने समय में बान के दिनों में हर शाम दुल्हन या दूल्हे की बनोरी निकाली जाती थी। आख़िरी रात बड़ी बनोरी निकलती थी: दुल्हन बग्घी में, दूल्हा घोड़ी पर, बैंड-बाजे और आतिशबाज़ी के साथ पूरे गाँव में।
5. **सांकड़ी:** शादी से ठीक पहले की रात, जो उत्सव मनाते और जागते हुए बिताई जाती है। परिवार की पुस्तिका शादी से पहले के मुख्य दिन को "विरद विनायक (सांकड़ी राखी) का दिन" कहती है।
6. **बिहाणा,** भोर में: चौकी पर मूंग के ऊपर कलश रखा जाता है, नीचे गेहूँ और गुड़। पीठी और मेहंदी मिलाई जाती है। हर औरत तिलक करती है, थोड़ी पीठी अपने हाथों पर मलती है, नाख़ूनों पर ज़रा-सी मेहंदी लगाती है, और देवी-देवताओं को बुलाने वाले बिहाणा के गीत गाए जाते हैं।

हम ऐसा क्यों करते हैं

शादी के आख़िरी दिनों में घर के सामने दो काम होते हैं, जो एक-दूसरे से उलटी दिशा में खींचते हैं। उसे अपने बच्चे को पूरे शहर को दिखाना भी है, और उसकी कड़ी रखवाली भी करनी है। शाम की ये रीतें दोनों काम करती हैं।

बनोरी दिखाने वाला हिस्सा है। दुल्हन या दूल्हे को गलियों में घुमाना हर पड़ोसी से कहता था: हमारे इस बच्चे की शादी होने वाली है, आइए देखिए, आइए आशीर्वाद दीजिए।

ब्राह्मण बनोरी इन सबसे पहले एक आशीर्वाद रख देती है। पुस्तिका इसकी वजह रीत के अलावा कुछ नहीं बताती, लेकिन ढाँचा साफ़ है: परिवार के अपने उत्सव से पहले एक ब्राह्मण बच्चे का मुँह मीठा करता है

और उसकी खोळ भरता है। दरवाज़े पर लूणराई रखवाली वाला हिस्सा है। नमक और राई किसी के चारों ओर घुमाकर फेंक देना, बुरी नज़र के लिए राजस्थानी घरों का जवाब है, और जिस बच्चे को सब देख रहे हों, उसे नज़र लगने का सबसे ज़्यादा डर माना जाता है।

रात की रीतें एक पहरा हैं। पूरे राजस्थान में कई परिवारों में शादी से पहले औरतें पूरी रात जागती हैं और एक तय क्रम में गीत गाती हैं: कुलदेवी के, उनके साथ रहने वाले भैरूंजी के, पितरों और पितराणियों के, और घर के दूसरे रखवालों के। लोक-संस्कृति के जानकार इसे रातीजगा कहते हैं, यानी रात भर का जागरण, और मुर्गे की बांग के समय गाया जाने वाला इसका आख़िरी गीत कूकड़ी कहलाता है। हर रखवाले को नाम लेकर बुलाने से कोई छूटता नहीं, और पुरखों के नाम वाले गीत कहते हैं कि यह शादी एक पीढ़ी की नहीं, एक लंबी परंपरा की है।

परिवार की पुस्तिका में रातीजगा शब्द नहीं आता। उसमें शाम के सांझा गीत, सांकड़ी, और बहू के आने के बाद दूल्हे के घर पर एक छोटा राती-जुगा दर्ज है (अध्याय 29)।

बिहाणा रात को पूरा करता है। शादी का दिन गीतों में देवी-देवताओं के न्योते से शुरू होता है, जैसे बत्तीसी (अध्याय 5) से अब तक गाने की हर बैठक शुरू हुई है, और हर औरत उन दोनों लेपों को छूती है जो उस दिन काम आएँगे।

जड़ें **समाज की रीत और रक्षा या लोक-विश्वास**

बनोरी, शाम के गीत और रात का जागरण राजस्थानी परिवारों की रीत है, जिसे औरतें आगे बढ़ाती आई हैं, और जिन्हें गीत गाकर बुलाया जाता है उनमें पुरखे भी हैं। दरवाज़े पर लूणराई रक्षा का विश्वास है।

कुछ परिवारों में

नाम बदलता रहता है: परिवार की पुस्तिका में बनोरी, राजस्थान के बड़े हिस्से में बिंदोरी। अग्रवाल संस्करण में लिखा गया था कि बिंदोरी माहेश्वरी और ओसवाल परिवारों में सबसे ज़्यादा प्रचलित है। पुस्तिका ख़ुद हर रात की बनोरी और गाँव भर में निकलने वाली सवारी को पुराने समय की रीत बताती है।

अग्रवाल रातीजगा में दीवार पर बनाए जाने वाले थापे की जगह माहेश्वरी शादी में मायां का पट है (अध्याय 15), सांकड़ी नहीं।

एक परिवार की पुस्तिका में शादी से पहले की रात दस बजे के बाद दुल्हन का एक निजी घट विवाह दर्ज है: मिट्टी के घड़े को विष्णु का रूप मानकर उसके सात फेरे। यह उन लड़कियों के लिए किया जाता है

जिनके ग्रह प्रबल माने जाते हैं, और उस परिवार ने इसे लंबे सुहाग की प्रार्थना के रूप में अपनी हर बेटी के लिए अपना लिया। यह ज्योतिष का एक उपाय है जो कई समाजों में जाना जाता है; कुछ परिवार इसे चुपचाप करते हैं, और बहुतों ने इसका नाम भी नहीं सुना।

इसमें आपकी भूमिका

- **दुल्हन और दूल्हा:** बिहाणा पर जब औरतें गा रही हों, तो वहाँ रहिए; वे गीत आप पर आशीर्वाद बुलाते हैं।
- **भाई-बहन और चचेरे-ममेरे भाई-बहन:** ओढ़ने का एक कोना आप पकड़िए। सांकड़ी पर औरतें जिन-जिन के नाम गाती हैं, उन्हें क्रम से लिख लीजिए: यही आपके परिवार के रखवालों की सूची है।

बड़ों से पूछिए

1. क्या हमारा परिवार शादी से पहले की रात जागता है, और हम उसे क्या कहते हैं: सांकड़ी, रातीजगा, राती-जुगा या कुछ और?

2. क्या आपकी बनोरी निकली थी, और कितनी शामों तक?

अध्याय 14

पीठी, झोळ और लख: हल्दी, दही और बरकत की कामना

दुल्हन दूल्हा भाई-बहन



एक मिनट में

सात सुहागिनें दुल्हन या दूल्हे को हल्दी का लेप लगाती हैं, पहले नीचे से ऊपर, फिर ऊपर से नीचे। पिता बेलन से सिर पर गुनगुना दही डालते हैं। औरतें लखधन घुमाती हैं, जो गुड़, मसालों, लाख और धातुओं का एक गोला होता है, और गाती हैं कि बच्चा लखपति बने। फिर मामा दुल्हन या दूल्हे को पाटे से नीचे उतारते हैं, और पैर के नीचे मिट्टी का सिकोरा तोड़ा जाता है। हर रस्म सबसे पहले विनायक बने लड़के की होती है।

कब	शादी की सुबह या उससे एक दिन पहले
कौन निभाता है	पाँच या सात सुहागिनें; पिता और माँ; मामा
कहाँ	दोनों घरों में, अलग-अलग
भाव	रक्षा; आशीर्वाद
इस मौके का गीत	पीठी के लिए "म्हारी हळदी रो रंग सुरंग, निपज मालवे"; लख के लिए "लख ले रे म्हारा बालक बनड़ा"

क्या होता है

1. दो चौकियाँ: दाहिनी ओर विनायक बना लड़का, बाईं ओर दुल्हन या दूल्हा। पाँच या सात सुहागिनें पीठी लगाती हैं, पहले सात बार विनायक को, फिर सात बार बच्चे को।
2. चढ़ाते समय दोनों हाथ कैंची की तरह एक-दूसरे पर रखकर लेप पैरों, घुटनों, हाथों, कंधों और सिर पर लगाया जाता है। उतारते समय सीधे हाथों से सिर से पैरों तक उतारा जाता है।
3. **झोळ:** एक औरत, जिसके अपने माता-पिता और सास-ससुर सब जीवित हों, मिट्टी की छोटी हांडी में गुनगुना दही लाती है, जिसमें हल्दी, मूंग और एक सिक्का होता है। हांडी लाल कपड़े से ढकी होती है और उसमें एक बेलन खड़ा होता है। पिता बेलन से सात बार दही पहले विनायक के सिर पर डालते हैं, फिर बच्चे के। माँ उसे मलती हैं, और फिर स्नान होता है।
4. **लख:** दूल्हा पाटे, यानी लकड़ी की नीची चौकी, पर खड़ा होता है, गले में हनुमानजी की छवि पहने। सातों सुहागिनें लखधन घुमाती हैं, जो गुड़, धनिया, जीरा, अजवाइन, लाख, चाँदी, सोने और ताँबे का एक गोला होता है, पहले विनायक पर और फिर सात बार दूल्हे पर।
5. मामा उसे पाटे से नीचे उतारते हैं। मिट्टी का एक सिकोरा, जिसमें गुड़ की डली होती है, मूंग और एक रुपये के ऊपर उलटा रखा जाता है, और दूल्हा उसे दाहिने पैर से तोड़ता है। मामा उसे एक लिफ़ाफ़ा देते हैं।
6. दुल्हन को पाटे पर ही तैयार किया जाता है: साड़ी के नीचे कोरा भाता, हनुमानजी की छवि, फिर उसके मायरे से आया चूड़ा (अध्याय 11), दाहिने हाथ में पाँच चूड़ियाँ और बाएँ में छह, और बारहवीं चूड़ी उस औरत को मिलती है जो चूड़ा पहनाती है; फिर नथ, सेनासूत (चाँदी के तार का कड़ा जो ससुराल से आता है; अध्याय 16 की बरी में एक सेनासूत आता है), पायल और बिछुड़ी। फिर वही लख होता है, मामा उसे नीचे उतारते हैं, और वह सिकोरा तोड़ती है।

हम ऐसा क्यों करते हैं

पहले हल्दी। हिंदू घर में हल्दी और पीला रंग उन चीज़ों पर निशान लगाते हैं जो किसी शुभ काम के लिए अलग रखी गई हों, और पीठी किसी इंसान के साथ यही करती है: वह दुल्हन या दूल्हे पर निशान लगा देती है कि अब यह शादी का है। यह उबटन भी है, जिसे भारत की औरतें सदियों से त्वचा के लिए लगाती आई हैं। हल्दी कीटाणु मारती है, यह बात आजकल अक्सर कही जाती है, लेकिन सात सुहागिनें इस वजह से इकट्ठी होकर नहीं गातीं।

मुंबई के एक माहेश्वरी परिवार की लिखी हुई विवाह-पुस्तिका (reetrivaz.in) में दर्ज है कि विरद विनायक कभी पाँच या सात दिन चलता था: पीठी पहले दिन चढ़ती थी और आख़िरी दिन ही उतरती थी। आज दोनों काम एक ही बैठक में हो जाते हैं। पुस्तिका यह नहीं बताती कि लेप कैंची जैसे हाथों से और सीधे हाथों से क्यों लगाया जाता है।

झोळ इसलिए अलग है कि दही कौन डालता है। शादी से पहले की ज़्यादातर रस्में औरतों की होती हैं; यहाँ हांडी पिता के हाथ में होती है। बेलन क्यों, यह किसी स्रोत में नहीं लिखा। रस्म जो दिखाती है वह यह है कि स्नान से पहले माँ और पिता, दोनों के हाथ एक साथ बच्चे पर होते हैं।

लख का मतलब ख़ुद उसका गीत बता देता है। "लख ले रे म्हारा बालक बनड़ा... ज्यूं रे लखेसर होय": लख ले मेरे बेटे, ताकि तू लखेसर बने, यानी लाखों वाला। इस शब्द में दोहरा अर्थ है: लख यानी गोले में डली लाख, और लख यानी लाख, सौ हज़ार।

पुस्तिका सिकोरा तोड़ने की वजह नहीं बताती; इसके सबसे क़रीब की रस्म माहेश्वरी समाज लुधियाना की रस्मों की सूची में है, जहाँ निकासी के समय दूल्हा मिट्टी के ढेर पर पैर मारता है, "जो दिखाता है कि उसकी शादी होने वाली है" (अध्याय 17)। मामा क्यों उतारते हैं, यह समझना आसान है: जैसे मायरे में (अध्याय 11), वैसे ही यहाँ भी माँ का पीहर उसके बच्चे के पीछे खड़ा होता है, जब बच्चा बचपन से बाहर क़दम रखता है। पुस्तिका यह भी बताती है कि पुराने पाँच या सात दिन वाले रूप में पहले के दिनों में पिता बच्चे को नीचे उतारते थे, और मामा सिर्फ़ आख़िरी दिन, जिस दिन दूल्हे को सजाया जाता था।

अग्रवाल शादी में तेलबान, यानी सात बार तेल लगाना, वही काम करता है जो माहेश्वरी सुबह में झोळ और लख करते हैं।

जड़ें **समाज की रीत और रक्षा या लोक-विश्वास**

पीठी, झोळ और लख परिवारों की रीत और औरतों के गीतों के सहारे चले आए हैं, गृह्यसूत्रों के सहारे नहीं। लख में धन की कामना एक रक्षा वाले विश्वास से जुड़ जाती है।

कुछ परिवारों में

लुधियाना की सूची मूल बातों पर सहमत है: तणी के नीचे दुल्हन और दूल्हे को सात बार तेल लगाया जाता है, और "माता-पिता दुल्हन और दूल्हे को सिर से पैर तक दही से नहलाते हैं"। लखदान के लिए उसमें सात नहीं, चार औरतें हैं, और मसालों और लाख के साथ एक सिक्का और चाँदी का एक घुंघरू भी होता है।

सिकोरा और मामा का उतारना सिर्फ़ उसी एक परिवार की पुस्तिका पर टिका है। शहरों में यह सुबह अक्सर पीले कपड़ों वाली "हल्दी" बन गई है; पूछिए कि आपके यहाँ दही की हांडी और लखधन अब भी बचे हैं या नहीं।

इसमें आपकी भूमिका

- **दुल्हन और दूल्हा:** कोई पुराना कपड़ा पहनिए, और हर बार विनायक बने लड़के को पहले जाने दीजिए।
- **मामा:** लख ख़त्म होते समय कमरे में रहिए। अपने भानजे या भानजी को पाटे से उतारना आपका काम है, और लिफ़ाफ़ा भी।
- **भाई-बहन और चचेरे-ममेरे भाई-बहन:** सिकोरा, मूंग और रुपया तैयार रखिए, और सुबह शुरू होने से पहले झोळ की हांडी के लिए ऐसी औरत ढूँढ लीजिए जिसका पूरा परिवार सलामत हो।

बड़ों से पूछिए

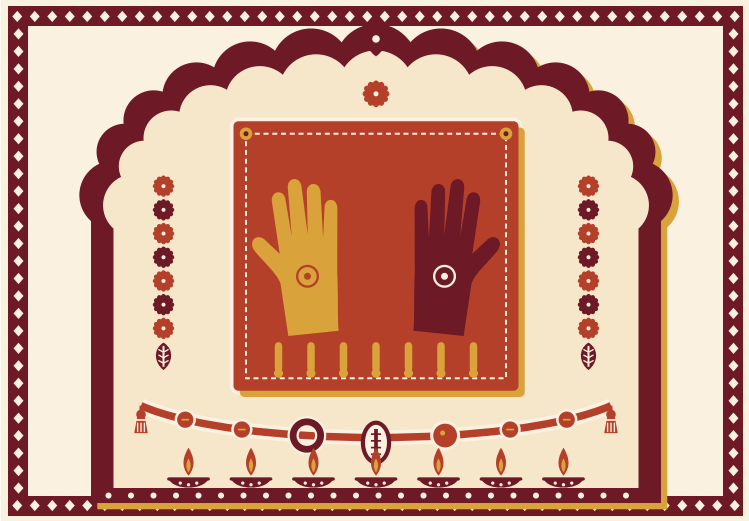
1. हमारे परिवार में क्या पिता बेलन से दही डालते हैं, और हांडी कौन लाता है?

2. क्या मामा दुल्हन या दूल्हे को पाटे से उतारते हैं, और क्या सिकोरा तोड़ा जाता है?

अध्याय 15

कांकण डोरा, मायां और गणगौर: डोरा, थापना और गौरी

दुल्हन दूल्हा भाई-बहन



एक मिनट में

पीठी के बाद तीन काम होते हैं। मायां, यानी घर में शादी का अपना पूजा-स्थान, दीवार के सहारे थापी जाती है, और दुल्हन या दूल्हा उसके पास हल्दी और मेहंदी से अपने हाथों की छाप लगाता है। मायां के सामने कांकण डोरा, यानी सात गाँठों वाला रक्षा का धागा, एक हाथ और एक पैर पर बाँधा जाता है। फिर दुल्हन सात सुहागिनों के साथ गणगौर, यानी गौरी, की पूजा करती है, और दूल्हा सज जाने के बाद यही करता है। विनायक बने लड़के का आभार मानकर उसे विदा किया जाता है।

कब	पीठी और लख के बाद, सांकड़ी के दिन या शादी की सुबह
कौन निभाता है	मायां के लिए पंडित जी; गणगौर के लिए सात सुहागिनें, सबसे बड़ी पहले
कहाँ	दोनों घरों में, अलग-अलग
भाव	रक्षा; आशीर्वाद
इस मौके का गीत	"चढ़ चढ़ ए चैतड़ला रा मास गोरल पूजो ना"

क्या होता है

1. **मायां:** एक छपा हुआ शुभ पट (पहले यह सीधे दीवार पर ही बनाया जाता था) एक तख़्ते पर दीवार के सहारे रखा जाता है। यह तख़्ता बाद में शादी की जगह तक जाएगा।
2. उसके पास गुलाबी काग़ज़ पर दुल्हन या दूल्हा पीठी से अपने दाहिने हाथ की छाप और मेहंदी से बाएँ हाथ की छाप लगाता है, और नीचे घी की सात लकीरें खींची जाती हैं। सात लवणा, जैसा मुंबई के एक माहेश्वरी परिवार की लिखी हुई विवाह-पुस्तिका (reetrivaz.in) इन्हें कहती है, हर एक पर लाख की एक लाल चूड़ी रखकर सजाए जाते हैं, और बच्चा उन्हें छूता है। पुस्तिका यह नहीं बताती कि लवणा क्या होता है; जिन्होंने कभी इन्हें सजाया हो, उनसे पूछिए।
3. **कांकण डोरा:** मौली को बटकर सात गाँठें लगाकर दो राखियाँ बनाई जाती हैं, जिनमें लाल कपड़े में लूणराई, सोना, चाँदी, लोहा, लाख के मनके और एक कौड़ी बँधी होती है। मायां को ढोक देते समय एक राखी दूल्हे के दाहिने हाथ पर और एक दाहिने पैर पर बाँधी जाती है; दुल्हन के बाएँ हाथ और बाएँ पैर पर।
4. **गणगौर:** दुल्हन सात सुहागिनों के साथ गणगौर पूजती है, पहले अपनी दादी के साथ, फिर बड़ी माँ के साथ, फिर माँ के साथ, फिर दूसरों के साथ, जब तक सात पूरी न हो जाएँ। औरतें गणगौर के गीत गाती हैं।
5. दूल्हा बीन राजा के रूप में सज जाने के बाद मायां को प्रणाम करता है और उसी तरह सात सुहागिनों के साथ गणगौर पूजता है (अध्याय 17)।
6. विनायक बने लड़के को विदा किया जाता है: पिता या माँ उसका तिलक करते हैं और उसे कपड़े, मेवा और एक लिफ़ाफ़ा देते हैं।

हम ऐसा क्यों करते हैं

धागे को समझाना सबसे आसान है। स्रोत कांकण डोरे को रक्षा बताते हैं: राजस्थानी शब्दकोश इसे बुरी नज़र से बचाव कहता है, और माहेश्वरी समाज लुधियाना की रस्मों की सूची कहती है कि इसमें लोहा

इसलिए होता है कि "उनका विवाहित जीवन लोहे जैसा मज़बूत हो"। दुल्हन का धागा बाईं ओर और दूल्हे का दाहिनी ओर क्यों बँधता है, यह किसी स्रोत में नहीं लिखा। शादी की यही एक निशानी है जो दोनों पहनते हैं, और बाद में एक खेल में दोनों एक-दूसरे का धागा खोलते हैं (अध्याय 30)।

मायां घर में शादी का अपना पूजा-स्थान है। एक बार थापने के बाद हर मोड़ पर उसका मान किया जाता है: सजा हुआ दूल्हा निकलने से पहले, दूल्हा-दुल्हन मामा फेरों के बाद और फिर फेरों के बाद, बिदाई के समय, दूल्हे के घर पर, और आख़िर में लापसी और नारियल के साथ उसे उठाया जाता है (अध्याय 32)। अग्रवाल शादी में जो जगह थापे की है, माहेश्वरी शादी में वही मायां की है।

गणगौर को ज़्यादा ध्यान से समझना होगा, क्योंकि इसमें हमारे समाज की अपनी भक्ति है। गणगौर राजस्थान में गौरी और ईसर का त्योहार है, यानी पति-पत्नी के रूप में पार्वती और शिव का। कुँवारी लड़कियाँ इसे अच्छे पति के लिए पूजती हैं और सुहागिनें अपने पति की लंबी उम्र के लिए, और नई ब्याही लड़की शादी के बाद पूरी गणगौर करती है। माहेश्वरी लेखक गणगौर को श्रावणी तीज के साथ समाज के औरतों के सबसे बड़े त्योहारों में गिनते हैं, "जैसे महाराष्ट्र के लोगों के लिए मंगला गौरी"। शादी में गाया जाने वाला गीत चैत्र का गीत है, यानी त्योहार के महीने का, जो इस दिन तक चला आया है।

तो जिस लड़की ने बरसों गणगौर पूजी, वह उसी दिन एक बार फिर गौरी की पूजा करती है जिस दिन पति आता है। परिवार की पुस्तिका का गठजोड़े वाला गीत यह रिश्ता ख़ुद जोड़ता है: "भाई, तुमने मुझसे कितनी गणगौर पुजवाईं"। दो अलग-अलग माहेश्वरी स्रोत, परिवार की पुस्तिका और लुधियाना की सूची, फेरों से पहले गणगौर पूजा रखते हैं, और पुस्तिका में दुल्हन और दूल्हा दोनों अलग-अलग यह पूजा करते हैं। मारवाड़ी शादियों के बारे में आम जानकारी देने वाली किताबों और लेखों में इसका ज़िक्र नहीं है।

माहेश्वरी शादी में महेश कहाँ हैं?

किसी स्रोत में मंडप पर शिव की अलग पूजा का वर्णन नहीं है। स्रोत जो दिखाते हैं वह यह है: दोनों स्रोत फेरों से पहले जिस देवी की पूजा रखते हैं, वह गणगौर है, और गणगौर गौरी और ईसर की साथ-साथ पूजा है, यानी पति-पत्नी के रूप में शिव का अपना घर-परिवार। और मामा फेरों में (अध्याय 21) शादी के साथ वह कथा चलती है जिसमें पार्वती और महेश ने पहले माहेश्वरियों के विवाह फिर से बसाए थे। परिवार अपनी ओर से शिव पूजा करते हैं या शिव मंदिर जाते हैं, यह स्रोतों में दर्ज नहीं है। पूछिए कि आपके यहाँ ऐसा होता है या नहीं।

जड़ें **समाज की रीत और रक्षा या लोक-विश्वास**

मायां और गणगौर पूजा परिवारों की रीत है, जिसे औरतें और उनके गीत आगे बढ़ाते आए हैं। कांकण डोरा रक्षा का विश्वास है।

कुछ परिवारों में

अग्रवाल शादी में कंगन डोरा पीठी के समय दोनों की दाहिनी कलाई पर बाँधा जाता है। परिवार की पुस्तिका में यह मायां के सामने, एक हाथ और एक पैर पर बँधता है। लुधियाना की सूची में कलाई पर लोहे की चाबियों का गुच्छा, लाख, एक कौड़ी और चाँदी का एक घुंघरू बाँधा जाता है, और शब्दकोश में लोहा, एक लौंग और एक कौड़ी, जो शादी से दो दिन पहले बाँधे जाते हैं।

इसमें आपकी भूमिका

- **दुल्हन:** गणगौर पूजा अपनी दादी के साथ शुरू कीजिए, और गीत की पहली पंक्ति उन्हीं से सीखिए।
- **दूल्हा:** डोरा हाथ और पैर पर बँधा रहने दीजिए। यह सिर्फ़ अपनी पत्नी के साथ एक खेल में ही खुलता है।
- **भाई-बहन:** किसी को मायां का तख़्ता शादी की जगह तक ले जाना है और घर वापस लाना है। अभी तय कर लीजिए कि कौन।

बड़ों से पूछिए

1. क्या शादी से पहले दुल्हन और दूल्हा दोनों सात सुहागिनों के साथ गणगौर पूजते हैं, और हम कौन-सा गीत गाते हैं?

2. क्या हमारा परिवार शादी के दौरान अपनी ओर से शिव पूजा करता है या शिव मंदिर जाता है?

बरी, स्तम्भ रोपण और कन्यावल: दुल्हन के द्वार पर ससुराल

दुल्हन भाई-बहन



एक मिनट में

शादी की सुबह ससुराल दो बार दुल्हन के द्वार पर आती है। लड़के वाले बरी लेकर आते हैं: दुल्हन के गहने और सुहागन की चीज़ें, सिंदूर की डिबिया से लेकर बिछुड़ी तक। उनके कोई बड़े-बुज़ुर्ग या जंवाई पंडित जी के साथ दुल्हन के मंडप के खंभे की पूजा करते हैं। इसी बीच दुल्हन के दादा-दादी और माता-पिता, और कुछ परिवारों में उसके मामा-मामी भी, कन्यावल शुरू करते हैं: जब तक उसका विवाह नहीं हो जाता, वे कुछ नहीं खाएँगे।

कब	शादी की सुबह
कौन निभाता है	लड़के वालों के बड़े-बुज़ुर्ग या कोई जंवाई; दुल्हन के माता-पिता और बड़े-बुज़ुर्ग
कहाँ	दुल्हन का घर या शादी की जगह
भाव	दो परिवारों का बंधन; नए घर की ओर

क्या होता है

1. **बरी:** लड़के वालों की ओर से कम से कम पाँच लोग, जिनमें दूल्हे के पिता और एक जंवाई होते हैं, बरी लेकर दुल्हन के घर जाते हैं।
2. एक परिवार की सूची में इसका सामान दिया गया है: साढ़े तीन "बेस" (कपड़ों के जोड़े: घाघरा, चुन्नी, साड़ियाँ और एक चुनरी), बालाजी की छवि वाली सोने की चेन, सोने के गहने, पायल, बिछुड़ी, चाबी वाला कड़ा, सेनासूत, सिंदूर, मोम, बिंदी और चमकी के लिए चाँदी की चार छोटी डिबियाँ, लक्ष्मी जी के चिह्न वाला सेवरा, शीशा, कंघी, तेल, चोटी, इत्र, चप्पल, मिश्री, एक "सुहागपुड़ा", दुल्हन की खोळ भरने के लिए दो जोड़े, और फेर-पाटे की साड़ी।
3. इनमें से पहले जोड़े से दुल्हन की खोळ भरी जाती है। दूसरा जोड़ा फेरों के बाद के मौके के लिए रखा रहता है (अध्याय 25)।
4. **स्तम्भ रोपण:** लड़की वाले लड़के वालों को ख़बर भेजते हैं, और वे मुहूर्त पर परिवार के किसी बड़े-बुज़ुर्ग या जंवाई को भेजते हैं। पंडित जी उनसे स्तम्भ, यानी मंडप के खंभे, की पूजा करवाते हैं, मिट्टी के कलश के साथ और बेह के उन सात मटकों के साथ जो बड़े से छोटे के क्रम में एक के ऊपर एक रखे होते हैं। उन्हें भोजन कराया जाता है और एक लिफ़ाफ़ा दिया जाता है।
5. **कन्यावल:** दुल्हन के बड़े-बुज़ुर्ग और माता-पिता, और कुछ परिवारों में उसके मामा-मामी भी, यह व्रत लेते हैं कि जब तक विवाह पूरा नहीं हो जाता, वे कुछ नहीं खाएँगे।

हम ऐसा क्यों करते हैं

देखिए कि पूरे हफ़्ते देना-लेना किस दिशा में चलता है। इसका बड़ा हिस्सा लड़की वालों की ओर से जाता है: मुद्दा टीका, आगे आने वाला वरणा, पेहरावनी। बरी, चीकणी कोथली और दुल्हन की मेहंदी की तरह, उलटी दिशा में चलती है, और यह बिल्कुल आख़िरी घड़ी में आती है। शादी की सुबह दूल्हे का घर दुल्हन के द्वार पर आता है और उसके हाथ में वे चीज़ें रखता है जो वह उनके घर की सुहागन बनकर पहनेगी।

यहाँ माहेश्वरी शादी अग्रवाल शादी से एक बात में अलग है, और इसे ठीक से समझना ज़रूरी है। अग्रवाल शादी में दुल्हन फेरों के लिए पल्ले वाला जोड़ा पहनती है। माहेश्वरी स्रोतों में उसके शादी के कपड़े मायरे में उसके मामा की ओर से आते हैं (अध्याय 11); माहेश्वरी समाज लुधियाना की रस्मों की सूची कहती है कि बारात आने से पहले दुल्हन मामा के दिए कपड़े पहनती है। बरी जो लाती है वह ख़ुद सुहाग है: सिंदूर की डिबिया, सेनासूत, बिछुड़ी, लक्ष्मी जी वाला सेवरा जो मुंबई के एक माहेश्वरी परिवार की लिखी हुई विवाह-पुस्तिका (reetrivaz.in) के अनुसार मामा फेरों से पहले उसे बाँधा जाता है, और वह साड़ी जो वह फेरों के

बाद फेर-पाटे पर पहनेगी (अध्याय 26)। माँ का पीहर उसे कन्यादान के लिए सजाता है; पति का परिवार उसे आगे की ज़िंदगी के लिए तैयार करता है।

स्तम्भ रोपण का कोई मतलब स्रोतों में नहीं लिखा, लेकिन वह जो दिखाता है वह साफ़ है। जिस मंडप में दुल्हन का कन्यादान होगा, वह उस खंभे पर खड़ा है जिसे उसे अपनाने वाले घर ने पूजा है। खंभे के नीचे एक के ऊपर एक रखे बेह के सात मटके, जो कभी चाक पूजन (अध्याय 10) पर कुम्हार के यहाँ से लाए गए थे, बाद में लड़के वालों के साथ उनके घर जाते हैं। बारात निकलने से पहले ही अपनाने वाला घर दुल्हन के मंडप पर अपना हाथ रख चुका होता है।

कन्यावल उसी दिन देने वाले परिवार का हिस्सा है। किसी पवित्र काम के पूरा होने तक उपवास रखना, उस काम का मान करने का पुराना हिंदू तरीका है, और उत्तर भारत के कई परिवारों में माता-पिता कन्यादान तक उपवास रखते हैं। लुधियाना की सूची में दर्ज माहेश्वरी रूप इसे दादा-दादी और मामा-मामी तक बढ़ा देता है। परिवार की पुस्तिका बताती है कि यह कैसे पूरा होता है: फेरों के बाद दुल्हन के दादा-दादी और माता-पिता अपनी ब्याही बेटी का मुँह देखकर अपना व्रत पूरा करते हैं (अध्याय 25)।

जड़ें **समाज की रीत**

बरी, स्तम्भ रोपण और कन्यावल राजस्थानी और मारवाड़ी परिवारों की रीत हैं। राजस्थानी शब्दकोश कन्यावल को वह उपवास बताता है जो दुल्हन के क़रीबी रिश्तेदार फेरों तक रखते हैं।

कुछ परिवारों में

ऊपर दी गई बरी की सूची को परिवार की पुस्तिका ने अपने घर की रीत बताया है, इसलिए इसे एक परिवार की सूची मानिए, नियम नहीं। लुधियाना की सूची छोटी है: चाँदी का धागा, चाँदी की चार छोटी डिबियाँ, कुमकुम और दुल्हन के लिए टीका, फिर उसकी गोद भराई। चाँदी की चार डिबियाँ और सेनासूत दोनों सूचियों में हैं।

माहेश्वरी स्रोतों में स्तम्भ रोपण सिर्फ़ उसी एक परिवार की पुस्तिका पर टिका है; मारवाड़ी शादी के बारे में आम जानकारी देने वाली किताबें और लेख मारवाड़ी रस्मों में एक "थांब पूजा" गिनाते हैं। होटल वाली शादियों में भी कलश और बेह के मटके किसी को घर ले जाने होते हैं।

कन्यावल जिन-जिन के नाम लिए गए हैं वे सब रखें या सिर्फ़ माता-पिता, और बुज़ुर्गों या बीमारों को छूट दी जाए या नहीं, यह हर परिवार को ख़ुद तय करना है।

इसमें आपकी भूमिका

- **दुल्हन:** बरी लेकर आने वाली औरतों के साथ बैठिए और पूछिए कि कौन-सी चीज़ किस मौके के लिए है।
- **दुल्हन के भाई-बहन:** बरी लेकर आने वालों का दरवाज़े पर स्वागत कीजिए और ख़ुद उनकी ख़ातिर कीजिए। लंबे उपवास वाले दिन अपने दादा-दादी का ध्यान रखिए, और फेरे होते ही सबसे पहले उन्हें ख़बर दीजिए।
- **दूल्हे के जंवाई और चचेरे-ममेरे भाई-बहन:** अगर आपको स्तम्भ रोपण के लिए भेजा जाए, तो समय पर पहुँचिए। मुहूर्त तय है।

बड़ों से पूछिए

1. हमारे परिवार में कन्यावल का व्रत कौन-कौन रखता है, और वह कैसे खोला जाता है?

2. आपकी शादी में स्तम्भ रोपण के लिए लड़के वालों की ओर से कौन आया था, और आपकी बरी में क्या-क्या था?

आम सवाल

इन सबमें शिव कहाँ हैं?

किसी स्रोत में मंडप पर शिव की अलग पूजा का वर्णन नहीं है। महेश दो तरह से मौजूद हैं। दुल्हन और दूल्हा दोनों गणगौर पूजते हैं, जो गौरी और ईसर की साथ-साथ पूजा है, यानी पति-पत्नी के रूप में शिव और पार्वती की (अध्याय 15)। और मामा फेरों में वह कथा चलती है जिसमें पार्वती और महेश ने पहले माहेश्वरियों के विवाह फिर से बसाए थे (अध्याय 21)। अगर आपका परिवार शिव पूजा करता है या मंदिर जाता है, तो उसे बनाए रखिए; बस इतना है कि स्रोतों में ऐसा कुछ दर्ज नहीं है।

क्या लड़के वाले बरी एक दिन पहले भेज सकते हैं?

स्रोत इसे शादी की सुबह की रस्मों के साथ रखते हैं, लेकिन कोई भी पहले दिन भेजने से मना नहीं करता, और कुछ परिवार सुबह का समय ख़ाली रखने के लिए इसे पिछली शाम कर लेते हैं। ज़रूरी बात यह है कि बरी की चीज़ें दुल्हन के हाथ में उन मौकों से पहले आ जाएँ जिनके लिए वे हैं: खोळ भरना, फेरों के बाद फेर-पाटे की साड़ी, और सुहाग की वे चीज़ें जो वह ब्याही औरत के रूप में पहनना शुरू करती है।

कांकण डोरा किस हाथ पर बँधता है?

मुंबई के एक माहेश्वरी परिवार की लिखी हुई विवाह-पुस्तिका (reetrivaz.in) में दूल्हे के दाहिने हाथ और दाहिने पैर पर, और दुल्हन के बाएँ हाथ और बाएँ पैर पर, मायां के सामने। माहेश्वरी समाज लुधियाना की रस्मों की सूची में बस "कलाई" लिखा है, और अग्रवाल परिवार इसे दोनों की दाहिनी कलाई पर बाँधते हैं। जो बड़े इसे बाँधते हैं उनसे पूछिए, और इसे तब तक बँधा रहने दीजिए जब तक जूवा-जूई में आप दोनों एक-दूसरे का डोरा न खोल दें (अध्याय 30)।

क्या दुल्हन के माता-पिता को सच में पूरे दिन उपवास रखना होता है?

कन्यावल एक व्रत है, और व्रत वही निभाते हैं जो उसे लेते हैं। लुधियाना की सूची में विवाह के बाद ही खाने का व्रत दर्ज है, और परिवार की पुस्तिका में दर्ज है कि ब्याही दुल्हन का मुँह देखकर यह व्रत खोला जाता है। यह परिवार तय करते हैं कि व्रत कौन रखे, और बुज़ुर्गों या बीमारों को छूट दे सकते हैं; व्रत का मतलब सेहत को ख़तरे में डालना नहीं है।

क्या गीतों के साथ-साथ हम संगीत की एक शाम भी रख सकते हैं?

हाँ। दोनों में से किसी भी माहेश्वरी स्रोत में संगीत की अलग रस्म नहीं है; गीत तो हर रस्म में ही बुने हुए हैं, और सबसे पहले पाँच गीत देवी-देवताओं के (अध्याय 5)। नाच-गाने की एक शाम उनके साथ आराम से चल सकती है। बस यह ध्यान रखिए कि बान, पीठी और गणगौर पूजा पर पुराने गीत अब भी गाए जाएँ, जहाँ दोनों स्रोत उन्हें रखते हैं।

क्या पूरी रात जागना ज़रूरी है?

पहले कई राजस्थानी परिवार पूरी रात जागते थे; परिवार की पुस्तिका में शाम के सांझा गीत और एक छोटा जागरण दर्ज है। ज़रूरी बात यह है कि परिवार के रखवालों और पुरखों को नाम लेकर गीतों में बुलाया जाए; गाना रात में कितनी देर तक चले, यह घरवाले तय करें।

भाग चार

विवाह का दिन



दूल्हे की निकासी से लेकर बाहर के फेरे, हाथों का मिलना, अग्नि के चार फेरे और सात कदम।

बीन राजा · वरणा · ढुकाव और तोरण · सुवाली और वरमाला · मामा फेरे · कन्यादान, गठजोड़ा और हथलेवा · लाजाहोम, शिला और अग्नि के चार फेरे · सप्तपदी, ध्रुव दर्शन और सिंदूर · फेरों के बाद · पेहरावनी, सिर-गूंथी और थली पूजन

अध्याय 17

बीन राजा: सजना, घोड़ी पूजा और निकासी

दूल्हा भाई-बहन



एक मिनट में

दूल्हा घर से ऐसे विदा होता है। उसे बीन राजा यानी दूल्हा राजा की तरह सजाया जाता है: साफ़ा, कटार और दो सेवरे। वह मायां को प्रणाम करता है और गणगौर पूजता है। फिर घोड़ी पर बैठता है। उसकी माँ घोड़ी की पूजा करती है, फिर बेटे को तिलक करती है, उसे नापती है और आशीर्वाद देती है। जंवाई तब तक लगाम पकड़े रहते हैं जब तक उन्हें नेग न मिल जाए, और एक छोटी बच्ची उसके पीछे बैठकर नज़र से बचाने के लिए नमक और राई वारती रहती है।

कब	शादी के दिन, बारात निकलने से पहले
कौन निभाता है	घोड़ी के पास उसकी माँ; आरते के लिए बहन या बुआ; कुछ परिवारों में मामा उसे बाहर लाते हैं; लगाम पर जंवाई
कहाँ	दूल्हे का घर या ठहरने की जगह, और बाहर का दरवाज़ा
भाव	रक्षा; दो परिवारों का बंधन
इस मौके का गीत	"बनड़ो म्हारो लुळ लुळ पाछो जी जोवे", मोटे तौर पर मतलब "मेरा बन्ना बार-बार मुड़कर पीछे देखता है"

क्या होता है

1. **सजना।** साफ़ा या पेचा (परंपरा से नौ मीटर कलफ़ लगा सूती कपड़ा), शेरवानी, चूड़ीदार और मोचड़ी, साथ में कलंगी, कटार, कंठा और अंगूठी। उसकी कमर पर गठजोड़े का कपड़ा और एक छोटा नारियल बाँधा जाता है और कोट पर कस की पिन लगाई जाती है। माहेश्वरी समाज लुधियाना की रस्मों की सूची कहती है कि वह मामा के दिए कपड़े पहनता है।

2. **दो सेवरे।** मुंबई के एक माहेश्वरी परिवार की लिखी हुई विवाह-पुस्तिका (reetrivaz.in) के अनुसार उसके साफ़े पर दाईं ओर दो सेवरे बाँधे जाते हैं: एक सूर्य का, एक लक्ष्मी का। लक्ष्मी वाला सेवरा बाद में दुल्हन को बाँधा जाएगा (अध्याय 20)।

3. सजने के बाद वह मायां (अध्याय 15) को प्रणाम करता है और सात सुहागिनों के साथ गणगौर पूजता है। उसकी बहन या बुआ बड़ा आरता करती है।

4. **निकासी।** दरवाज़े पर घर की एक ब्याही बेटी (बुआ, बहन या बेटी; परिवार की पुस्तिका उसे सुहासिनी कहती है) उसकी दाईं ओर पानी, आम के पत्तों और नारियल वाला चाँदी का लोटा लिए खड़ी होती है। घोड़ी पर चढ़ने जाते समय दूल्हा उसमें एक रुपया डालता है। लुधियाना की सूची में मामा उसे घोड़ी तक लाते हैं, और वह मिट्टी की एक छोटी ढेरी पर पैर मारता है, जिसके नीचे राई और पैसे रखे होते हैं।

5. **घोड़ी पूजा।** जब वह घोड़ी पर बैठ जाता है, तो उसकी माँ घोड़ी की पूजा करती है: उसे भीगी चने की दाल खिलाती है, तिलक करती है, उसकी अयाल की चोटी गूँथती है, उस पर साड़ी ओढ़ाती है और उसके खुरों पर मेहंदी लगाती है।

6. फिर वह बेटे की ओर मुड़ती है: चाँदी के रुपये से तिलक करती है, और अपने पल्लू और नेतरे की डोरी से उसकी छाती को चार बार, आड़ा-तिरछा, नापती है। फिर गुड़, आरता, चाची और भाभी के हाथ से काजल, शीशा, और उवारी, जिसमें हर औरत कोई चीज़ उसके सिर पर से वारती है। लुधियाना की सूची में माँ आशीर्वाद देती है कि बेटा अकेला नहीं, दुल्हन के साथ घर लौटे।

7. वहाँ मौजूद हर जंवाई लगाम पकड़ लेता है और नेग मिलने पर ही छोड़ता है। परिवार की एक छोटी बच्ची नमक और राई की पोटली (लूणराई) लेकर दूल्हे के पीछे बैठती है और उसे उसके ऊपर से वारती रहती है।
8. औरतें गीत गाती हुई थोड़ी दूर तक साथ जाती हैं और फिर लौट आती हैं। दूल्हे का पहला पड़ाव किसी मंदिर में होता है।

हम ऐसा क्यों करते हैं

बैंड-बाजा हटा दें, तो निकासी असल में बस इतनी है: एक माँ अपने बेटे को घर से विदा कर रही है। स्रोत यह नहीं बताते कि घोड़ी की पूजा माँ ही क्यों करती है, बहनें क्यों नहीं, जैसा कई अग्रवाल घरों में होता है। पर इतना ज़रूर दिखता है कि यह सुबह माँ की है। वही घोड़ी को खिलाती है, बेटे को तिलक करती है, उसे नापती है और वह आशीर्वाद देती है जो सबसे ज़रूरी है: अपनी दुल्हन को लेकर लौटना।

घोड़ी, साफ़ा और कटार राजस्थान के राजसी ढंग से आए हैं। बीन राजस्थानी में दूल्हे को ही कहते हैं; साथ में राजा जोड़ दें, तो वह एक दिन का राजा है जो अपनी दुल्हन को लेने निकला है।

इस पूरे पहनावे के नीचे रक्षा का भाव चलता है। काजल, शीशा, उवारी और लूणराई वाली बच्ची, ये सब नज़र से बचाव हैं, उस दिन जब गली की हर आँख दूल्हे पर होती है। लुधियाना की सूची कहती है कि बच्ची पीछे इसलिए बैठती है "ताकि दूल्हे को कोई अपशकुन न लगे", और मिट्टी पर पैर मारना यह दिखाता है कि वह ब्याह करने जा रहा है और दुल्हन के साथ लौटेगा।

पल्लू और नेतरे से नापने का मतलब दोनों में से किसी स्रोत में नहीं बताया गया। फिर भी इस पर ध्यान दीजिए: कुछ ही घंटों बाद दुल्हन की माँ अपने दरवाज़े पर उसे ठीक इसी तरह नापेगी (अध्याय 19)। एक ही दिन में दो माँएँ एक ही आदमी को नापती हैं।

लगाम पकड़ने वाले जंवाई कभी खुद इसी परिवार की बेटियों को ब्याहने दूल्हा बनकर आए थे। घोड़ी थामकर वे सबसे नए दूल्हे को साथ ले जाते हैं; उनका नेग परिवार के जंवाइयों को उसकी विदाई में अपनी एक तय जगह देता है।

जड़ें **समाज की रीत और रक्षा या लोक-विश्वास**

घोड़ी, पहनावा और माँ की पूजा राजस्थानी और माहेश्वरी रीत हैं। काजल, उवारी, लूणराई और घोड़ी पर बैठी बच्ची नज़र से बचाव के विश्वास हैं।

कुछ परिवारों में

शहरों में अक्सर घोड़ी दूल्हे को सिर्फ़ आख़िरी थोड़े रास्ते के लिए मिलती है, या उसकी जगह कार होती है।

परिवार की पुस्तिका टूंटिया को याद करती है। जब आदमी बारात लेकर चले जाते थे, तो घर पर औरतें एक नकली शादी रचाती थीं, जिसमें एक औरत दूल्हा बनती और दूसरी दुल्हन। पुस्तिका साफ़ कहती है कि अब यह नहीं होता। पर इससे एक वाजिब सवाल का जवाब मिल जाता है: जब आदमी बाहर होते थे, तब औरतें क्या करती थीं?

इसमें आपकी भूमिका

- **दूल्हा:** जब माँ आपको नापे, तो बिना हिले खड़े रहिए। उन्हें यह पल फोटो से ज़्यादा लंबे समय तक याद रहेगा।
- **जंवाई:** मिलकर लगाम पकड़िए, हँसी-ख़ुशी मोलभाव कीजिए, और नेग तय होते ही छोड़ दीजिए।
- **भाई-बहन और चचेरे-ममेरे भाई-बहन:** छोटी बच्ची पहले से तय कर लीजिए, उसकी लूणराई की पोटली कसकर बाँधिए, और जब तक वह घोड़ी पर बैठी है, घोड़ी के साथ-साथ चलिए।

बड़ों से पूछिए

1. हमारे परिवार में दूल्हे को घोड़ी तक कौन लाता है, मामा या कोई और, और क्या वह मिट्टी की ढेरी पर पैर मारता है?

2. जब आदमी बारात लेकर जाते थे, तो क्या हमारे घर की औरतें टूंटिया करती थीं, और आपको उसका क्या याद है?

अध्याय 18

वरणा: गोत्र का उच्चारण

दुल्हन · दूल्हा · भाई-बहन



एक मिनट में

दुल्हन के माता-पिता दूल्हे का स्वागत सबसे ख़ास मेहमान की तरह, पूरे मान से करते हैं: माँ दूध मिला पानी डालती है और पिता उसके दोनों पैर धोते हैं, फिर रोली और चावल से पैरों की पूजा करते हैं। फिर दोनों पंडित खड़े होकर दुल्हन और दूल्हे का गोत्र और उनकी तीन पीढ़ियों के नाम ज़ोर से, तीन-तीन बार बोलते हैं। यही वह घड़ी है जब दोनों वंशों के नाम सबके सामने लिए जाते हैं, और सब देखते हैं कि खांप का नियम निभाया गया है।

कब	ढुकाव से पहले, या कन्यादान से पहले मंडप में
कौन निभाता है	दोनों परिवारों के पंडित जी; दुल्हन के माता-पिता
कहाँ	दूल्हे के ठहरने की जगह, या विवाह-स्थल का मंडप
भाव	दो परिवारों का बंधन; सहमति और साक्षी

क्या होता है

1. **यह कहाँ होता है।** मुंबई के एक माहेश्वरी परिवार की लिखी हुई विवाह-पुस्तिका (reetrivaz.in) बताती है कि पुराने ज़माने में बारात को दुल्हन के घर जाते हुए किसी चौराहे पर रोका जाता था। दूल्हा घोड़ी से उतरता, दोनों पंडित छोटी-सी पूजा करके गोत्र बोलते, और मिलनी वहीं रास्ते पर हो जाती। आज वह परिवार वरणा मंडप में करता है; दूसरे परिवारों में लड़की वाले वरणा लेकर दूल्हे के ठहरने की जगह जाते हैं।
2. दुल्हन के पंडित जी दुल्हन के माता-पिता का गठजोड़ा बाँधते हैं, और गणेश जी की पूजा होती है।
3. **पैर धोना।** दुल्हन की माँ दूध मिला पानी डालती है और पिता दूल्हे के दोनों पैर धोते हैं। रोली और चावल से पैरों की पूजा होती है। दूल्हे को तिलक, गुड़, माला, कपड़ों का एक जोड़ा और एक लिफ़ाफ़ा मिलता है।
4. **गोत्रोच्चार।** दुल्हन के पंडित जी उसका गोत्र और तीन पीढ़ियों के नाम बोलते हैं। फिर दूल्हे के पंडित जी उसके लिए यही करते हैं। हर पंडित इसे तीन बार, ज़ोर से बोलता है।
5. **मिलनी।** दोनों पिता मिलते हैं और गले लगते हैं, और दोनों तरफ़ के रिश्तेदार जोड़ी-जोड़ी में एक-दूसरे से मिलते हैं। औरतें "स्वागत शुभ दी आज समधीजी" गा सकती हैं, जो समधी के स्वागत का गीत है।

हम ऐसा क्यों करते हैं

ससुर का सबके सामने एक जवान लड़के के पैर धोना उल्टा लग सकता है। पर जब आप जानते हैं कि पुराने भारतीय घरों में मेहमान का सत्कार कैसे होता था, तो बात समझ में आ जाती है। गृह्यसूत्र, यानी घर-गृहस्थी की वे पुरानी पोथियाँ जिन पर वैदिक विवाह टिका है, कुछ गिने-चुने ख़ास मेहमानों के पूरे स्वागत की विधि बताते हैं, और पारस्कर गृह्यसूत्र में दूल्हे का स्वागत इसी तरह होता है। माहेश्वरी स्रोत मधुपर्क का नाम नहीं लेते, जो उस पुराने स्वागत का शहद और दही था, लेकिन पैरों के लिए पानी और मेहमान की पूजा साफ़ उसी की गूँज है। एक शाम के लिए दूल्हा वह सबसे ज़रूरी मेहमान होता है जो दुल्हन के घर कभी आएगा।

परिवार की पुस्तिका गोत्रोच्चार का मक़सद एक ही पंक्ति में बताती है: सभा के सामने दुल्हन और दूल्हे दोनों का गोत्र और वंश बताना। माहेश्वरी समाज लुधियाना की रस्मों की सूची बताती है कि यह बताना ज़रूरी क्यों है: दुल्हन और दूल्हा "एक ही कुल या गोत्र के नहीं होने चाहिए"।

माहेश्वरियों के लिए यही वह घड़ी है जब खांप और उसका ऋषि गोत्र, जिनके बारे में भाग शून्य में बताया गया है, ज़ोर से बोले जाते हैं। आज ज़्यादातर परिवारों में नियम यह है कि अपनी खांप में शादी नहीं होती;

कुछ बड़े-बुज़ुर्गों को एक बड़ा नियम भी याद है, जिसमें माँओं की खांप भी छोड़ी जाती थी। यह नियम वंश का है, जैसा परिवार हमेशा से गिनता आया है। पंडितों का बोलना वह तरीका है जिससे पूरा हॉल गवाह बनता है कि नियम निभाया गया।

दो अलग-अलग आवाज़ों में तीन-तीन बार बोलने से किसी के लिए बाद में यह कहने की गुंजाइश नहीं रहती कि उसने सुना नहीं।

मेहमान क्या देखते हैं

दो पंडित नामों की सूची बोल रहे हैं और खाना इंतज़ार कर रहा है। असल में यहाँ पुराने ढंग से शादी का पक्का लेखा सबके सामने रखा जा रहा है: हर परिवार का वंश तीन पीढ़ियों तक, गवाहों के सामने, उसके अपने पंडित के मुँह से।

जड़ें **वैदिक संस्कार और समाज की रीत**

दूल्हे का मेहमान की तरह मान गृह्यसूत्र में दूल्हे के स्वागत की गूँज है; गोत्रोच्चार पंडित जी की सामान्य पद्धति से आता है। चौराहे वाला वरणा और मिलनी समाज की रीत हैं।

कुछ परिवारों में

अग्रवाल शादियों में कोरथ होता है, जब लड़की वालों के आदमी दूल्हे को न्योता देने जाते हैं। दोनों में से कोई माहेश्वरी स्रोत इसका नाम नहीं लेता; दूल्हे के ठहरने की जगह ले जाया गया वरणा इसके सबसे करीब है। लुधियाना की सूची में दूल्हे के पैर दुल्हन के माता-पिता नहीं, उसके मामा-मामी धोते हैं।

शहर की शादियों में चौराहे वाला वरणा अब नहीं होता, और परिवार की पुस्तिका इसे सिर्फ़ पुरानी रीत के रूप में दर्ज करती है। राजस्थानी शादी की बोली में जाला भी है, जब लड़की वालों की औरतें बारात का डेरा देखने जाती हैं; पूछिए कि आपके परिवार में यह होता था या नहीं। कुछ शादियों में गोत्रोच्चार छोटा होता है; कुछ में पंडित जी प्रवर और वेद भी बोलते हैं।

इसमें आपकी भूमिका

- **दुल्हन और दूल्हा:** नाम याद कीजिए। अपने पिता, दादा और परदादा के नाम, अपनी खांप और गोत्र लिख लीजिए, और अगर बड़ों को पता हो तो प्रवर, वेद और शाखा भी। यह सूची पहले से पंडित जी

को दे दीजिए। अपने वंश के नाम ज़ोर से बोले जाते सुनना अजीब भी लगता है और मन को छू भी जाता है।

- **दुल्हन के माता-पिता:** दूल्हे को अंदर लाने से पहले थाली, दूध मिला पानी और उसके कपड़े तैयार रखिए।
- **भाई-बहन और चचेरे-ममेरे भाई-बहन:** दोनों तरफ़ की मिलनी की जोड़ियों की सूची बनाइए और नाम पुकारने वाले को दे दीजिए। इससे "दूसरे वाले मामा" को ढूँढने की भागदौड़ बच जाती है।

बड़ों से पूछिए

1. हमारी खांप, गोत्र और तीन पीढ़ियों के नाम क्या हैं, और क्या हमारे पुरोहित जी प्रवर, वेद और शाखा भी बोलते हैं?

2. आपकी शादी में वरणा रास्ते पर हुआ था, दूल्हे के ठहरने की जगह पर, या मंडप में?

अध्याय 19

ढुकाव और तोरण: द्वार पर दूल्हा

दूल्हा · भाई-बहन



एक मिनट में

ढुकाव यानी बारात का दुल्हन के द्वार पर पहुँचना। दूल्हा घोड़ी पर बैठे-बैठे ही दरवाज़े के ऊपर लगे तोरण को नीम की डाली और अपनी कटार से सात बार मारता है। फिर चाँदी की चौकी पर दुल्हन की माँ उसका स्वागत करती है: दही से उसके माथे पर सिक्का चिपकाती है, उसकी छाती नापती है, कोट की पिन ले लेती है और उसकी नाक पकड़ती है। उनके साथ की औरतें नज़र से बचाने के लिए काजल लगाती हैं, शीशा दिखाती हैं, नीम फेरती हैं और झुनझुना बजाती हैं।

कब	शादी की शाम, जब बारात पहुँचती है
कौन निभाता है	तोरण पर दूल्हा; दरवाज़े पर दुल्हन की माँ, भाभी और चाची
कहाँ	दुल्हन के घर या विवाह-स्थल का दरवाज़ा
भाव	रक्षा; दो परिवारों का बंधन

क्या होता है

1. बारात दरवाज़े पर पहुँचती है। बारातियों को माला और गजरे दिए जाते हैं।
2. **तोरण।** मुंबई के एक माहेश्वरी परिवार की लिखी हुई विवाह-पुस्तिका (reetrivaz.in) के अनुसार दूल्हा घोड़ी पर बैठे-बैठे सजी हुई नीम की डाली और अपनी कटार से तोरण को सात बार मारता है। अगर तोरण अंदर लगा हो, तो वह पहले घोड़ी से उतर जाता है। माहेश्वरी समाज लुधियाना की रस्मों की सूची में वह नीम की छड़ी से तोरण को छूता है, और उसके बाद उससे घोड़ी से उतरने को कहा जाता है।
3. **चाँदी की चौकी पर।** दुल्हन की माँ चाँदी के रुपये से तिलक करती है और जमे हुए दही से वह सिक्का उसके माथे पर चिपका देती है। वह नेतरे की डोरी और अपने पल्लू से उसकी छाती को चार बार, आड़ा-तिरछा, नापती है। उसके कोट से कस की पिन निकालकर अपने पास रख लेती है। फिर उसकी नाक पकड़ती है। इसके बाद आरता होता है।
4. दुल्हन की भाभी काजल लगाती है। चाची शीशा दिखाती है और नीमझारी करती है, यानी हरी नीम की डाली को उसके कंधे से छाती तक चार बार नीचे की ओर फेरती है। एक और औरत उसके कान के पास खुनखुनिया बजाती है।
5. दूल्हे को अंदर ले जाया जाता है। आगे वरमाला और मामा फेरे हैं।

हम ऐसा क्यों करते हैं

तोरण मारने का कारण किसी माहेश्वरी स्रोत में नहीं मिलता। यह राजस्थान की रीत है, पंडित जी के पास इसका कोई मंत्र नहीं है, और परिवार जो कारण बताते हैं वे लोक में चली आ रही बातें हैं: कि दूल्हा दिखाता है कि वह जिस घर में ब्याह रहा है उसकी रक्षा कर सकता है, इसीलिए कटार चलती है; या कि जब पूरी बारात एक खुले दरवाज़े पर उमड़ती है, उस घड़ी नीम बुरी नीयत को दूर रखता है। दोनों बातें पूरे भरोसे से कही जाती हैं; दोनों में से कोई भी शास्त्र नहीं है। तोरण खुद जो कहता है, वह काफ़ी साफ़ है। दरवाज़े पर लगा तोरण बताता है कि यहाँ उत्सव है, और उसी के नीचे दूल्हा मुसाफ़िर नहीं रहता, अपनी दुल्हन के घर की देहरी पर खड़ा होता है।

इसके बाद जो होता है, उसमें ज़्यादातर रक्षा है। दही वाला सिक्का, काजल, शीशा, नीम और खुनखुनिया, ये सब नज़र से बचाव हैं, जो उस एक जगह पर इकट्ठे होते हैं जहाँ दूल्हा सबसे ज़्यादा लोगों की नज़रों के सामने होता है। नापने पर ध्यान दीजिए: घर से निकलने से पहले उसकी अपनी माँ ने भी पल्लू और नेतरे से यही किया था (अध्याय 17)। दोनों में से कोई स्रोत इसे नहीं समझाता, और यह बात ध्यान खींचती है

कि एक ही दिन दोनों माँएँ ऐसा करती हैं। परिवार की पुस्तिका कस की पिन लेकर रख लेने की बात भी दर्ज करती है, और इसका भी कोई कारण नहीं देती।

लोग सबसे ज़्यादा नाक के बारे में पूछते हैं। यह एक मज़ाक है, ऐसा मज़ाक जिसकी इजाज़त है, और यह बहुत पुराना है। रसेल और हीरालाल का मध्य प्रांत का सर्वेक्षण, जो 1916 में छपा, माहेश्वरी शादियों के बारे में दर्ज करता है कि "दुल्हन की माँ उसके गले में एक दुपट्टा डालती है, उसकी नाक पकड़ती है और उसे खींचकर मंडप में ले जाती है"। वही सर्वेक्षण आगे जोड़ता है कि "कभी-कभी मज़ाक में दूल्हे को घुटनों के बल बैठाकर एक जूते को प्रणाम करवाया जाता है"। सौ साल से भी ज़्यादा बाद परिवार की पुस्तिका में माँ ठीक इसी जगह उसकी नाक पकड़ती है। इस किताब की बहुत कम रीतें इतना पुराना लिखा हुआ सबूत दिखा सकती हैं।

मेहमान क्या देखते हैं

एक आदमी जो बस बैठना चाहता है, और उसके चारों ओर खींचतान, हँसी और हलचल। असल में जो हो रहा है, वह यह है कि लड़की वाले उसे अपनी देखरेख में ले रहे हैं: बुरी नज़र से उसकी रक्षा कर रहे हैं, और उसे छेड़ रहे हैं, जैसे कोई परिवार अपने ही किसी सदस्य को छेड़ता है।

जड़ें **समाज की रीत और रक्षा या लोक-विश्वास**

तोरण मारना और सास का स्वागत राजस्थानी और माहेश्वरी रीत हैं, जिन्हें पंडित जी की पोथियाँ नहीं, परिवार आगे बढ़ाते हैं। नीम, काजल, शीशा, दही वाला सिक्का और खुनखुनिया नज़र से बचाव के विश्वास हैं।

कुछ परिवारों में

कई अग्रवाल घरों में दूल्हा तोरण को सिर्फ़ छूता है; माहेश्वरी ढंग, घोड़ी पर बैठे-बैठे सात बार मारना, ज़्यादा ख़ास है। शहर के विवाह-स्थलों पर तोरण अक्सर किसी अस्थायी दरवाज़े पर लगा होता है, और हो सकता है घोड़ी वहाँ तक पहुँचे ही नहीं। कुछ परिवारों ने नाक पकड़ना ठीक न मानकर छोड़ दिया है; कुछ में यही वह पल है जिसका सबको इंतज़ार रहता है।

दरवाज़े पर कौन क्या करता है, यह भी अलग-अलग होता है। इस किताब के अग्रवाल संस्करण में दुल्हन की बहन दूल्हे पर नीम फेरती है; परिवार की पुस्तिका में यह चाची करती है। पूछिए कि आपके परिवार में कौन-सी औरत कौन-सा काम करती है।

इसमें आपकी भूमिका

- **दूल्हा:** जैसे ही बारात धीमी हो, नीम की डाली और कटार हाथ के पास रखिए। फिर चौकी पर बिना हिले खड़े रहिए और सास को रस्म पूरी करने दीजिए। यह पहली बार है जब वे आपको परिवार के सदस्य की तरह अपना रही हैं, और उनका ध्यान इस पर जाएगा कि आप उनकी ओर देख रहे थे या नहीं।
- **दुल्हन के भाई-बहन और चचेरे-ममेरे भाई-बहन:** बैंड की आवाज़ सुनाई देने से पहले चाँदी की चौकी, दही, सिक्का, शीशा, हरी नीम की डाली और खुनखुनिया तैयार रखिए।
- **दूल्हे के भाई-बहन और चचेरे-ममेरे भाई-बहन:** पक्का कीजिए कि बारात सच में दरवाज़े पर रुके, जो सुनने में जितना आसान लगता है उतना है नहीं।

बड़ों से पूछिए

1. क्या हमारे परिवार में दूल्हा तोरण मारता है, और कितनी बार, नीम से, कटार से या दोनों से?

2. आपकी शादी में क्या दुल्हन की माँ ने दूल्हे की नाक पकड़ी थी, और क्या उन्होंने सिक्का दही से चिपकाया था?

अध्याय 20

सुवाली और वरमाला: मालाएँ

दुल्हन · दूल्हा · भाई-बहन



एक मिनट में

मालाओं से पहले दुल्हन की बहन या सहेली सुवालियों की एक लड़ी लाती है। सुवाली यानी गेहूँ की छोटी तली हुई टिकिया। लड़ी में नीले धागे पर सात सुवालियाँ होती हैं, और साथ में पके चावल का एक गोला। दुल्हन उसमें चार सुवालियाँ और पिरोती है और चावल का गोला दूल्हे के सिर के ऊपर से फेंकती है। फिर मालाएँ होती हैं, पहले दुल्हन पहनाती है। माला उसकी पसंद का निशान है, जो सबके सामने ज़ाहिर होती है; यह बाद की परंपरा है, वैदिक संस्कार नहीं।

कब	शादी की शाम, ढुकाव के बाद और मामा फेरों से ठीक पहले
कौन निभाता है	दुल्हन और दूल्हा; सुवालियों के साथ उसकी बहन या सहेली
कहाँ	विवाह-स्थल का स्टेज
भाव	सहमति और साक्षी

क्या होता है

1. दूल्हा स्टेज पर इंतज़ार करता है। दुल्हन को उसके घरवाले उसके पास लाते हैं।
2. **सुवाली।** मुंबई के एक माहेश्वरी परिवार की लिखी हुई विवाह-पुस्तिका (reetrivaz.in) बताती है कि उसकी सहेली या बहन नीले धागे में पिरोई सात सुवालियों की माला और पके चावल का एक गोला लाती है।
3. दुल्हन चार सुवालियाँ और लेती है और अपने हाथ से उन्हें माला में पिरोती है।
4. दूल्हे की ओर मुँह करके वह चावल का गोला दोनों हाथों में लेती है और उसके सिर के ऊपर से फेंकती है।
5. **वरमाला।** पहले दुल्हन दूल्हे को माला पहनाती है, फिर दूल्हा उसे। पंखुड़ियाँ उड़ती हैं और मेहमान तालियाँ बजाते हैं।
6. परिवार की पुस्तिका में, दूल्हा घर से जो लक्ष्मी वाला सेवरा पहनकर आया था (अध्याय 17), वह अब मामा फेरों से पहले दुल्हन के सिर पर बाँधा जाता है (पुस्तिका एक जगह दाईं ओर कहती है और दूसरी जगह बाईं ओर)। आजकल अक्सर इसे पहले ही बरी के साथ भेज दिया जाता है।

हम ऐसा क्यों करते हैं

माला को समझाना आसान है, और इसी को सबसे ज़्यादा ग़लत समझा जाता है। महाकाव्यों और पुराणों में स्वयंवर के समय राजकुमारी वरों के बीच चलती थी और जिसे चुनती, उसके गले में माला डाल देती थी: दमयंती ने नल को ऐसे ही चुना, और द्रौपदी के स्वयंवर का अंत अर्जुन के गले में उसकी माला से हुआ। तुलसीदास के रामचरितमानस में, जो उत्तर भारत के ज़्यादातर परिवारों की जानी-पहचानी रामायण है, राम के शिव का धनुष तोड़ने के बाद सीता उन्हें जयमाला पहनाती हैं। वाल्मीकि की पुरानी कथा में धनुष तो है, पर माला नहीं; वहाँ जनक बस जीतने वाले को अपनी बेटी दे देते हैं। शाम में और जो भी हो, माला दुल्हन की पसंद का निशान है, जो सबके सामने दिखाई जाती है।

इसीलिए ज़्यादातर परिवारों में पहले दुल्हन माला पहनाती है। यह क्रम बड़े-छोटे का नहीं है; यह याद दिलाता है कि माला देना उसका हक़ था। जब दूल्हा जवाब में अपनी माला पहनाता है, तो दोनों परिवारों के सामने, बिना एक शब्द बोले, दोनों कह देते हैं "मैंने तुम्हें स्वीकार किया"।

यह भी साफ़ समझ लीजिए कि वरमाला क्या नहीं है। गृह्यसूत्र, जो अग्नि, पाणिग्रहण और सात कदमों की बात करते हैं, मालाओं के बारे में कुछ नहीं कहते। विवाह इस स्टेज पर नहीं होता; वह शाम को आगे चलकर अग्नि के सामने होता है।

सुवालियों को समझाना थोड़ा मुश्किल है। परिवार की पुस्तिका दुल्हन की जोड़ी हुई चार सुवालियों को "शगुन" कहती है, यानी शुभ निशानी, और न उनका, न चावल के गोले का कोई और कारण बताती है। मारवाड़ी रीतों की आम किताबों में दूल्हे के सिर पर सात सुहाली रखने की बात आती है, तो यह रीत साझी है; सात की माला, चार जोड़ना और चावल का गोला फेंकना माहेश्वरी पुस्तिका का ज़्यादा पूरा रूप है। इस इशारे का मतलब काफ़ी सीधा है: लड़की वालों की ओर से खाना, जो दुल्हन माला पहनाने से पहले अपने हाथ से दूल्हे को देती है।

जड़ें **शास्त्रीय या पौराणिक विधि और समाज की रीत**

वर चुनने की माला महाकाव्यों और पुराणों के स्वयंवर से आई है, गृह्यसूत्रों से नहीं। सुवालियाँ और चावल का गोला मारवाड़ी और माहेश्वरी रीत हैं।

कुछ परिवारों में

परिवार की पुस्तिका बताती है कि कुछ परिवार मालाओं से पहले मंगलाष्टक पढ़ते हैं, यानी शुभ आशीर्वाद के श्लोक। मंगलाष्टक सबसे ज़्यादा महाराष्ट्र की शादियों में जाना जाता है, और पुस्तिका मुंबई के एक परिवार की है, लेकिन पुस्तिका यह नहीं बताती कि उसके परिवारों ने इसे कहाँ से लिया। अगर आपके यहाँ पढ़ा जाता है, तो पूछिए कि यह कैसे आया।

फिर उठाने वाली बात है। जैसे ही दुल्हन पास आती है, दूल्हे के दोस्त उसे ऊपर उठा लेते हैं ताकि दुल्हन का हाथ न पहुँचे, और जवाब में दुल्हन के भाई उसे उठा लेते हैं। कुछ परिवारों को यह बहुत अच्छा लगता है; कुछ को लगता है कि यह शोभा नहीं देता। यह मज़ाक है, रस्म नहीं, और इस पर कुछ भी टिका नहीं है। पहले से तय कर लेना आसान है कि किसी को नहीं उठाया जाएगा।

इसमें आपकी भूमिका

- **दुल्हन:** चार सुवालियाँ जल्दी पिरोने का अभ्यास कर लीजिए; स्टेज पर भीड़ होगी। फिर माला पहनाने में जल्दी मत कीजिए। यह आपकी पसंद दिखाई जा रही है, और यह पल एक सेकंड ज़्यादा भी चल सकता है।
- **दूल्हा:** माला और चावल के गोले के लिए सिर थोड़ा झुका लीजिए। मेहमान इस पर ध्यान देते हैं।
- **दुल्हन की बहन या सहेली:** सुवाली की माला और चावल का गोला आपकी ज़िम्मेदारी है। एक दिन पहले सात सुवालियाँ नीले धागे में पिरो लीजिए, चार अलग रखिए, और दुल्हन के बगल में खड़ी रहिए।

बड़ों से पूछिए

1. क्या हमारे परिवार में वरमाला से पहले सुवाली की माला और चावल का गोला लाया जाता है, और उसमें कितनी सुवालियाँ होती हैं?

2. क्या हमारे परिवार में लक्ष्मी वाला सेवरा दुल्हन को बाँधा जाता है, और यह स्टेज पर होता है या बरी के साथ भेजा जाता है?

अध्याय 21

मामा फेरे: बाहर के फेरे

दुल्हन · दूल्हा · भाई-बहन



एक मिनट में

मालाओं के ठीक बाद, कोई भी अग्नि जलने से पहले, दुल्हन के मामा उसके पीछे खड़े होकर उसके कंधों पर हाथ रखते हैं और उसे खड़े हुए दूल्हे के चारों ओर घुमाते हैं, ज़्यादातर परिवारों में तीन बार। चार लड़कियाँ कोनों पर फूलों की टोकरियाँ लिए खड़ी होती हैं, और दुल्हन गुज़रते हुए दूल्हे पर पंखुड़ियाँ बरसाती है। समाज इसे अपनी उत्पत्ति की कथा से समझाता है, जिसमें महेश और पार्वती ने पत्नियों से उनके पतियों के फेरे लगवाए और विवाह फिर से जुड़ गए।

कब	वरमाला के ठीक बाद, अग्नि की विधियों से पहले
कौन निभाता है	दुल्हन के मामा, पंडित जी के तिलक के बाद
कहाँ	स्टेज पर, या दरवाज़े पर
भाव	दो परिवारों का बंधन; सहमति और साक्षी

क्या होता है

1. पंडित जी दुल्हन के मामा को तिलक करते हैं।
2. दूल्हा बीच में खड़ा होता है। सजी हुई फूलों की टोकरियाँ लिए चार लड़कियाँ स्टेज के चारों कोनों पर खड़ी हो जाती हैं।
3. मामा दुल्हन के पीछे खड़े होकर दोनों हाथ उसके कंधों पर रखते हैं और उसे दूल्हे के चारों ओर तीन बार घुमाते हैं, दूल्हे की बाईं ओर से घूमकर दाईं ओर। मुंबई के एक माहेश्वरी परिवार की लिखी हुई विवाह-पुस्तिका (reetrivaz.in) में यह ऐसे ही लिखा है।
4. हर टोकरी के पास दुल्हन दोनों हाथों में फूल लेती है और गुज़रते हुए उन्हें दूल्हे पर डालती है।
5. फिर दुल्हन आगे चलती है, दूल्हा उसकी चुनरी का एक सिरा थामे रहता है, और दोनों मायां (अध्याय 15) को प्रणाम करते हैं। लौटते समय दूल्हा आगे होता है।
6. इसके बाद अग्नि की विधियाँ होती हैं (अध्याय 22 से 24)। परिवार की पुस्तिका बताती है कि अग्नि के फेरों के बाद मंडप में "मामा सेवरा" चार बार गाया या किया जाता है, जिसमें मामा का नाम लिया जाता है।

हम ऐसा क्यों करते हैं

किसी भी गृह्यसूत्र में इस रस्म का वर्णन नहीं है। समाज इसे अपनी कथा से समझाता है, वह उत्पत्ति कथा जो भाग शून्य में पूरी दी गई है। राजा का बेटा और उसके बहत्तर साथी ऋषियों के यज्ञ में बाधा डालने पर पत्थर बन गए थे। उनकी पत्नियों ने प्रार्थना की, पार्वती ने महेश से विनती की, और महेश ने इस शर्त पर उन्हें फिर से जीवित किया कि वे हथियार छोड़कर व्यापार अपनाएँगे। अब वे वैश्य हो गए थे।

समाज की कथा के अनुसार, फिर महेश ने पत्नियों से कहा कि वे अपने पतियों के तीन फेरे लगाएँ, ताकि वे भी वैश्य वर्ण में आ जाएँ, और विवाह फिर से जुड़ गए। हिंदी विवेक में छपा समाज का एक लेख कहता है, "तब से यह रीत चली आ रही है।" वही लेख दरवाज़े पर होने वाले तीन फेरों को उन निशानियों में गिनता है जो माहेश्वरियों को दूसरे मारवाड़ी वैश्य समाजों से अलग करती हैं।

इस कथा के कई रूप हैं, और वे मायने रखते हैं, क्योंकि रस्म भी उन्हीं के हिसाब से चलती है। कुछ कथाओं में पति-पत्नी ने साथ मिलकर नीम के पेड़ के फेरे लगाए। कुछ और कथाओं में, जो मुंबई माहेश्वरी समाज, themaheshwari.com और इंडपीडिया पर समाज के एक लेख में मिलती हैं, पत्नियों ने खुद पार्वती के चार फेरे लगाए। भक्ति पर लिखने वाले एक लेखक कहते हैं कि फेरे महेश और पार्वती की मूर्ति के चारों ओर लगते हैं। ज़्यादातर परिवार तीन फेरे लेते हैं; कुछ चार लेते हैं, और उसी के हिसाब से कथा सुनाते हैं। आपके परिवार की जो गिनती है, वही ठीक है।

अब गिनती की बात। बाहर के तीन फेरे और अग्नि के चार फेरे (अध्याय 23) मिलकर सात होते हैं। कुछ परिवार बाहर तीन और अग्नि के सात गिनते हैं। जो भी हो, माहेश्वरी विवाह अपने सात फेरों तक कुछ हद तक अपनी ही स्थापना की कथा के रास्ते पहुँचता है।

मामा ही क्यों? कोई स्रोत नहीं बताता। स्रोत इतना ज़रूर दिखाते हैं कि माहेश्वरी शादी के अहम मोड़ों पर माँ का भाई कितनी बार खड़ा होता है: उसका मायरा कपड़े और चूड़ा लाता है (अध्याय 11), वह बच्चे को पाटे से उठाता है (अध्याय 14), वह दुल्हन को मंडप में लाता है (अध्याय 22), और अग्नि के पास उसका सेवरा गाया जाता है। यहाँ वह दुल्हन के कंधों पर हाथ रखे उसके पीछे चलता है, और इसी बीच समाज की स्थापना की कथा फिर से दोहराई जाती है।

लिखे हुए सबूत के बारे में एक सच्ची बात। उत्पत्ति कथा का सबसे पुराना बाहरी वर्णन, जो 1916 में लिखा गया, उसमें पत्थर, पत्नियाँ और शिव का व्यापार करने का आदेश तो है, पर फेरों का कोई ज़िक्र नहीं। फेरे समाज की अपनी कथाओं में और खुद इस रस्म में जीवित हैं। विद्वान लॉरेंस बैब इस कथा को एक ऐसे समूह की कहानी मानते हैं जिसने हिंसा छोड़ी और व्यापार के ज़रिए फिर से समाज में जुड़ा। मामा फेरों में हर दुल्हन उसी स्थापना के पल से होकर गुज़रती है।

मेहमान क्या देखते हैं

पंखुड़ियों और फोटो वाला एक सुंदर पल। असल में यहाँ वह रस्म हो रही है जो माहेश्वरी शादी की सबसे बड़ी पहचान है: दुल्हन, जिसके पीछे उसका ननिहाल खड़ा है, वे फेरे दोहराती है जिनसे समाज के पहले विवाह फिर से पूरे हुए थे।

जड़ें **समाज की रीत**

मामा फेरों का आधार गृह्यसूत्रों में नहीं है। इसे पूरी तरह समाज की कथा और उसके परिवार आगे बढ़ाते हैं, और ठीक इसीलिए यह शादी का सबसे माहेश्वरी पल है।

कुछ परिवारों में

परिवार इन फेरों को मामा फेरे या बाहर के फेरे कहते हैं। हिंदी विवेक का लेख इन्हें दरवाज़े पर रखता है; परिवार की पुस्तिका स्टेज पर, और शहर की शादियाँ आम तौर पर स्टेज वाला ढंग अपनाती हैं। माहेश्वरी समाज लुधियाना की रस्मों की सूची बस इतना कहती है कि दुल्हन मंच पर दूल्हे के तीन फेरे लगाती है। अगर दुल्हन के मामा न हों, तो बड़ों से पूछिए कि उनकी जगह कौन खड़ा होता है; स्रोत यह नहीं बताते।

इसमें आपकी भूमिका

- **दुल्हन:** हर टोकरी पर दोनों हाथों में फूल लीजिए। धीरे चलिए; रास्ता आपके मामा दिखा रहे हैं।
- **दूल्हा:** बीच में बिना हिले खड़े रहिए और पंखुड़ियों को गिरने दीजिए। उसके बाद, जब दोनों मायां के पास जाएँ, तो उसकी चुनरी का सिरा थामे रहिए।
- **मामा:** पंडित जी से पहले ही पूछ लीजिए कि किस ओर से शुरू करना है। उसके कंधों पर आपके हाथ, बस यही पूरी रस्म है।
- **भाई-बहन और चचेरे-ममेरे भाई-बहन:** आप में से चार कोनों पर फूलों की टोकरियाँ थामिए। उन्हें भरपूर भरिए।

बड़ों से पूछिए

1. आपकी शादी में कितने फेरे हुए थे, किसके चारों ओर, और हमारे परिवार में इन्हें क्या कहते हैं?

2. इन्हें समझाने के लिए हमारा परिवार पार्वती की कथा का कौन-सा रूप सुनाता है?

अध्याय 22

कन्यादान, गठजोड़ा और हथलेवा

दुल्हन दूल्हा



एक मिनट में

मंडप में दुल्हन के मामा उसे लेकर आते हैं। उसके पिता दूल्हे को चार कपड़े देते हैं, हल्दी से बेटी के हाथ पीले करते हैं, और माँ के साथ मिलकर, संकल्प लेकर और सोना देकर, उसे दूल्हे को सौंपते हैं। दूल्हा दुल्हन का दायाँ हाथ थामता है, दोनों हथेलियों के बीच मेहंदी का एक गोला होता है: यही हथलेवा है, वैदिक पाणिग्रहण। पंडित जी दूल्हे का गठजोड़ा दुल्हन की ओढ़नी से बाँधते हैं, और गाँठ में मूंग और चावल होते हैं।

कब	मंडप में, मामा फेरों के बाद और अग्नि के फेरों से पहले
कौन निभाता है	पंडित जी; दुल्हन के माता-पिता; मामा उसे लेकर आते हैं
कहाँ	मंडप में, अग्नि के सामने गद्दियों पर बैठकर
भाव	सहमति और साक्षी; दो परिवारों का बंधन

क्या होता है

1. **शुरुआत।** मुंबई के एक माहेश्वरी परिवार की लिखी हुई विवाह-पुस्तिका (reetrivaz.in) इसका क्रम बताती है। दुल्हन के माता-पिता का गठजोड़ा बाँधा जाता है। वे और दूल्हा गणेश जी, ग्रहों और कलश की पूजा करते हैं, फिर वर पूजा होती है, और अग्नि की स्थापना होती है। दुल्हन दूल्हे की दाईं ओर बैठती है। पुस्तिका लिखती है कि अब सोफ़े आ गए हैं, "पर विधान गद्दियों पर बैठकर पूजा का है"।
2. दुल्हन के मामा उसे मंडप में लाते हैं, और वह अपनी देव पूजा करती है।
3. **कपड़े और हल्दी।** उसके पिता दूल्हे को चार कपड़े देते हैं; दूल्हा दो कपड़े दुल्हन को पहनने के लिए देता है और दो खुद पहनता है। विधि में दुल्हन और दूल्हा पहली बार एक-दूसरे को देखते हैं। पिता हल्दी से बेटी के हाथ पीले करते हैं।
4. **कन्यादान।** माता-पिता संकल्प लेते हैं, जिसमें गोत्र और तीन पीढ़ियों के नाम तीन बार बोले जाते हैं। वे दूल्हे को सोना देते हैं, उसके हाथ में एक अंगूठी रखी जाती है; पुस्तिका कहती है कि कन्यादान में सोने के दान का महत्व है। इसके बाद गोदान होता है, यानी गाय के नाम पर दिया जाने वाला दान। जोड़ा दूसरी बार एक-दूसरे को देखता है।
5. **हथलेवा।** पंडित जी दोनों के दाएँ हाथ जोड़ते हैं, हथेलियों के बीच मेहंदी का एक गोला होता है। यह मेहंदी पहले से दुल्हन की बुआ और फूफा, या उसकी बहन और जीजा सिल पर पीसते हैं। दोनों के बीच कपड़े का एक पर्दा, अंतरपट, पकड़ा जाता है।
6. **गठजोड़ा।** अग्नि के फेरों से पहले पंडित जी दूल्हे के गठजोड़े का कपड़ा दुल्हन की ओढ़नी से बाँधते हैं, और गाँठ में मूंग, चावल, हल्दी की गाँठ, सुपारी और एक रुपया होता है।

हम ऐसा क्यों करते हैं

हाथों से शुरू करते हैं, जो सबसे पुराना हिस्सा है। पारस्कर गृह्यसूत्र में दूल्हा दुल्हन का हाथ इन शब्दों के साथ थामता है: "सौभाग्य के लिए मैं तुम्हारा हाथ थामता हूँ, ताकि तुम मुझ पति के साथ बुढ़ापे तक जियो।" पाणिग्रहण, यानी हाथ थामना, इतना अहम है कि यह संस्कृत में खुद विवाह के लिए एक पुराना शब्द बन गया। परिवार की पुस्तिका इसका मतलब सीधे शब्दों में बताती है: दूल्हा जीवन भर दुल्हन की देखभाल की ज़िम्मेदारी लेता है। मेहंदी के दिन (अध्याय 12) दुल्हन की दाईं हथेली पर जो खाली गोल जगह छोड़ी गई थी, वह इसी रंग के गोले के लिए रखी गई थी।

कन्यादान इसी पल को माता-पिता की ओर से देखता है। सूत्रों और धर्मशास्त्र की परंपरा में पिता अपनी बेटी को सौंपता है, और दूल्हा गवाहों के सामने ज़िम्मेदारी स्वीकार करता है। यानी ज़िम्मेदारी दूल्हे पर

आती है। "हाथ पीले करना" बेटी की शादी के लिए रोज़ की बोली का मुहावरा है, और यहाँ पिता सच में ऐसा करते हैं।

गाँठ एक ऐसा निशान है जिसे पीछे की कतार में बैठा आदमी भी समझ लेता है: अब से दोनों में से कोई भी, दूसरे के बिना कुछ नहीं करेगा। गृह्यसूत्र कपड़ों को साथ बाँधने का वर्णन नहीं करते; यह बाद की रीत से आया है। इस किताब के अग्रवाल संस्करण में दूल्हे की बहन गाँठ बाँधती है। परिवार की पुस्तिका में यह पंडित जी करते हैं।

"दान" शब्द के बारे में

"दान" का मतलब है भेंट, और कई युवा पाठकों को बेटी का दान ऐसा लगता है मानो कोई जायदाद सौंपी जा रही हो। यह असहजता सच्ची है और इसे खुलकर कहना ठीक है। रस्म के अपने शब्द भरोसे की और दूल्हे की ज़िम्मेदारी की बात करते हैं; वे दूल्हे का लिया हुआ वचन हैं, कोई सौदा नहीं।

एक माहेश्वरी परिवार के पास इसका अपना जवाब है। परिवार की पुस्तिका दर्ज करती है कि शादी के बाद लड़के वाले दुल्हन के शहर की किसी गोशाला या मंदिर को कुछ रकम या चाँदी की कोई चीज़ देते हैं, "बहू लाने की ख़ुशी में, और बेटी का दान लेने के भार से मुक्त होने के लिए" (अध्याय 26)। यह एक परिवार का चलन है, कोई नियम नहीं, लेकिन इससे पता चलता है कि परंपरा के भीतर रहकर भी इस सवाल पर सोचा गया है।

आज परिवार इसे अलग-अलग ढंग से निभाते हैं: कहीं माता-पिता दोनों साथ मिलकर दान करते हैं, कहीं दुल्हन अपनी सहमति ज़ोर से कहती है, कहीं कन्या-समर्पण शब्द बोला जाता है, यानी सौंपना। यह किताब इस पर कोई फ़ैसला नहीं सुनाती।

जड़ें **वैदिक संस्कार और शास्त्रीय या पौराणिक विधि**

पाणिग्रहण पारस्कर गृह्यसूत्र में है। कन्यादान गृह्यसूत्र और बाद के धर्मशास्त्र पर टिका है। गठजोड़ा और हथलेवे की मेहंदी समाज की रीत हैं।

कुछ परिवारों में

क्रम अलग-अलग होता है। माहेश्वरी समाज लुधियाना की रस्मों की सूची में दान अग्नि के फेरों के बाद आता है, जब मामा दुल्हन को मंच से ले आते हैं। अपने पंडित जी से पूछिए कि वे कौन-सा क्रम मानते हैं।

परिवार की पुस्तिका में अंतरपट दो बार आता है। यह महाराष्ट्र और गुजरात की शादियों में ज़्यादा जाना जाता है; यह माहेश्वरी रीत में वहीं से आया या नहीं, इसका फ़ैसला कोई स्रोत नहीं करता।

इसमें आपकी भूमिका

- **दुल्हन:** मेहंदी के दिन अपनी दाईं हथेली की वह गोल जगह खाली रखिए। अगर आप अपनी सहमति ज़ोर से कहना चाहती हैं, तो पंडित जी को पहले बता दीजिए।
- **दूल्हा:** जब पंडित जी हाथ थामने का मतलब समझाएँ, तो ध्यान से सुनिए। यह वचन सिर्फ़ आपका है; ज़रूरत हो तो उनसे इसका मतलब हिंदी में पूछ लीजिए।
- **दोनों:** मेहंदी का गोला रखे जाने के बाद हाथ हिलाइए मत। अगर हिलाए, तो रंग सबको बता देगा।

बड़ों से पूछिए

1. आपकी शादी में दुल्हन को मंडप में कौन लाया था, और गठजोड़ा किसने बाँधा था?

2. हमारे परिवार में कन्यादान अग्नि के फेरों से पहले होता है या बाद में, और गाँठ में क्या-क्या डाला जाता है?

अध्याय 23

लाजाहोम, शिला और अग्नि के चार फेरे

दुल्हन · दूल्हा · भाई-बहन



एक मिनट में

यह अग्नि के सामने होने वाली रस्म है। दुल्हन का भाई उसकी अंजलि में खील भरता है, और वह उसे आग में चढ़ाती है। हर फेरे पर वह एक छोटे पत्थर पर पैर रखती है, और उससे कहा जाता है कि वह इस पत्थर जैसी अटल रहे। माहेश्वरी परिवारों में अग्नि के चार फेरे होते हैं: तीन में दुल्हन आगे रहती है, चौथे में दूल्हा। पहले हो चुके तीन मामा फेरों को मिलाकर ये सात हो जाते हैं। ये शादी की सबसे पुरानी रस्मों में से हैं।

कब	मंडप में, हथलेवे के बाद
कौन निभाता है	पंडित जी; दूल्हा और दुल्हन; खील के लिए दुल्हन का भाई
कहाँ	मंडप में हवन कुंड के चारों ओर
भाव	सहमति और साक्षी; दो परिवारों का बंधन
इस मौके का गीत	"म्हारी सरब सुहागण बनड़ी फेरा जी बैठी", हर फेरे के लिए एक अंतरा

क्या होता है

1. पंडित जी मातृकाओं और नवग्रहों वाला पाटा एक ओर हटा देते हैं, ताकि फेरे सिर्फ़ अग्नि के हों। गठजोड़े से बँधे दूल्हा-दुल्हन खड़े होते हैं।
2. दुल्हन का भाई अपने हाथों से उसकी जुड़ी हुई हथेलियों में खील (लाजा) डालता है। पंडित जी मंत्र पढ़ते हैं और दुल्हन तीन आहुतियों में खील आग में डालती है। यही लाजाहोम है।
3. दुल्हन आगे रहती है, दोनों अग्नि का फेरा लेते हैं, और वह एक छोटे पत्थर पर पैर रखती है (शिलारोहण)। खील, आहुति, फेरा और पत्थर, यह क्रम तीन बार होता है।
4. चौथे फेरे में दूल्हा आगे चलता है। फिर तीन आहुतियाँ होती हैं और पत्थर को फिर छुआ जाता है। इसके बाद दुल्हन बची हुई खील सूप के किनारे से आग में डाल देती है।
5. फेरों के दौरान औरतें फेरों का गीत गाती हैं। मुंबई के एक माहेश्वरी परिवार की लिखी हुई विवाह-पुस्तिका (reetrivaz.in) के अनुसार इसके बाद मामा का नाम लेकर "मामा सेवरा" चार बार गाया जाता है।

हम ऐसा क्यों करते हैं

माहेश्वरी शादी में फेरे गिनिए तो चार ही निकलते हैं। दूसरी शादियाँ देखने वाले मेहमान को सात की उम्मीद होती है, और उसे लग सकता है कि किसी से गिनती में चूक हो गई। चूक किसी से नहीं हुई: सबसे पुराने ग्रंथ के ज़्यादा करीब सात नहीं, चार फेरे हैं।

उत्तर भारत के ज़्यादातर पंडित पारस्कर गृह्यसूत्र को मानते हैं। उसमें दुल्हन का भाई भुना हुआ अनाज उसकी जुड़ी हथेलियों में डालता है; वह उसे आग में चढ़ाती है, और दोनों अग्नि का फेरा लेते हैं। ऐसा तीन बार होता है। फिर ओल्डनबर्ग के अनुवाद में लिखा है: "चौथी बार वह सारा भुना अनाज टोकरी की नोक से 'भगाय स्वाहा' कहकर आग में डाल देती है", और इस बार फेरा नहीं होता। माहेश्वरी परिवार खील वाले तीन फेरे रखते हैं, दूल्हे के आगे रहने वाला चौथा फेरा जोड़ते हैं, और फिर भी आख़िरी अनाज सूप से ही डालते हैं। यह चौथा फेरा ग़लती नहीं, बल्कि यहाँ की अपनी जोड़ी हुई बात है; राजस्थान की राजपूत शादियों में भी यही चार फेरे दर्ज हैं। आजकल बहुत से पंडित अग्नि के सात फेरों को ही नियम मानते हैं; माहेश्वरी गिनती द्वार पर तीन और अग्नि के चार फेरों से सात तक पहुँचती है।

भाई की भूमिका इस रात का सबसे स्नेह भरा पल है। सूत्र का मंत्र उसके पति की लंबी उम्र और उसके अपने रिश्तेदारों की ख़ुशहाली माँगता है, यानी उसका पीहर भी उसकी प्रार्थना में बना रहता है। परिवार की पुस्तिका उसकी तुलना धान के पौधे से करती है, जो दूसरे खेत में रोपे जाने पर ही फल देता है। भाई वचन देता है कि वह सारी ज़िंदगी उसकी अंजलि प्यार और मदद से भरता रहेगा।

पत्थर की बात सीधी है। सूत्र में दूल्हा उससे पत्थर पर पैर रखने को कहता है: "इस पत्थर पर चढ़ो; पत्थर की तरह अटल रहो।" परिवार की पुस्तिका इसमें जोड़ती है कि जब मिट्टी का ढेला पत्थर से टकराता है, तो ढेला टूटता है, पत्थर कभी नहीं।

इन सबके पीछे अग्नि है। वैदिक सोच में अग्नि देवताओं तक आहुति पहुँचाते हैं और अपने सामने दिए गए हर वचन को देखते हैं। पाटा हटाना इसी बात से मेल खाता है: इन फेरों में साक्षी सिर्फ़ अग्नि हैं।

मेहमान क्या देखते हैं

मेहमान देखते हैं कि दूल्हा-दुल्हन आग के चारों ओर घूम रहे हैं और एक नौजवान दुल्हन के हाथों में बार-बार खील डाल रहा है। असल में उसका भाई उस घड़ी उसके साथ खड़ा है जब वह उसके परिवार से विदा हो रही है, और औरतों का गीत एक-एक फेरे के साथ उसे बाबुल के घर से बाहर गिनता जाता है। इसका चौथा अंतरा साफ़ कह देता है: "चौथो फेरो ले बाई म्हारी हुई ए पराई", यानी चौथे फेरे के साथ, मेरी बेटी, तू पराई हो गई।

जड़ें **वैदिक संस्कार**

लाजाहोम, शिला और अग्नि के फेरे पारस्कर गृह्यसूत्र (I.6 से I.7) में हैं। दूल्हे के आगे रहने वाला चौथा फेरा माहेश्वरी रीत है, जो राजस्थान के और समाजों में भी चलती है और इसी नींव पर बनी है।

कुछ परिवारों में

माहेश्वरी समाज लुधियाना की रस्मों की सूची भी परिवार की पुस्तिका से मेल खाती है: चार फेरे, आख़िरी में दूल्हा आगे, भाई का खील डालना, और एक छोटा पत्थर जिसे दुल्हन पैर से छूती है।

फिर भी पंडित के हिसाब से तरीका बदलता है। आजकल बहुत से माहेश्वरी परिवारों की शादी ऐसे पंडित कराते हैं जो अग्नि के सात फेरे मानते हैं, और कुछ परिवार द्वार के तीन और अग्नि के सात गिनते हैं। पुस्तिका के फेरों वाले गीत के अंतरों में उन लोगों के नाम आते हैं जो दुल्हन को आशीर्वाद देते हैं: उसकी माँ, उसके पिता, उसका भाई और भौजाई। जहाँ दुल्हन का कोई भाई नहीं होता, वहाँ अक्सर कोई चचेरा-ममेरा भाई या परिवार का कोई और आदमी खील डालता है।

इसमें आपकी भूमिका

- **दुल्हन का भाई:** हर फेरे पर खील डालना आपकी ज़िम्मेदारी है। खील अपनी गोद में रखिए और उसके हाथ खुले मन से भरिए।
- **दुल्हन:** तीन फेरों में आप आगे रहेंगी। हर बार पैर से पत्थर ढूँढ़िए; पंडित जी आपके लिए रुकेंगे। आख़िर में सूप में बची खील आपको ही डालनी है।
- **दूल्हा:** चौथे फेरे में आप आगे चलेंगे। उसकी चाल से चलिए और गठजोड़े की गाँठ को आग से दूर रखिए।
- **भाई-बहन और चचेरे-ममेरे भाई-बहन:** किसी चाची या बुआ से फेरों का गीत गाने को कहिए, हर फेरे पर एक अंतरा, और उसे रिकॉर्ड कर लीजिए।

बड़ों से पूछिए

1. आपकी शादी में अग्नि के कितने फेरे हुए थे, और किस फेरे में कौन आगे था?

2. आपके हाथों में खील किसने डाली थी, और क्या परिवार में आज भी कोई फेरों का गीत गाता है?

अध्याय 24

सप्तपदी, ध्रुव दर्शन और सिंदूर

दुल्हन दूल्हा



एक मिनट में

अग्नि के फेरों के बाद दूल्हा-दुल्हन साथ मिलकर सात कदम चलते हैं। हर कदम के साथ संस्कृत की एक छोटी पंक्ति होती है, जो घर-गृहस्थी की किसी ज़रूरत के लिए प्रार्थना है। अटल रहने के वचन के रूप में दुल्हन को सूरज दिखाया जाता है, या रात हो तो ध्रुव तारा। दोनों एक-दूसरे का हृदय छूते हैं। फिर वह माहेश्वरी पल आता है जो बताता है कि अब वह उसकी पत्नी है: दुल्हन दूल्हे की दाईं ओर से हटकर उसकी बाईं ओर आ जाती है, और दूल्हा उसकी माँग में सिंदूर भरता है।

कब	मंडप में, अग्नि के फेरों और हथलेवा छुड़ाई के बाद
कौन निभाता है	पंडित जी; दूल्हा, जो सिंदूर भरता है
कहाँ	वेदी पर, अग्नि के पास
भाव	सहमति और साक्षी

क्या होता है

1. हथलेवे में जुड़े हाथ छुड़ाए जाते हैं (हथलेवा छुड़ाई)। दूल्हा-दुल्हन वेदी पर खड़े होते हैं, गठजोड़ा अब भी बँधा रहता है।
2. सप्तपदी: सात कदम, हर बार दायाँ पैर आगे। मुंबई के एक माहेश्वरी परिवार की लिखी हुई विवाह-पुस्तिका (reetrivaz.in) में नियम है कि बायाँ पैर कभी दाएँ से आगे न निकले। हर कदम पर पंडित जी एक पंक्ति पढ़ते हैं, और बहुत से पंडित हिंदी में एक वचन भी पढ़ते हैं।
3. दिन की शादी हो तो दूल्हा-दुल्हन को सूरज दिखाया जाता है (सूर्य दर्शन); रात की हो तो ध्रुव तारा (ध्रुव दर्शन), इस मंत्र के साथ: "ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथिवी", यानी आकाश अटल है, धरती अटल है।
4. हृदय स्पर्श: पंडित जी "मम व्रते ते हृदयं दधामि" कहते हैं, और दोनों अपने दाहिने हाथ से एक-दूसरे का हृदय छूते हैं।
5. रस्मों की शुरुआत से दुल्हन दूल्हे की दाईं ओर बैठी थी। अब वह उसकी बाईं ओर आकर बैठती है।
6. दूल्हा उसकी माँग में सिंदूर भरता है। पंडितों को दक्षिणा दी जाती है।

हम ऐसा क्यों करते हैं

जब अग्नि के फेरे हो गए, तो विवाह पूरा होने में बाकी क्या रहा? पुराने ग्रंथों के हिसाब से, सात कदम। पारस्कर गृह्यसूत्र में अग्नि के तीन फेरे हैं और अनाज की चौथी आहुति, और विवाह पर मुहर सात कदमों से लगती है। ओल्डनबर्ग के अनुवाद में दूल्हा कहता है: "पहला कदम रस के लिए, दूसरा ऊर्जा के लिए, तीसरा धन बढ़ने के लिए, चौथा सुख के लिए, पाँचवाँ पशुओं के लिए, छठा ऋतुओं के लिए। सखी, सात कदमों से मेरे साथ जुड़ जाओ।" उस ज़माने में पशु ही धन थे। आज आप जो सूची सुनते हैं, जिसमें पाँचवें कदम पर संतान आती है, वह आजकल का ढीला-ढाला अनुवाद है।

कानून भी इसी पल को मानता है। हिंदू विवाह अधिनियम, 1955 की धारा 7 कहती है कि जहाँ रीति-रिवाज़ में सप्तपदी शामिल है, यानी "पवित्र अग्नि के सामने दूल्हा और दुल्हन का साथ मिलकर सात कदम चलना", वहाँ सातवाँ कदम उठते ही विवाह पूरा और पक्का हो जाता है।

परिवार की पुस्तिका इस बात का मतलब भी बताती है कि बायाँ पैर दाएँ से आगे क्यों न निकले: दिल की इच्छाएँ समझदारी से आगे न दौड़ें। यह मतलब पुस्तिका लिखने वाले का अपना है, और अच्छा है। पुस्तिका में हिंदी के सात वचन भी छपे हैं, साथ ही दुल्हन की शर्तें और दूल्हे की एक शर्त भी। ये बीसवीं सदी में लिखे गए हैं; बहुत से पंडित इस तरह के वचन पढ़ते हैं, लेकिन असली पुराना हिस्सा संस्कृत की पंक्तियाँ ही हैं।

ध्रुव तारा इसलिए दिखाया जाता है कि वह अपनी जगह से नहीं हिलता: "तुम अटल हो; मैं तुम्हें, अटल को, देखती हूँ। हे फलने-फूलने वाले, मेरे साथ अटल रहो!" कुछ दूसरी परंपराओं में अरुंधती दिखाई जाती है, लेकिन वह दूसरे सूत्रों की बात है।

हृदय स्पर्श के बारे में एक बात ईमानदारी से कहनी ज़रूरी है। सूत्र में सिर्फ़ दूल्हा दुल्हन का हृदय छूता है, उसके दाहिने कंधे के ऊपर से: "अपने व्रत में मैं तुम्हारा हृदय धारण करता हूँ; तुम्हारा मन मेरे मन के पीछे चले।" परिवार की पुस्तिका में दोनों एक-दूसरे का हृदय छूते हैं, और पुस्तिका इसे "भारतीय विवाह की रजिस्ट्री" कहती है: मंडप अदालत है, पंडित और मेहमान गवाह हैं, और अँगूठे के निशान की जगह पूरी हथेली है। एक-दूसरे का हृदय छूना और रजिस्ट्री वाली यह तुलना, दोनों आज के ज़माने की व्याख्याएँ हैं।

इसके बाद दुल्हन अपनी जगह बदलती है, दूल्हे की दाईं ओर से बाईं ओर। सबके सामने किया गया यह छोटा-सा बदलाव इस सवाल का सबसे साफ़ माहेश्वरी जवाब है कि "वह उसकी पत्नी कब बनती है"। ठीक इसके बाद सिंदूर भरा जाता है। सिंदूर सूत्रों में नहीं है; यह बाद की रीत पर टिका है, और बिदाई से पहले सिर-गूंथी में माँग फिर से भरी जाएगी (अध्याय 26)।

सुहाग की निशानियाँ

माहेश्वरी दुल्हन के सुहाग की निशानियाँ सिर्फ़ वही पहनती है। हाथीदाँत का चूड़ा मायरे में उसके मामा की ओर से आता है और लख की रस्म में पहनाया जाता है (अध्याय 14); लाख की चूड़ियाँ ससुराल में जोड़ी जाती हैं (अध्याय 33, जिसमें यह भी बताया गया है कि अब हाथीदाँत का व्यापार बंद होने पर परिवार क्या पहनाते हैं)। इनके साथ नथ, बिछुड़ी और सेनासूत होते हैं। किसी भी माहेश्वरी स्रोत में मंगलसूत्र का ज़िक्र नहीं है; हो सकता है महाराष्ट्र के परिवारों में इसका चलन ज़्यादा हो। दूल्हे की निशानी कांकण डोरा है, जो जूवा-जूई में खोला जाता है (अध्याय 30)।

जड़ें **वैदिक संस्कार और शास्त्रीय या पौराणिक विधि**

सप्तपदी, ध्रुव दर्शन और हृदय स्पर्श पारस्कर गृह्यसूत्र (I.8) में हैं। सिंदूर बाद की शास्त्रीय और क्षेत्रीय रीत पर टिका है।

कुछ परिवारों में

कुछ पंडित सात कदमों के मंत्र अग्नि के फेरों में ही मिला देते हैं, इसलिए अलग से सात कदम नहीं चले जाते। सबसे ज़्यादा फ़र्क हिंदी वचनों में होता है: कुछ पंडित दुल्हन की शर्तें पढ़ते हैं, कुछ दोनों के वचन,

और कुछ सिर्फ़ संस्कृत, साथ में एक पंक्ति का मतलब।

इसमें आपकी भूमिका

- **दुल्हन:** पंडित जी से कहिए कि हर कदम के साथ उसका मतलब बताते चलें, और पूछिए कि उनका पाँचवाँ कदम पशुओं का है या संतान का। जगह बदलना याद रखिए; यह आपको ही करना है।
- **दूल्हा:** आख़िरी पंक्ति "सखा सप्तपदी भव", यानी सात कदमों से मेरे सखा बनो, याद कर लीजिए और उसे खुद बोलिए। सिक्के या अंगूठी से सिंदूर भरने का अभ्यास कर लीजिए; सधी हुई रेखा से परवाह झलकती है।
- **दोनों:** हिंदी वचन पहले से पढ़ लीजिए; अगर कोई पंक्ति खटके, तो पंडित जी से पूछिए।

बड़ों से पूछिए

1. आपकी शादी में आपको सूरज दिखाया गया था या ध्रुव तारा, और क्या आपने एक-दूसरे का हृदय छुआ था?

2. जब दुल्हन दूल्हे की बाईं ओर आई, तो क्या किसी ने कुछ कहा था, और उस दिन आपको सुहागिन की कौन-कौन सी निशानियाँ दी गईं?

अध्याय 25

फेरों के बाद: सुहागबीड़ी, जूता छुपाई और बड़ा भात

दुल्हन दूल्हा भाई-बहन



एक मिनट में

अग्नि की रस्में पूरी होते ही दुल्हन के घर की औरतें उसे एक साड़ी देती हैं, जिसे सुहागबीड़ी कहते हैं, और दूल्हे को एक लिफ़ाफ़ा। उसकी बहनें दूल्हे के जूते छुपा देती हैं और मोलभाव करती हैं। दुल्हन के दादा-दादी और माता-पिता, जो दिन भर से उपवास पर हैं, अपनी ब्याही बेटी का मुँह देखकर उपवास तोड़ते हैं। गीत गाते हुए दूल्हा-दुल्हन को द्वार तक ले जाया जाता है। बाद में बड़े भात में, किसी के खाने से पहले दोनों घरों के देवताओं और पुरखों को भोग लगता है, और दूल्हे के माता-पिता को ख़ास मेहमान की तरह खिलाया जाता है।

कब	फेरों के ठीक बाद; बड़ा भात रिसेप्शन के बाद
कौन निभाता है	दुल्हन के घर की औरतें और भाई-बहन; उसके माता-पिता और दादा-दादी; भोज के लिए दुल्हन का परिवार
कहाँ	मंडप, हॉल का द्वार और खाने की जगह
भाव	आशीर्वाद; दो परिवारों का बंधन

क्या होता है

1. दुल्हन की बहनें, बुआ, मौसी, मामी और भाभियाँ उसे सुहागबीड़ी यानी एक साड़ी देती हैं, और दूल्हे को एक लिफ़ाफ़ा। नाई दूल्हा-दुल्हन के पीछे अपना कपड़ा बिछाता है (छात) और नेग पाता है।
2. जूता छुपाई: दुल्हन के भाई-बहन वे जूते छुपा देते हैं जो दूल्हा मंडप पर उतारकर आया था, और मोलभाव शुरू हो जाता है। रकम तय कराने के लिए बड़े-बुज़ुर्ग बीच में आते हैं।
3. दूल्हा-दुल्हन मायां को प्रणाम करते हैं। फिर दुल्हन के दादा-दादी और माता-पिता उसकी मुंह दिखाई करते हैं, उसे नेग देते हैं, और कन्यावल का वह उपवास तोड़ते हैं जो उन्होंने शादी से पहले शुरू किया था।
4. फेरों की बिदाई: औरतें गीत गाती हुई दूल्हा-दुल्हन को हॉल के द्वार तक ले जाती हैं। बाहर दूल्हे वाले बरी में भेजे गए कपड़ों का दूसरा जोड़ा दुल्हन की खोळ में भरते हैं।
5. गठजोड़ा खोल दिया जाता है, और रिसेप्शन तक दोनों अपने-अपने पक्ष में लौट जाते हैं।
6. बड़ा भात: किसी के खाने से पहले भोग लगाया जाता है और हर देवता के लिए एक थाली परोसी जाती है, और एक थाली पितर या पितराणी के लिए, लिफ़ाफ़े के साथ, जो किसी ब्राह्मण या ब्राह्मणी को या मंदिर में दी जाती है। दूल्हे के माता-पिता से भी अपने देवताओं और पुरखों के लिए थालियाँ परोसने को कहा जाता है, और हर थाली के साथ दुल्हन वालों की ओर से 101 रुपये रखे जाते हैं।
7. फिर दूल्हे के माता-पिता और दूल्हा-दुल्हन को बिठाकर खाना खिलाया जाता है। दूल्हे के परिवार की कोई एक औरत दुल्हन को अपने हाथ से एक कौर खिलाती है। खाने के बाद दूल्हे के माता-पिता घर के काम करने वालों के लिए अपनी थालियों के पास पैसे रख देते हैं।

हम ऐसा क्यों करते हैं

मेहमान को यह लिफ़ाफ़ों, जूतों के खेल और खाने का एक घंटा लगता है। लेकिन हर हिस्सा एक अलग ज़रूरत पूरी करता है, और एक-एक करके देखें तो सबका मतलब समझ आता है।

सुहागबीड़ी में दुल्हन के अपने घर की औरतें उसे शादीशुदा ज़िंदगी का पहला तोहफ़ा देती हैं। जिन बुआ, मौसियों और भाभियों ने पूरे हफ़्ते उसके लिए गीत गाए, वही सबसे पहले उसे सुहागिन की तरह मान देती हैं। दूल्हे को दिया लिफ़ाफ़ा उससे भी यही कहता है: अब वह उनका अपना है।

उसके अपने माता-पिता की मुंह दिखाई इस शाम का सबसे शांत और गहरा पल है, और यह अग्रवाल शादियों में नहीं होती। दोनों माहेश्वरी स्रोतों में कन्यावल के उपवास का ज़िक्र है: दुल्हन के माता-पिता और दादा-दादी प्रण लेते हैं कि विवाह पूरा होने तक कुछ नहीं खाएँगे। सुहागिन बनी बेटी का मुँह देखकर ही उनका उपवास खुलता है। इसे ऐसे भी समझ सकते हैं: उपवास बड़ों को दिन भर रस्म से बाँधे रखता है, और बेटी का मुँह इस बात का सबूत है कि रस्म पूरी हो गई।

जूता छुपाई एक खेल है, और इसमें कोई गहरा मतलब ढूँढ़ने की ज़रूरत नहीं। इससे दुल्हन के भाई-बहनों को भी इस रात में अपना हिस्सा मिलता है, और घंटों से औपचारिक बने बैठे दो परिवार एक-दूसरे को छेड़ना शुरू करते हैं। मुंबई के एक माहेश्वरी परिवार की लिखी हुई विवाह-पुस्तिका (reetrivaz.in) में यह बात दर्ज है कि रकम बड़े-बुज़ुर्ग तय करते हैं, और यह एक समझदारी भरी सावधानी है।

सबसे ज़्यादा मतलब बड़े भात में है, और परिवार की पुस्तिका इसे ध्यान से समझाती है। किसी भी जीते-जागते इंसान से पहले दोनों घरों के देवताओं और पुरखों को भोजन कराया जाता है, और दूल्हे के परिवार की थालियों का खर्च भी दुल्हन का परिवार उठाता है। नए परिवार की एक औरत का दुल्हन को कौर खिलाना सबके सामने उसे अपनाने का संकेत है; पुराने दिनों में इसके साथ कोई गहना भी दिया जाता था। थालियों के पास रखे पैसों से उन लोगों को याद किया जाता है जिन्होंने खाना बनाया और परोसा।

रसेल ने 1916 के अपने विवरण में लिखा था कि माहेश्वरी बिठाकर कराई जाने वाली पंगत नहीं रखते थे; मेहमान जैसे-जैसे आते, बैठ जाते और उन्हें परोसा जाता। आज का बुफ़े इससे बहुत अलग नहीं है। इस भोज का राजस्थानी नाम है परणी जान का जीमण, यानी फेरों के बाद बारात को दिया जाने वाला भोजन।

जड़ें **समाज की रीत**

इनमें से कोई भी सूत्रों में नहीं है। तोहफ़े, उपवास, खेल और भोज का क्रम माहेश्वरी परिवार और दूसरे मारवाड़ी परिवार निभाते आए हैं।

कुछ परिवारों में

द्वार पर खोळ भरने वाले दूसरे जोड़े को आम मारवाड़ी किताबों में दूसरे नामों से जाना जाता है; वे इसे आंझला भराई कहती हैं। बड़ा भात जिस तरह परिवार की पुस्तिका में बताया गया है, वह इसी एक स्रोत

पर टिका है; आजकल बहुत से परिवार इसे रिसेप्शन के खाने में ही मिला देते हैं, देवताओं की थालियों के साथ या उनके बिना।

पुस्तिका कहती है कि रिसेप्शन और उसके खाने को अब ख़ास अहमियत मिल गई है, लेकिन ये रस्में नहीं, सामाजिक आयोजन हैं, और यह किताब इन्हें रस्मों में नहीं गिनती। दुल्हन को कौन-सी औरत खिलाएगी, यह इस पर निर्भर करता है कि कौन मौजूद है: पुस्तिका में दूल्हे की दादी, उसकी बड़ी माँ (पिता के बड़े भाई की पत्नी) या उसकी माँ का नाम है।

इसमें आपकी भूमिका

- **दुल्हन:** जब आपके माता-पिता और दादा-दादी मुंह दिखाई के लिए आएँ, तो उन्हें एक पल दीजिए। उन्होंने दिन भर से कुछ नहीं खाया है।
- **दूल्हा:** जूतों के लिए किसी भाई के पास नकद रखवा दीजिए, और मोलभाव में हँसते-हँसते हार जाइए।
- **भाई-बहन:** जूते अच्छी जगह छुपाइए और दाम वाजिब रखिए। बड़े बीच में आएँ तो सौदा उन्हें ही पक्का करने दीजिए।
- **चचेरे-ममेरे भाई-बहन:** बड़े भात में किसी के बैठने से पहले देवताओं की थालियाँ और लिफ़ाफ़े सजा दीजिए।

बड़ों से पूछिए

1. क्या हमारे परिवार में कन्यावल का उपवास रखा जाता था, और दुल्हन का मुँह देखकर किसने उपवास तोड़ा था?

2. बड़े भात में किन-किन के देवताओं और पुरखों के लिए थालियाँ लगीं, और दुल्हन को पहला कौर किसने खिलाया था?

अध्याय 26

पेहरावनी, सिर-गूंथी और थली पूजन: लड़की वालों की ओर से मान

दुल्हन दूल्हा भाई-बहन



एक मिनट में

दुल्हन के जाने से पहले उसकी चोटी गूँथी जाती है और दूल्हा चाँदी के रुपये से उसकी माँग फिर से भरता है। वह तणी खोलता है, और रसोई की भट्टी और बेह के सात मटकों के नेग पाता है। फिर लड़की वाले लड़के वालों को मान देते हैं: दोनों परिवारों के जंवाइयों को, और सबसे बढ़कर दूल्हे की माँ को, जिन्हें कपड़े पहनाए जाते हैं, माला पहनाई जाती है, और दुल्हन को उनकी गोद में बिठाया जाता है। आख़िर में दूल्हा-दुल्हन देहरी की पूजा करते हैं।

कब	फेरों और भोज के बाद, बिदाई से ठीक पहले
कौन निभाता है	दुल्हन की बुआ या बहन; पंडित जी; दुल्हन के घर के बड़े
कहाँ	फेरों की जगह पर, फिर रसोई की देहरी या हॉल के द्वार पर
भाव	दो परिवारों का बंधन; नए घर की ओर

क्या होता है

1. सिर-गूंथी: फेरों की जगह पर दुल्हन की बुआ या बहन उसके बालों में तेल डालकर चोटी गूँथती है और माँग में मोम लगाती है। दूल्हे को बुलाया जाता है, वह चाँदी के रुपये से माँग भरता है और फिर उसे मुंह दिखाई का नेग देता है।
2. पंडित जी दूल्हे से तणी, यानी मंडप के ऊपर बँधी डोरी, खुलवाते हैं, और भट्टी (रसोई का चूल्हा) और बेह के सात मटकों के नेग करवाते हैं। हर नेग के लिए उसे लिफ़ाफ़े दिए जाते हैं।
3. फेर-पाटा: फेरों की जगह पर दूल्हा-दुल्हन दो गद्दियों पर बैठते हैं, दुल्हन उन कपड़ों में होती है जो इसके लिए बरी में भेजे गए थे, और पंडित जी फेर-पाटे की पूजा कराते हैं।
4. पेहरावनी: दूल्हे को तिलक लगाया जाता है और सिरोपाव दिया जाता है। चाँदी की चौकी पर लड़की वाले पहले अपने जंवाइयों का मान करते हैं, फिर दूल्हे के परिवार के जंवाइयों का, और फिर उन सबका जिनका नाम दूल्हे की माँ लें। हर एक को लिफ़ाफ़ा दिया जाता है।
5. दूल्हे की माँ को बिठाकर उनका मान किया जाता है: साड़ी और श्रृंगार, पीठ पर केसर का हाथ का छापा, शॉल (कंधों पर रखी जाती है, सिर पर नहीं), सूखे मेवे या मिठाई की माला, सूखे मेवों से भरी चाँदी की कटोरी और पेहरावनी का नारियल।
6. दुल्हन के घर के बड़े दुल्हन को दूल्हे की माँ की गोद में बिठाते हैं। फिर वे दूल्हा-दुल्हन को बिदाई के लिफ़ाफ़े देते हैं।
7. थली पूजन: दूल्हा-दुल्हन मायां को प्रणाम करते हैं और नारियल चढ़ाते हैं। रसोई की देहरी पर, या हॉल के द्वार पर, एक पाटे पर गोबर लगा पत्ता रखा जाता है, साथ में रोली, मौली, चावल, गुड़, दूब, मूंग और पैसे। दूल्हा-दुल्हन उसके आगे हाथ जोड़ते हैं।

हम ऐसा क्यों करते हैं

पूरे हफ़्ते दुल्हन का परिवार लेता रहा है। यहाँ, आख़िर में, वह देता है, और यह देना सोच-समझकर उन लोगों के लिए होता है जो कल से उनकी बेटी के लिए सबसे ज़्यादा मायने रखेंगे।

मुंबई के एक माहेश्वरी परिवार की लिखी हुई विवाह-पुस्तिका (reetrivaz.in) इस रस्म में दूल्हे की माँ को सगाजी कहती है: यानी समधन, दुल्हन की सास के रूप में। उनका मान सबसे आख़िर में और सबसे ज़्यादा होता है। गोद में बिठाने का मतलब पुस्तिका अपने शब्दों में बताती है: अब सगाजी हमारी बेटी को अपनी बेटी की तरह सँभालें। शादी की बहुत कम रस्में अपना मक़सद इतनी साफ़ कहती हैं। दुल्हन के माता-पिता उसके साथ नहीं जा सकते; इसलिए वे सबके सामने उसे उस औरत की गोद में बिठा देते हैं जो उसके साथ रहेगी।

सिर-गूंथी मंडप वाले सिंदूर को एक शांत माहौल में दोहराती है। अग्नि के सामने भरा सिंदूर रस्म का हिस्सा था; यह वाला औरतों के बीच, उसके जाने से ठीक पहले भरा जाता है। आम मारवाड़ी किताबों में भी इसका ज़िक्र है, कहीं-कहीं दूल्हे की बहन सिंदूर लगाती है।

तणी और बेह के सात मटकों के साथ वह सब समेटा जाता है जो शादी की शुरुआत में खोला गया था। शादी की शुरुआत में डोरी मंडप के ऊपर बाँधी गई थी; दूल्हा उसे उतारता है। बेह के सात मटके और थांब कलश बाद में दूल्हे के घर जाते हैं, और पुस्तिका के तरीके में ये किसी ब्राह्मणी की शादी में दे दिए जाते हैं, ताकि एक शादी के बर्तन दूसरी शादी के काम आएँ।

थली पूजन में घर से कहा जाता है कि वह जाते हुए दूल्हा-दुल्हन को आशीर्वाद दे। रसोई की देहरी पर ही घर का असली कामकाज चलता है, और मूंग, दूब और गुड़ बढ़त और मिठास की वही निशानियाँ हैं जो पूरे हफ़्ते काम में आईं।

दान पर एक परिवार का जवाब

परिवार की पुस्तिका में लड़के वालों की ओर से इसी समय दिए जाने वाले एक दान का ज़िक्र है, जो दुल्हन के शहर की किसी सार्वजनिक संस्था को दिया जाता है, जैसे कोई गोशाला या मंदिर, और मंदिर के लिए अक्सर चाँदी की कोई चीज़ भी। पुस्तिका इसके दो कारण बताती है: बहू लाने की ख़ुशी में, और "बेटी का दान लेने के भार से मुक्त होने के लिए"। यह एक परिवार का तरीका है, कोई आम नियम नहीं। जिन्हें कन्यादान शब्द से असहजता होती है (अध्याय 22), उनके लिए यह परंपरा के भीतर से ही दिया गया एक सोचा-समझा जवाब है।

जड़ें **समाज की रीत**

पेहरावनी, सिर-गूंथी, नेग और थली पूजन माहेश्वरी और दूसरे मारवाड़ी परिवारों की रीत हैं। पेहरावनी दोनों मुख्य माहेश्वरी स्रोतों में दर्ज है; गोद में बिठाना और दान, सिर्फ़ एक में।

कुछ परिवारों में

माहेश्वरी समाज लुधियाना की रस्मों की सूची में जंवाई मंडप की डालियों वाली छाया उतारता है, और बिदाई के समय दुल्हन के पिता को मंच की छाया में बिठाकर उन्हें हल्दी और कुमकुम लगाया जाता है और पैसे दिए जाते हैं।

फेर-पाटे की पूजा और बेह के सात मटकों का नेग सिर्फ़ परिवार की पुस्तिका पर टिके हैं। पेहरावनी में क्या दिया जाता है, इसमें बहुत फ़र्क होता है: कपड़ों के पूरे जोड़ों से लेकर एक शॉल, नारियल और लिफ़ाफ़े तक।

इसमें आपकी भूमिका

- **दुल्हन:** जब आपको सास की गोद में बिठाया जाए, तो उस पल को दिल से जीजिए; एक शब्द या हाथ का हल्का-सा स्पर्श काफ़ी है।
- **दूल्हा:** सिर-गूंथी के लिए चाँदी का रुपया तैयार रखिए, और हर नेग करते समय पंडित जी से पूछिए कि वह किसलिए है।
- **दुल्हन की माँ:** दोनों तरफ़ के हर जंवाई की सूची पहले से बना लीजिए, ताकि चौकी पर कोई छूट न जाए।
- **भाई-बहन:** ध्यान रखिए कि तणी, बेह के सात मटके और थांब कलश दूल्हे के घर कौन ले जाता है।

बड़ों से पूछिए

1. आपकी शादी में क्या आपको सास की गोद में बिठाया गया था, और उस समय क्या कहा गया था?

2. क्या हमारा परिवार दुल्हन के शहर की किसी गोशाला या मंदिर को कुछ देता है, और क्या हमेशा से ऐसा होता आया है?

आम सवाल

तीन फेरे, चार या सात: क्या गिनती से फ़र्क पड़ता है?

माहेश्वरी परिवार अपने तरीके से सात तक गिनते हैं: द्वार पर तीन मामा फेरे, फिर अग्नि के चार फेरे, जिनमें तीन में दुल्हन आगे रहती है और चौथे में दूल्हा। पारस्कर गृह्यसूत्र में अग्नि के तीन फेरे और अनाज की चौथी आहुति है, इसलिए ये चार फेरे सबसे पुराने ग्रंथ के काफ़ी पास हैं। आजकल बहुत से पंडित उत्तर भारत वाले अग्नि के सात फेरे कराते हैं, और फिर कुछ परिवार तीन और सात गिनते हैं। कोई भी गिनती ग़लत नहीं है। बस इसे पंडित जी से एक हफ़्ता पहले तय कर लीजिए, मंडप पर पहुँचकर नहीं।

मामा फेरे में मेरे पिता नहीं, मेरे मामा आगे क्यों रहते हैं?

कोई भी स्रोत इसका कारण साफ़ शब्दों में नहीं बताता। स्रोतों से इतना दिखता है कि पूरी शादी में मामा का पक्ष दुल्हन को सँभाले रहता है: वह मायरा भरता है, पीठी में उसे पाटे से उठाता है, उसे दूल्हे के चारों ओर फेरे दिलाता है और मंडप में लाता है। यह रस्म खुद समाज की उस कथा से समझाई जाती है जिसमें पार्वती और वे पत्नियाँ हैं जिन्होंने अपने पतियों के चारों ओर फेरे लिए थे। आपके पिता की अपनी जगह वरणा और कन्यादान में है।

पंडित जी हमारा गोत्र ज़ोर से क्यों बोलते हैं?

मुंबई के एक माहेश्वरी परिवार की लिखी हुई विवाह-पुस्तिका (reetrivaz.in) इसका मक़सद साफ़ बताती है: इकट्ठा लोगों को दूल्हा और दुल्हन, दोनों का गोत्र और वंश बताना। हर पंडित अपने पक्ष का गोत्र और तीन पीढ़ियाँ, तीन बार बोलता है। माहेश्वरी समाज लुधियाना की रस्मों की सूची इसमें जोड़ती है कि दूल्हा-दुल्हन का कुल या गोत्र एक नहीं होना चाहिए, इसलिए यह उच्चारण सबके सामने की गई जाँच भी है। अपनी तीन पीढ़ियाँ पहले से याद कर लीजिए; पंडित जी पूछेंगे।

क्या दुल्हन की माँ को सचमुच दूल्हे की नाक पकड़नी होती है?

शादी में कुछ भी इस पर निर्भर नहीं है। यह सास का खुली छूट वाला मज़ाक है, और पुराना भी: रसेल ने 1916 में माहेश्वरियों में इसे दर्ज किया था, और परिवार की पुस्तिका आज भी इसे दर्ज करती है। कुछ परिवार इसे बड़े मज़े से निभाते हैं; कुछ ने चुपचाप छोड़ दिया है। तय करने से पहले दूल्हे के परिवार से पूछ लीजिए कि वे इसे किस तरह लेंगे।

हम में से एक माहेश्वरी नहीं है। इससे क्या बदलता है?

बहुत कम। पंडित जी गोत्रोच्चार को दूसरे परिवार के गोत्र या वंश के हिसाब से ढाल लेते हैं, और दूसरा पक्ष अपनी कोई रीत भी जोड़ सकता है। जो काम किसी ख़ास रिश्तेदार के ज़िम्मे होते हैं, उनके लिए पहले ही तय कर लीजिए कि कौन करेगा: मामा फेरे में कौन आगे रहेगा, खील कौन डालेगा, गठजोड़ा कौन बाँधेगा।

दुल्हन "उसकी पत्नी" कब बनती है?

कानून कहता है कि सप्तपदी के सातवें कदम पर, अगर दूल्हा-दुल्हन की रीत में सप्तपदी शामिल है। माहेश्वरी रस्म इसे एक इशारे से दिखाती है: सात कदमों के बाद दुल्हन दूल्हे की दाईं ओर से उसकी बाईं ओर आ जाती है, और दूल्हा उसकी माँग में सिंदूर भरता है।

भाग पाँच

नई शुरुआत



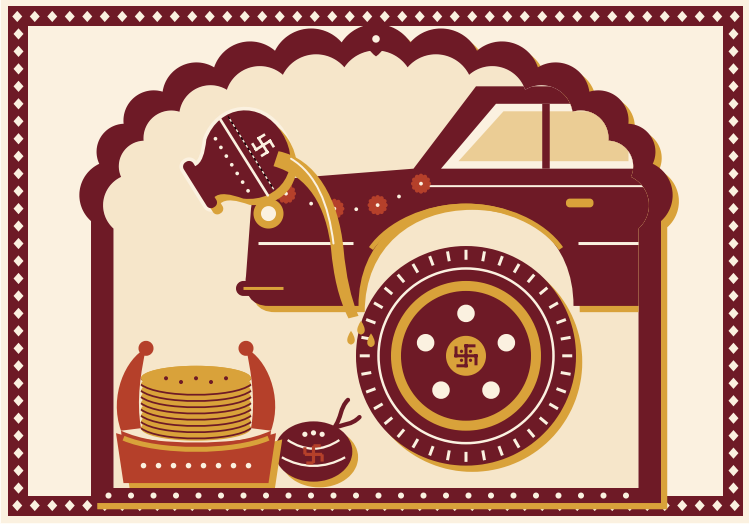
दुल्हन एक घर से विदा होकर दूसरे में आती है; खेल, पीहर का पहला फेरा, और जोड़ा परिवार के देवी-देवताओं के सामने।

बिदाई · वधू प्रवेश और थालेड़ी · सुहाग थाल, कोथली और मुंह दिखाई · जूवा-जूई और कांकण डोरा खोलना · कंवर कलेवा और मांडा झांकना · मायां उठाना, गणेशजी का चूरमा और सीख · चूड़ा और गठजोड़े की जात

अध्याय 27

बिदाई

दुल्हन | भाई-बहन



एक मिनट में

बिदाई वह घड़ी है जब दुल्हन अपने माता-पिता का घर छोड़कर पति के घर जाती है। उसकी माँ दूल्हा-दुल्हन को तिलक लगाती है और उनकी पीठ थपथपाती है। दुल्हन अपनी सास के लिए सूखे मेवों से भरी चाँदी की कटोरी ले जाती है। कार के पहिये के आगे नारियल रखा जाता है, जो कार चलते ही कुचल जाता है, पहियों पर पानी डाला जाता है, और गुड़ के साथ सोलह रोटियाँ उसके ट्रंक से बँधकर जाती हैं। औरतें गीत गाती हुई लौटती हैं। आँसू भी इसी रस्म का हिस्सा हैं।

कब	पेहरावनी और थली पूजन के बाद
कौन निभाता है	दुल्हन की माँ; घर की सबसे बड़ी औरत; परिवार की औरतें
कहाँ	दुल्हन के घर या शादी की जगह के द्वार पर
भाव	नए घर की ओर; आशीर्वाद
इस मौके का गीत	"चाली बाई सासरिये", और ओळ्यूं, "कंवर बाई री ओळ्यूं आवे ओ राज"

क्या होता है

1. दुल्हन की माँ दूल्हा-दुल्हन को तिलक लगाती है। वे प्रणाम करते हैं, और वह दोनों की पीठ थपथपाती है।
2. दुल्हन को लाल कपड़े में बँधी, सूखे मेवों से भरी चाँदी की कटोरी दी जाती है, जो उसे नए घर पहुँचकर कार से उतरते ही अपनी सास को देनी है।
3. उसके ट्रंक में खाने का सामान रखा जाता है: लाल कपड़े में सोलह फुलके और गुड़ ट्रंक के कुंडे से बाँधे जाते हैं, और सजी हुई स्टील की दो कोठियों में मिठाई, बड़ी और पापड़ रखे जाते हैं।
4. कार चलने को होती है तो उसके दाहिने पहिये के आगे नारियल रखा जाता है और ड्राइवर टायर उस पर से निकाल देता है। घर की सबसे बड़ी औरत पीछे के दोनों पहियों पर पानी डालती है।
5. औरतें बधावा गाती हुई घर या हॉल में लौट जाती हैं।

हम ऐसा क्यों करते हैं

हो सकता है दुल्हन एक-दो दिन में ही लौट आए, और सारी ज़िंदगी वह बस एक फ़ोन की दूरी पर रहेगी। फिर इतनी भारी बिदाई क्यों? क्योंकि बिदाई में दूरी नहीं बदलती, यह बदलता है कि वह सबसे पहले किस घर की है। आज तक वह सबसे पहले इस घर की बेटी थी। अब से वह सबसे पहले दूसरे घर की बहू है, और बेटी भी। दूरी कितनी भी हो, परिवार इस बदलाव को महसूस करते हैं, और बिदाई इस भावना को एक तय समय और जगह देती है। एक हफ़्ते बाद अकेले रोने से रस्म के समय सबके साथ रो लेना आसान है।

दुल्हन जो कुछ ले जाती है, वह लगभग सब उसी घर के लिए है जहाँ वह जा रही है। चाँदी की कटोरी उसकी सास के लिए उसका पहला तोहफ़ा है, उसकी माँ के हाथों से सासू के हाथों तक। माहेश्वरी समाज लुधियाना की रस्मों की सूची में इसी काम के लिए लाल कपड़े में लिपटे बर्तन में लड्डू हैं, इसलिए सास के लिए खाने की पोटली की रीत दोनों मुख्य स्रोतों में पक्की है। मुंबई के एक माहेश्वरी परिवार की लिखी हुई विवाह-पुस्तिका (reetrivaz.in) इसमें ट्रंक पर बँधी सोलह रोटियाँ और गुड़ जोड़ती है: रास्ते का खाना, और नई रसोई के लिए पहला तोहफ़ा।

पहिये के नीचे नारियल और पहियों पर पानी, ये दोनों सिर्फ़ परिवार की पुस्तिका पर टिके हैं। पुस्तिका बताती है कि क्या किया जाता है, लेकिन कारण नहीं बताती, और यहाँ भी कोई कारण नहीं दिया जा रहा। इतना कोई भी देख सकता है कि जिस पल पहिये पहली बार घूमते हैं, घर उस पल को एक रस्म से जोड़ देता है: आगे एक भेंट, पीछे पानी।

जो बात कहना मुश्किल होता है, वह गीत कह देते हैं। ओळ्यूं यानी याद के गीत (मोटे तौर पर कहें तो) कोयल से गाने को, पहाड़ से झुकने को और सूरज से देर से उगने को कहते हैं, ताकि रास्ते में बेटी धूप से न झुलसे। औरतें बधावा गाती हुई लौटती हैं, यानी शुभ काम पूरा होने के गीत, क्योंकि एक अच्छा काम पूरा हुआ है।

अग्रवाल दुल्हनें जाते समय कंधे के ऊपर से पीछे की ओर चावल फेंकती हैं। किसी भी माहेश्वरी स्रोत में इसका ज़िक्र नहीं है; अगर आपके परिवार में ऐसा होता है, तो यह पूछना अच्छा रहेगा कि यह रीत कहाँ से आई।

जड़ें **समाज की रीत**

गृह्यसूत्रों में पिता के घर से दुल्हन के जाने (वधू प्रस्थान) के मंत्र हैं, जो इस बिदाई को वैदिक ढाँचा देते हैं। कटोरी, नारियल, पानी और रोटियाँ माहेश्वरी परिवारों की रीत हैं।

कुछ परिवारों में

परिवार की पुस्तिका में कोठियों की मिठाई 11 या 21 किलो बताई गई है; परिवार इसे अपने घर के हिसाब से घटा-बढ़ा लेते हैं। कुछ परिवारों में भाई शुरू के कुछ मीटर कार को धक्का देते हैं, जैसा बहुत से अग्रवाल परिवारों में होता है; किसी भी माहेश्वरी स्रोत में इसका ज़िक्र नहीं, लेकिन इस भाव को समझना आसान है: वे उसे रोक नहीं सकते, इसलिए अपने हाथों से उसे विदा करते हैं।

इसमें आपकी भूमिका

- **दुल्हन:** चाँदी की कटोरी कार में अपने पास रखिए, डिक्की में नहीं। पहुँचते ही उसकी ज़रूरत पड़ेगी।
- **भाई और चचेरे-ममेरे भाई:** ड्राइवर के इंजन चालू करने से पहले उसे नारियल के बारे में बता दीजिए।
- **बहनें और चचेरी-ममेरी बहनें:** सुबह भर दुल्हन की माँ के पास रहिए। माता-पिता ठीक उसी समय सबसे ज़्यादा व्यस्त होते हैं जब उन्हें किसी के साथ की सबसे ज़्यादा ज़रूरत होती है।
- **कोई भी:** अगर घर की किसी बड़ी औरत को बिदाई का कोई गीत या ओळ्यूं आती हो, तो उनसे गाने को कहिए, और उसे रिकॉर्ड कर लीजिए।

बड़ों से पूछिए

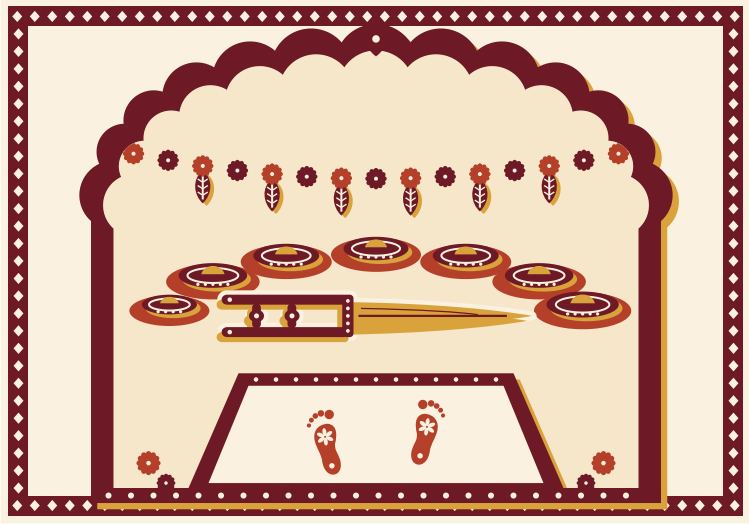
1. आपकी बिदाई में क्या पहिये के आगे नारियल रखा गया था, और पानी किसने डाला था?

2. क्या हमारे परिवार में बिदाई का कोई गीत गाया जाता था, और क्या आप उसका एक अंतरा गाकर सुना सकते हैं?

अध्याय 28

वधू प्रवेश और थालेड़ी: सात थालियाँ

दुल्हन · दूल्हा · भाई-बहन



एक मिनट में

दुल्हन अपने पति के घर पहुँचती है। उसकी ननदें द्वार रोक लेती हैं, जब तक उन्हें नेग न मिल जाए। अंदर सात थालियाँ एक कतार में रखी होती हैं। दूल्हा अपनी कटार से उन्हें अलग करता है, और दुल्हन सातों को दोनों हाथों से बिना खनकाए उठाकर अपनी सास को दे देती है। उसका हाथ गुड़ और घी में डुबोया जाता है। यह इस घर में उसका पहला काम है, जो वह ध्यान से करती है, और उसके लिए घर की पहली कामना भी: मिठास और बरकत।

कब	बिदाई के बाद दूल्हे के घर पहुँचने पर
कौन निभाता है	दूल्हे की माँ; द्वार पर उसकी बहनें
कहाँ	दूल्हे के घर का मुख्य द्वार, फिर उसके ठीक अंदर
भाव	नए घर की ओर; दो परिवारों का बंधन
इस मौके का गीत	थालेड़ी का गीत, "ना खड़काई, ना भड़काई"

क्या होता है

1. दूल्हे की माँ दुल्हन को कार से उतारती हैं, और उसके पिता दूल्हे को। दुल्हन सास के पैर छूती है और उन्हें पीहर से लाई चाँदी की कटोरी देती है।
2. बाड़-रुकाई: दूल्हे की बहनें मुख्य द्वार रोक लेती हैं, गाती हैं और लिफ़ाफ़ों के लिए मोलभाव करती हैं। नेग मिल जाने पर ऊपर एक कपड़ा ताना जाता है और दूल्हा-दुल्हन को देहरी तक लाया जाता है।
3. दुल्हन के सिर पर पानी और दूब से भरा चाँदी का कलश रखा जाता है। दूल्हे की माँ आरता करती हैं और नेतरे से दूल्हे को चार बार नापती हैं।
4. थालेड़ी: द्वार के ठीक अंदर गेरू और चूने से एक सीधी कतार में सात घेरे बनाए जाते हैं, और हर घेरे पर पीतल या चाँदी की एक थाली रखी जाती है, पहली थोड़ी छोटी। हर थाली पर रोली से स्वस्तिक बना होता है और उसमें खारक, बताशा, मूंग और पैसे होते हैं।
5. दूल्हा अपनी कटार से थालियाँ अलग करता है, पहली दाईं ओर, दूसरी बाईं ओर। दुल्हन (बिनणी, जैसा मुंबई के एक माहेश्वरी परिवार की लिखी हुई विवाह-पुस्तिका (reetrivaz.in) घर की नई बहू को कहती है) सातों थालियाँ दोनों हाथों से बिना आवाज़ किए उठाती है और आगे बाजोट पर बैठी अपनी सास को दे देती है। दुल्हन प्रणाम करती है।
6. दूल्हा-दुल्हन मायां को प्रणाम करते हैं। इस रस्म का गीत गाया जाता है और सास दुल्हन का हाथ गुड़ और घी में डालती हैं।

हम ऐसा क्यों करते हैं

बिना आवाज़ किए थालियाँ उठाना नई बहू की किसी घरेलू परीक्षा जैसा लग सकता है, और किसी नौजवान पाठक को यह बात चुभ सकती है। लेकिन देखिए कि रस्म असल में माँगती क्या है। घर में दुल्हन का सबसे पहला काम यह है कि वह घर के बर्तन ध्यान से उठाए और उस औरत को सौंपे जो अब तक यह घर चलाती आई है। उसकी परीक्षा अनजान लोग नहीं ले रहे; वह जिस परिवार में आ रही है, उसके सामने घर की मालकिन को मान दे रही है।

इस चुप्पी का अपना गीत है। परिवार की पुस्तिका में दर्ज थालेड़ी का गीत "ना खड़काई, ना भड़काई" से शुरू होता है, यानी न खड़खड़ाहट, न भड़कना, और फिर घर की औरतों के बीच एक बनावटी झगड़े में बदल जाता है। उस परिवार के गीतों में लगभग यही अकेली छेड़छाड़ है, और छेड़छाड़ ही इसका मतलब है: नियम निभाया जाता है, लेकिन मुस्कान के साथ।

कटार पूरे दिन को एक धागे में पिरो देती है। दूल्हा उसे निकासी में लेकर चला था और दुल्हन के द्वार पर उसी से तोरण मारा था (अध्याय 19)। अब वही कटार उसकी अपनी देहरी पर रास्ता बनाती है। गुड़ और घी को ज़्यादा समझाने की ज़रूरत नहीं: ये घर की कामना हैं कि मिठास और बरकत उसके हाथों में बनी रहे। पूरे हफ़्ते गुड़ स्वागत की निशानी रहा है।

द्वार पर बहनों का यह खेल बाकी खेलों जैसा ही है, घोड़ी की लगाम पकड़ने वाले जंवाइयों से लेकर छुपाए गए जूतों तक। अपनी पत्नी को घर लाने में दूल्हे का कुछ खर्च होता है, और यही मज़ाक है।

मेहमान क्या देखते हैं

मेहमान देखते हैं कि सबकी नज़रों के सामने एक युवती थालियाँ उठा रही है। असल में हो यह रहा है कि घर के बर्तन एक औरत के हाथ से दूसरी औरत के हाथ में सौंपे जा रहे हैं, और साथ में एक गीत है जो इस पल को हँसी में बदल देता है। अग्रवाल दुल्हन पैर से चावल का कलश गिराती है; माहेश्वरी दुल्हन अपने हाथों से सात थालियाँ उठाती है।

जड़ें **वैदिक संस्कार और समाज की रीत**

मंत्रों के साथ दुल्हन का पति के घर में प्रवेश (वधू प्रवेश) गृह्यसूत्रों में है। थालियाँ, कटार, द्वार का मोलभाव और गुड़-घी माहेश्वरी परिवारों की रीत हैं।

कुछ परिवारों में

माहेश्वरी समाज लुधियाना की रस्मों की सूची में भी दुल्हन के रास्ते में सात थालियाँ हैं, हर एक में सुपारी, खाजा और खारक; वहाँ दुल्हन पहले कुमकुम पर पैर रखती है और एक लंबे सफ़ेद कपड़े पर चलकर अंदर आती है, जिससे लाल पैरों के निशान बनते हैं। उस सूची में द्वार की इस रीत को "द्वार रोकना" कहा गया है।

परिवार की पुस्तिका दूल्हा-दुल्हन के पहुँचने से पहले के स्वागत का भी वर्णन करती है। द्वार के आगे सांकळी, यानी ज़ंजीर जैसी आकृति, बनाई जाती है और उसमें एक जगह खुली छोड़ी जाती है; दुल्हन के अंदर आने के बाद उसे बंद कर दिया जाता है, और पुस्तिका कहती है कि खुली ज़ंजीर का मतलब है कि परिवार दूल्हा-दुल्हन का स्वागत करता है। मेहंदी और मिठाई के सात पैकेट घर की सात बड़ी औरतों को दिए जाते हैं। पुराने दिनों में आँगन में पैरों के निशान बनाए जाते थे, और कोई जंवाई बधाईदार यानी ख़ुशखबरी लाने वाले के रूप में पहले पहुँचता था, जिसे बिठाकर तिलक किया जाता और पैसे दिए जाते।

बाद में रंग भात होता है, यानी बहू के आने की ख़ुशी का भोज, जिसमें जंवाइयों को खिलाया जाता है और सीख दी जाती है; इसीलिए इसका दूसरा नाम जमाई जीमण है।

इसमें आपकी भूमिका

- **दुल्हन:** सात थालियाँ बिना खनकाए उठाने का अभ्यास कर लीजिए। हर थाली को अगली पर गिराने की बजाय धीरे से सरकाइए।
- **दूल्हा:** घर लौटते समय कटार हाथ के पास रखिए, और द्वार पर बहनों के लिए नकद भी।
- **दूल्हे की बहनें:** आपस में पहले तय कर लीजिए कि क्या माँगना है, और गाना चलता रहने दीजिए।
- **चचेरे-ममेरे भाई-बहन:** कार पहुँचने से पहले सात घेरे बनाकर थालियाँ सजा दीजिए।

बड़ों से पूछिए

1. जब आप बहू बनकर इस घर में आईं, तब कितनी थालियाँ थीं, और क्या उनकी आवाज़ हुई थी?

2. द्वार पर सांकळी किसने बनाई थी, और क्या आपको थालेड़ी का गीत याद है?

अध्याय 29

सुहाग थाल, कोथली और मुंह दिखाई: घर बहू से मिलता है

दुल्हन भाई-बहन



एक मिनट में

बहू के आने के बाद के पहले दिनों में दूल्हे का घर उसे एक-एक रस्म करके अपनाता है। सबसे पहले जोड़ा परिवार के मंदिर में माथा टेकता है। सुहाग थाल में घर की बड़ी औरतें उसे एक ही चाँदी की थाली से खिलाती हैं और उसे अपनों में गिन लेती हैं। कोथली में वह एक लाल थैली से सिक्के निकालती है, जिसमें एक सोने का सिक्का छिपा होता है। मुंह दिखाई में वह हर बड़े के पैर पकड़ती है और बदले में आशीर्वाद और उपहार पाती है।

कब	बहू के आने के अगले दिन सुबह, और उसके बाद के पहले कुछ दिन
कौन निभाता है	बुआ या घर की सबसे बड़ी औरत; सास की पीढ़ी की औरतें; घर के सबसे बड़े सदस्य
कहाँ	दूल्हे का घर और परिवार का मंदिर
भाव	दो परिवारों का बंधन; नए घर की ओर

क्या होता है

1. बहू के गृह-प्रवेश के अगले दिन सुबह, बुआ या घर की सबसे बड़ी औरत जोड़े को, शादी के कपड़ों में ही, पहले परिवार के कुलदेवता के मंदिर ले जाती है और फिर शहर के मुख्य मंदिर। मुंबई के एक माहेश्वरी परिवार की लिखी हुई विवाह-पुस्तिका (reetrivaz.in) में यहाँ मुंबई के वेंकटेश मंदिर का नाम है। दोनों गठजोड़ा बाँधे हुए धोक देते हैं और चंदवे के नीचे घर लौटते हैं। चंदवा यानी एक ओढ़ना, जिसे चार औरतें ऊपर तानकर पकड़ती हैं।
2. सिर-गूंथी: बुआ या बहन बहू की चोटी गूँथती है, उसका सिर ढकती है, उसे नथ पहनाती है और उसका मुँह मीठा कराती है।
3. सुहाग थाल: एक बाजोट पर चाँदी की थाली रखी जाती है, जिसमें लापसी, चावल, बड़ी का साग, बताशे, घी और काले तिल होते हैं। तीन तरफ़ सास की पीढ़ी की औरतें बैठती हैं। दूल्हा चावल पर घी डालता है और बहू उसका हाथ पकड़ लेती है, ताकि वह ज़्यादा घी न डाल दे। दोनों एक-दूसरे को खिलाते हैं; फिर हर बड़ी औरत बहू को खिलाती है, और जेठानी और ननदें उसके साथ खाती हैं।
4. कोथली: घर का सबसे बड़ा सदस्य सिक्कों से भरी लाल कपड़े की एक थैली आगे करता है। उसमें कुल 200 रुपये के सिक्के होते हैं और उनके बीच एक गिन्नी यानी सोने का सिक्का। बहू दोनों हाथों में जितने सिक्के आ सकें, निकालती है। अगर गिन्नी निकल आए तो सब उसे भाग्यशाली कहते हैं; न निकले तो बड़ा सदस्य खुद गिन्नी निकालकर उसे दे देता है।
5. पग पकड़ाई और मुंह दिखाई: बड़े जोड़े बारी-बारी से चौकी पर बैठते हैं, बहू उनके दोनों पैर पकड़ती है और वे उसे उपहार देते हैं। पास बैठी एक ननद लिखती जाती है कि किसने क्या दिया। कान पकड़ाई में बहू देवर के दोनों कान पकड़ती है और उसे एक लिफ़ाफ़ा देती है। घुमाई में बड़े लोग जोड़े को घुमाते हैं और लिफ़ाफ़े देते हैं।
6. रात को औरतें रातीजगा गाती हैं: देवी-देवताओं के आगे दीया, चार देवी-देवताओं के गीत, फिर बधावा।

हम ऐसा क्यों करते हैं

बहू को तो सब देख ही चुके हैं; ये रस्में उसे उसकी जगह पर बिठाती हैं: परिवार के देवताओं के सामने, औरतों की थाली पर, घर की तिजोरी में और घर के बड़ों के क्रम में।

मंदिर सबसे पहले आता है। घर अपने लोगों से बहू का परिचय कराने से पहले उसे उस देवता के पास ले जाता है जिसे वह अपना मानता है। पूरी जात बाद में होती है (अध्याय 33)।

माहेश्वरी समाज लुधियाना की रस्मों की सूची सुहाग थाल का मतलब साफ़ बताती है: सुहागिन औरतें नई बहू को खिलाती हैं, "यह कहते हुए कि अब बहू उनके परिवार में शामिल हो गई है"। एक थाली में खाना अपनेपन की सबसे पुरानी निशानी है। दूल्हे का घी डालना और बहू का उसकी कलाई थाम लेना, घर का किफ़ायत को लेकर पहला मज़ाक है: वह अभी से भंडार सँभालने लगी है।

यही सूची कहती है कि कोथली "यह दिखाने के लिए होती है कि पैसे की देखभाल कैसे करें"। परिवार की पुस्तिका इसमें इस अध्याय का सबसे प्यारा नियम जोड़ती है: अगर सोने का सिक्का न निकले, तो बड़ा उसे बहू के हाथ में रख देता है। बहू हार ही नहीं सकती।

पग पकड़ाई और मुंह दिखाई परिचय का काम करती हैं। शादी में इतनी भीड़ होती है कि बहू किसी को ठीक से पहचान ही नहीं पाती। यहाँ हर जोड़ा अपना नाम, अपना रिश्ता और एक उपहार लेकर उसके पास आता है, और देवर के कान पकड़ने से माहौल ज़्यादा गंभीर नहीं होने पाता।

जड़ें **समाज की रीत**

राजस्थानी और मारवाड़ी परिवारों के घरेलू रिवाज़, जिन्हें औरतें आगे बढ़ाती आई हैं और जो दोनों माहेश्वरी स्रोतों में दर्ज हैं। इनमें से कोई भी गृह्यसूत्रों में नहीं है।

घूंघट के बारे में

घूंघट, यानी बहू का ओढ़ने के छोर से अपना चेहरा ढकना, एक रिवाज़ है; यह किसी वैदिक या शास्त्रीय विधि का हिस्सा नहीं है। कुछ माहेश्वरी परिवार आज भी मुंह दिखाई में और कुछ समय तक बड़ों के सामने इसे सम्मान की निशानी के तौर पर रखते हैं, और जिन औरतों ने घूंघट रखा, उनमें से बहुत-सी इसे इसी नज़र से देखती हैं।

1934 में अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा ने घूंघट को औरतों की तरक्की में रुकावट बताया और इसे छोड़ने की अपील की। बहुत-से परिवारों ने इसे कब का छोड़ दिया है, या बस एक हल्का घूंघट रखते हैं जो एक बार उठा दिया जाता है। आम तौर पर बहू और सास शादी से पहले ही यह बात तय कर लेती हैं; आशीर्वाद और उपहार दोनों हालात में वही रहते हैं।

कुछ परिवारों में

लुधियाना की सूची में कोथली अगले दिन सुबह के मंदिर दर्शन के बाद होती है और थैली ससुर पकड़ते हैं। कुछ परिवार ये सारी रस्में एक ही दोपहर में लखेसरी (अध्याय 33) के साथ कर लेते हैं; कुछ इन्हें कई

दिनों में फैलाते हैं।

इस किताब के अग्रवाल संस्करण में इसे "मूह दिखाई" लिखा गया है; सुहाग थाल और पूरी रस्म के रूप में कोथली उस संस्करण में नहीं हैं। बहुत-से राजस्थानी परिवार शादी से पहले रात भर जागरण करते हैं (अध्याय 13); परिवार की पुस्तिका दूल्हे के घर पर गीतों की एक शाम और जोड़ती है। अपने परिवार में पूछिए कि वहाँ क्या होता है।

इसमें आपकी भूमिका

- **दुल्हन:** सुहाग थाल में घी बहने से पहले दूल्हे की कलाई पकड़ लीजिए; सब इसी का इंतज़ार कर रहे होते हैं। मुंह दिखाई में अपने पास बैठी ननद से कहिए कि वह धीरे से हर एक का नाम बताती जाए।
- **ननद:** सूची साफ़-सुथरी रखिए और उसकी एक प्रति बहू को दीजिए।
- **देवर:** कान पकड़ाई के लिए ख़ुशी-ख़ुशी आइए; लिफ़ाफ़ा आपका है।

बड़ों से पूछिए

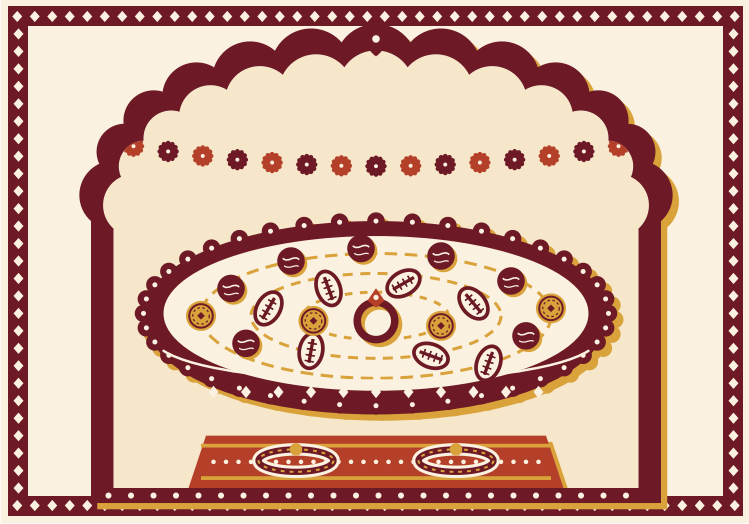
1. पिछली बहू के घर आने के अगले दिन सुबह हमारा परिवार उसे किस मंदिर ले गया था?

2. क्या हमारे परिवार की बहुएँ मुंह दिखाई में घूंघट रखती थीं, और यह कब बदला?

अध्याय 30

जूवा-जूई और कांकण डोरा खोलना: खेल

दूल्हा · दुल्हन · भाई-बहन



एक मिनट में

शादी के बाद जोड़ा दो पुराने खेल खेलता है। जूवा-जूई में दूध मिले पानी की परात में सुपारी, कौड़ियाँ, सिक्के और चाँदी की एक अंगूठी छिपी होती है, और दोनों उन्हें टटोलकर निकालते हैं: दूल्हा एक हाथ से और दुल्हन दोनों हाथों से। फिर वे एक-दूसरे का कांकण डोरा खोलते हैं, यानी वह रक्षा का डोरा जो शादी से पहले बाँधा गया था। मुंबई के एक माहेश्वरी परिवार की लिखी हुई विवाह-पुस्तिका (reetrivaz.in) में ये दोनों खेल शादी के अगले दिन दुल्हन के घर पर होते हैं, और फिर दूल्हे के घर पर दोबारा।

कब	शादी के अगले दिन, कंवर कलेवा के समय; फिर दूल्हे के घर पर दोबारा
कौन निभाता है	दुल्हन की भाभी या बहन; दूल्हे के घर पर उसकी बहनें और भाभियाँ
कहाँ	पहले दुल्हन का घर, फिर दूल्हे का
भाव	दो परिवारों का बंधन; रक्षा

क्या होता है

1. एक परात में पानी और दूध भरा जाता है, साथ में थोड़ी हल्दी, ताकि ऊपर से नीचे का कुछ दिखाई न दे।
2. पानी में सात सुपारी, सात कौड़ियाँ, एक-एक रुपये के सात सिक्के और चाँदी की एक अंगूठी डाली जाती है। भाभी या बहन इन्हें डालती है, सात बार या चार बार।
3. जोड़ा एक साथ परात में हाथ डालता है। दूल्हा सिर्फ़ दाएँ हाथ से टटोल सकता है; दुल्हन दोनों हाथों से। हर जीत और हर हार पर आसपास बैठी औरतें हँसती हैं और चुटकियाँ लेती हैं।
4. आख़िर में दूल्हा अपनी अंगूठी उतारकर दुल्हन को पहना देता है।
5. कांकण डोरा खोलने के लिए एक तौलिया बिछाया जाता है। दुल्हन दोनों हाथों से दूल्हे के दाएँ हाथ का डोरा खोलती है; दूल्हा सिर्फ़ दाएँ हाथ से उसका डोरा खोलता है। परिवार की पुस्तिका में इसके बाद दोनों अपना-अपना डोरा दूसरे को बाँध देते हैं। पैरों के डोरे भी इसी तरह खोले जाते हैं।
6. दोनों खेल दूल्हे के घर पर दोबारा खेले जाते हैं, और वहाँ उसकी तरफ़ की औरतें इन्हें करवाती हैं।

हम ऐसा क्यों करते हैं

दूध की परात में अंगूठी ढूँढना बच्चों का खेल है, और इसे जानबूझकर ऐसा ही रखा गया है। रस्मों की लंबी रात के बाद, दो लोग जो शायद अब भी एक-दूसरे से झिझकते हैं, छेड़ती हुई औरतों के घेरे में अगल-बगल बिठाए जाते हैं और बराबरी से मुकाबला करते हैं। अक्सर कुछ ही मिनटों में झिझक टूट जाती है।

एक हाथ वाला नियम माहेश्वरी ख़ासियत है। दूल्हा सिर्फ़ दाएँ हाथ से टटोलता है जबकि दुल्हन दोनों हाथों से, और डोरा खोलते समय भी वह एक हाथ से काम करता है और दुल्हन दो से। किसी भी स्रोत में इस नियम का कारण नहीं दिया गया; परिवार बस इसका मज़ा लेते हैं। यह कहावत कि जो जीतेगा वह घर पर राज करेगा, एक मज़ाक है, और परात के पास बैठा हर कोई यह जानता है।

गंभीर हिस्सा डोरा खोलने में है। कांकण डोरा मायां धोक के समय बँधा था (अध्याय 15): मौली की सात गाँठें, जिनमें लूणराई, सोना, चाँदी, लोहा, लाख और एक कौड़ी बँधी थी, ताकि शादी के सबसे नाज़ुक दिनों में नज़र न लगे। माहेश्वरी समाज लुधियाना की रस्मों की सूची लोहे के बारे में कहती है कि "वे अपना विवाहित जीवन लोहे की तरह मज़बूत होकर बिताएँ"। अब शादी हो चुकी है, इस रक्षा की ज़रूरत नहीं रही, और हर एक को इससे वही इंसान मुक्त करता है जो अब उसके साथ खड़ा है।

आख़िर की अंगूठी खेल को उपहार में बदल देती है। नतीजा चाहे जो रहा हो, दूल्हे की अपनी अंगूठी दुल्हन के हाथ में जाती है।

जड़ें **समाज की रीत**

जुआ-जूई इन खेलों का राजस्थानी नाम है, और ये खेल इलाके के कई समाजों में होते हैं। डोरा खोलना अध्याय 15 में बँधे रक्षा के डोरे का समापन है। इनमें से कोई भी खेल गृह्यसूत्रों में नहीं है।

कुछ परिवारों में

इस किताब के अग्रवाल संस्करण में यही खेल दूल्हे के घर पर होते हैं; परिवार की पुस्तिका में ये पहले कंवर कलेवा (अध्याय 31) की सुबह दुल्हन के घर पर खेले जाते हैं और फिर दूल्हे के घर पर दोहराए जाते हैं।

लुधियाना की सूची में डोरा दूल्हा और दुल्हन दोनों की कलाई पर बँधता है, और परिवार की पुस्तिका में दूल्हे के दाएँ हाथ और पैर पर और दुल्हन के बाएँ पर। कौन-सा हाथ और कौन-सा पैर, और इसलिए कौन-सी गाँठ पहले खुलेगी, यह आपका परिवार बताएगा। पुस्तिका में चीज़ें डालने की गिनती, सात या चार, भी अलग-अलग होती है।

जहाँ जोड़ा थका हुआ हो, वहाँ बहुत-से परिवार जूवा-जूई का बस एक छोटा दौर खेलते हैं। डोरा खोलना ज़्यादातर परिवार ज़रूर रखते हैं, क्योंकि डोरा तो किसी न किसी तरह उतरना ही है।

इसमें आपकी भूमिका

- **दूल्हा:** अपना बायाँ हाथ पीठ के पीछे रखिए और हँसते-हँसते हारिए। आख़िर में उतारने के लिए अपनी अंगूठी तैयार रखिए।
- **दुल्हन:** बिना झिझके दोनों हाथ इस्तेमाल कीजिए; नियम आपके पक्ष में है।
- **भाभियाँ और बहनें:** यह आपके ज़िम्मे है। चीज़ें ईमानदारी से डालिए, ज़ोर-ज़ोर से गिनती रखिए, और किसी अड़ियल गाँठ के लिए तौलिये के पास एक छोटी कैंची रखिए।

बड़ों से पूछिए

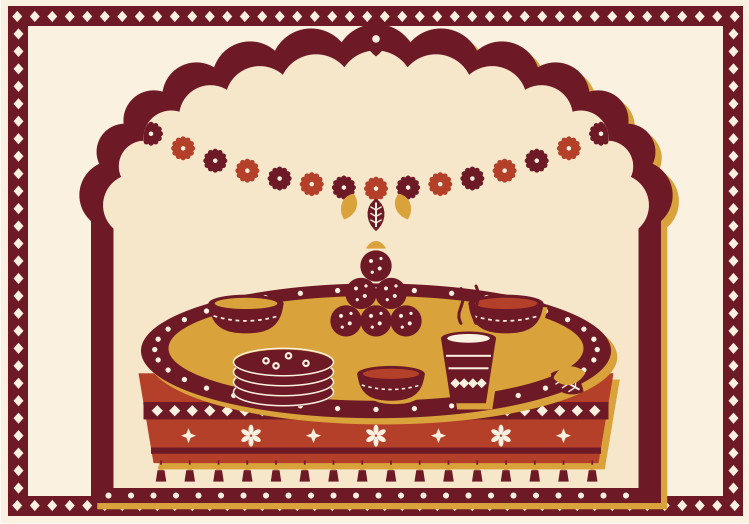
1. हमारे परिवार में ये खेल दुल्हन के घर पर होते हैं, दूल्हे के घर पर, या दोनों जगह?

2. आपका कांकण डोरा किसने खोला था, और उसमें क्या-क्या बँधा था?

अध्याय 31

कंवर कलेवा और मांडा झांकना: पीहर का बुलावा

दूल्हा दुल्हन भाई-बहन



एक मिनट में

शादी के बाद के पहले दिनों में पीहर से दो बार बुलावा आता है। शादी के अगले दिन दूल्हा अपने छोटे भाइयों और दोस्तों के साथ कंवर कलेवा के लिए आता है। कंवर कलेवा यानी कुंवर का नाश्ता, जिसे दुल्हन की तरफ़ की औरतें परोसती हैं, और इसी समय खेल भी होते हैं। एक-दो दिन बाद दुल्हन का भाई जोड़े को मांडा झांकना के लिए लेने आता है, यानी "मांडे में झाँकना"। वह मिठाई से भरा एक मटका और दुल्हन की सास के लिए एक साड़ी लेकर आता है।

कब	कंवर कलेवा शादी के अगले दिन; मांडा झांकना एक या दो दिन बाद
कौन निभाता है	दुल्हन की माँ और उसकी तरफ़ की औरतें; दुल्हन का भाई
कहाँ	दुल्हन का घर
भाव	दो परिवारों का बंधन; नए घर की ओर

क्या होता है

1. शादी के अगले दिन लड़की वाले कंवर कलेवा के लिए दूल्हे को बुलवाते हैं। वह अपने छोटे भाइयों और दोस्तों के साथ आता है।
2. दुल्हन की तरफ़ की औरतें उसे खाना परोसती हैं। बहुत-से मारवाड़ी परिवारों में दुल्हन की बहनें और चचेरी-ममेरी बहनें पहले उसे छेड़ती हैं और नेग माँगती हैं, फिर उसे चैन से खाने देती हैं।
3. जूवा-जूई और कांकण डोरा खोलना यहीं होता है (अध्याय 30)।
4. शादी के एक या दो दिन बाद लड़की वाले अपनी बेटी और दामाद को मांडा झांकना के लिए घर बुलाते हैं। दुल्हन का भाई उन्हें लेने जाता है।
5. वह बेह के सात मटकों में से सबसे नीचे वाला मटका मिठाई से भरकर ले जाता है, और दुल्हन की सास के लिए एक साड़ी।
6. दुल्हन के घर पर जोड़े को खाना खिलाया जाता है, और जाते समय उन्हें सीख यानी विदाई के उपहार दिए जाते हैं।

हम ऐसा क्यों करते हैं

पहली मुलाक़ात का नाम ही सब कुछ बता देता है। कंवर (या कुंवर) यानी कुंवारा जवान लड़का, या राजकुमार; कलेवा यानी सुबह का खाना। राजस्थानी घर में दामाद से बड़ा मेहमान कभी कोई नहीं आता, और यह पहली बार है जब वह बारात के मुखिया की तरह नहीं, बल्कि परिवार के एक सदस्य की तरह अपनी पत्नी के घर खाना खाता है।

बाक़ी काम छेड़छाड़ कर देती है। इससे शादी की औपचारिकता टूटती है और वह हँसी-मज़ाक वाली दोस्ती शुरू होती है जो बहुत-से मारवाड़ी परिवारों में किसी आदमी का अपने ससुराल वालों से सबसे गर्मजोशी भरा रिश्ता होता है। एक सीधी बात भी है: रस्मों की रात के बाद दूल्हे और उसके दोस्तों ने अक्सर ठीक से खाया नहीं होता, और लड़की वाले उन्हें भरपेट खिलाते हैं।

मांडा झांकना एक अलग चिंता का जवाब है। बिदाई कुछ ख़त्म हो जाने जैसी लग सकती है। उसके इतनी जल्दी बाद आने वाली यह मुलाक़ात दिखाती है कि दुल्हन का पहला घर उसके लिए अब भी खुला है। और उसे लेने उसका भाई आता है, यानी रिश्ता बातों से नहीं, काम से दिखाया जाता है। नाम में एक मुस्कान भी छिपी है: जोड़ा मांडे में, यानी उस मंडप में जहाँ उनकी शादी हुई थी, झाँकने आता है, जैसे देखने आया हो कि वह अब भी वहीं है या नहीं।

भाई जो मटका लाता है, उसकी कहानी लंबी है। बेह के सात मटके चाक पूजन के समय घर लाए गए थे और मंडप के खंभे के पास एक के ऊपर एक रखे गए थे (अध्याय 10 और 16), और मुंबई के एक

माहेश्वरी परिवार की लिखी हुई विवाह-पुस्तिका (reetrivaz.in) में वे आख़िर में दूल्हे के घर पहुँचते हैं। उनमें से सबसे नीचे वाला मटका इस तरह, मिठाई से भरा, दुल्हन के भाई के हाथों उस औरत के लिए एक साड़ी के साथ जाता है जिसके ज़िम्मे अब उसकी बहन है। खाना और कपड़ा दुल्हन के घर से उसके नए घर जाते हैं, और बदले में जोड़े को खिलाकर, उपहार देकर विदा किया जाता है।

जड़ें **समाज की रीत**

दोनों मुलाक़ातें राजस्थानी घरेलू रिवाज़ हैं, जिन्हें दोनों परिवार तय करते हैं, पंडित जी नहीं। किसी में कोई मंत्र नहीं है और न ही गृह्यसूत्रों में इनकी कोई जगह है।

कुछ परिवारों में

अग्रवाल परिवार कंवर कलेवा को इसी नाम से जानते हैं, और मांडा झांकना को वह मुलाक़ात मानते हैं जिसे उनकी किताब पगफेरा कहती है। माहेश्वरियों में दुल्हन पीहर में पहली बार बाक़ायदा रहने बाद में, सीख के समय आती है (अध्याय 32)।

समय इस पर निर्भर करता है कि शादी कहाँ और कब हुई। जब शादी और बिदाई एक ही रात में किसी हॉल में हो जाती हैं, तो परिवार कंवर कलेवा को जहाँ जगह मिले, वहाँ बिठा लेते हैं। दोनों माँओं से पूछकर पहले से तय कर लीजिए।

लड़की वाले दूल्हे को क्या परोसें और क्या दें, यह हर परिवार अपने हिसाब से तय करता है; कुछ घरों में एक लिफ़ाफ़ा, कुछ में इसी मौके के लिए रखा गया कोई गहना।

कलेवा शब्द शादी से आगे भी जाता है। माहेश्वरी समाज लुधियाना की रस्मों की सूची में "कलेवा" उस खाने के लिए आता है जो किसी की मृत्यु के ग्यारहवें दिन ससुराल की तरफ़ से आता है; राजस्थानी में यह दो घरों के बीच भेजे या परोसे जाने वाले खाने के लिए आम शब्द है।

इसमें आपकी भूमिका

- **दूल्हा:** ऐसे दोस्त साथ ले जाइए जो हँसी-मज़ाक में टिक सकें, और सालियों के लिए हाथ में नकद रखिए। अपनी सास से पूछिए कि उन्होंने क्या बनाया है; यह आपके लिए उनका पहला खाना है।
- **दुल्हन:** अपनी माँ को बताइए कि मांडा झांकना के लिए आपके नए घर को कौन-सा दिन ठीक रहेगा, ताकि बुलावा बिना किसी अटपटेपन के आए।
- **दुल्हन की बहनें:** कंवर कलेवा आपके ज़िम्मे है। माँगें हल्की-फुल्की रखिए और खाना ठंडा होने से पहले उसे खाने दीजिए।

- **दुल्हन का भाई:** मटका और साड़ी आप ले जाते हैं। घर से निकलने से पहले माँ से पक्का कर लीजिए कि कौन-सा मटका और कौन-सी साड़ी।

बड़ों से पूछिए

1. क्या हमारे परिवार में कंवर कलेवा शादी के अगले दिन होता है, और उसमें क्या परोसा जाता है?

2. पिछली शादी में मांडा झांकना के लिए दुल्हन को लेने कौन गया था, और वह साथ क्या ले गया था?

अध्याय 32

मायां उठाना, गणेशजी का चूरमा और सीख: शादी का समापन

दुल्हन दूल्हा भाई-बहन



एक मिनट में

माहेश्वरी शादी जितने विधि-विधान से शुरू होती है, उतने ही विधि-विधान से उसका समापन भी होता है। किसी शुभ दिन परिवार मायां के सामने बैठता है, यानी वह तख़्ती जो हर रस्म की रखवाली करती आई है, लापसी और नारियल चढ़ाता है, और मायां उठाता है। जोड़ा और दूल्हे के माता-पिता पाँच किलो चूरमा लेकर गणेशजी के मंदिर जाते हैं और बिना किसी विघ्न के शादी पूरी होने के लिए उनका धन्यवाद करते हैं। फिर किसी और शुभ दिन दुल्हन को पहली बार पीहर भेजा जाता है।

कब	शादी के बाद परिवार के चुने हुए शुभ दिन
कौन निभाता है	दूल्हे के माता-पिता और जोड़ा; आरते के लिए बुआ; सीख के लिए दुल्हन के भाई
कहाँ	दूल्हे का घर; गणेशजी का मंदिर; दुल्हन का पीहर
भाव	आशीर्वाद; नए घर की ओर
इस मौके का गीत	"उठो उठो मायां, घी गुड़ मायां"

क्या होता है

1. किसी शुभ दिन दूल्हे की माँ और दुल्हन सिर धोती हैं। लापसी, चावल और बड़ी बनाई जाती है।
2. दूल्हे के माता-पिता और जोड़ा मायां के सामने बैठते हैं, लापसी और नारियल चढ़ाते हैं और माथा टेकते हैं। औरतें बधावा और मायां का गीत गाती हैं, बुआ आरता करती है, और मायां उठा ली जाती है।
3. पाँच किलो चूरमा बनाया जाता है, और जोड़ा दूल्हे के माता-पिता के साथ उसे गणेशजी के मंदिर में चढ़ाने जाता है।
4. किसी और शुभ दिन दुल्हन को सीख के लिए पीहर भेजा जाता है, दो साड़ियों, एक लिफ़ाफ़े और मिठाई के साथ।
5. उसके भाई उसे लेने आते हैं। दूल्हे के घर पर उन्हें खाना खिलाया जाता है और लिफ़ाफ़े दिए जाते हैं, फिर वे अपनी बहन को घर ले जाते हैं।

हम ऐसा क्यों करते हैं

आजकल बहुत-से घरों में रिसेप्शन ख़त्म होते ही और मेहमानों के जाते ही शादी बस धीरे-धीरे ख़त्म हो जाती है। मुंबई के एक माहेश्वरी परिवार की लिखी हुई विवाह-पुस्तिका (reetrivaz.in) शादी को ऐसे बिखरने नहीं देती। वह तीन कदमों में शादी का समापन करती है, और हर कदम शुरुआत में किए गए किसी काम का जवाब है।

मायां शादी से पहले घर के अपने छोटे-से शादी के पूजा-स्थान के रूप में लगाई गई थी (अध्याय 15)। सजे-धजे दूल्हे ने निकासी से पहले उसे प्रणाम किया था, जोड़े ने मामा फेरे के बाद और फिर फेरों के बाद उसे प्रणाम किया था, और नई बहू ने घर में आते समय उसे प्रणाम किया था। उसे उठाने का मतलब है कि अब घर में शादी नहीं चल रही। गीत मायां से उठने को कहता है और घी और गुड़ का नाम लेता है, वे दो मीठी चीज़ें जो विवाह हाथ से लेकर हर कदम पर साथ रही हैं। धुले हुए बाल और लापसी इस दिन को शुद्ध और मीठा बनाते हैं।

चूरमा उस बात को पूरा करता है जो सावा पूजन ने शुरू की थी। सबसे पहले गणेशजी का आह्वान किया गया था ताकि शादी बिना विघ्न के हो, और परिवार का एक छोटा लड़का उनके रूप में गणगौर पूजा तक दूल्हे या दुल्हन के पास बैठा था (अध्याय 8 और 15)। चूरमे का जो कारण परिवार की पुस्तिका देती है, वह सीधा-सादा आभार है: शादी के सारे काम "गणेशजी की कृपा से बिना विघ्न के पूरे हो गए"। शुरुआत में की गई प्रार्थना का अंत में धन्यवाद किया जाता है।

सीख दुल्हन का पहली बार बाक़ायदा पीहर जाना है, मांडा झांकना की छोटी मुलाक़ात से अलग। सीख का मतलब है जाने वाले को दिए जाने वाले विदाई के उपहार, और यहाँ वे दूल्हे के घर से जाते हैं: बहू के साथ साड़ियाँ, एक लिफ़ाफ़ा और मिठाई, और उसे लेने आए भाइयों के लिए खाना और लिफ़ाफ़े। नया परिवार उसे सम्मान के साथ पीहर भेजता है, और उसका अपना परिवार देखता है कि उसे कितने प्यार से रखा जा रहा है।

जड़ें **शास्त्रीय या पौराणिक विधि और समाज की रीत**

गणेशजी का धन्यवाद पंडित जी की उस परंपरा से आता है जिसमें हर काम उन्हीं से शुरू होता है और उन्हीं पर ख़त्म होता है। मायां और सीख राजस्थानी घरेलू रिवाज़ हैं, जिन्हें परिवार की औरतें निभाती आई हैं।

कुछ परिवारों में

समापन की ये रस्में सिर्फ़ एक स्रोत पर टिकी हैं जिसमें इनका पूरा ब्योरा है, यानी परिवार की पुस्तिका, और अलग-अलग घरों में इनका तरीक़ा अलग होता है। कुछ परिवार शादी के कुछ ही दिनों में मायां उठा लेते हैं; कुछ पंडित जी के बताए दिन का इंतज़ार करते हैं। अगर शादी के लिए मायां हॉल में ले जाई गई थी, तो पहले किसी को उसे घर वापस लाना होगा।

इस किताब के अग्रवाल संस्करण में मायां उठाने या गणेशजी को चूरमा चढ़ाने जैसी कोई रस्म नहीं है; उसमें दीवार पर बनाया जाने वाला थापा ही मायां के सबसे क़रीब है।

परिवार की पुस्तिका उस परिवार के अपने नियम के रूप में यह दर्ज करती है कि बहू के पहली बार पीहर जाने से पहले उसके हाथों पर मेहंदी लगाई जाती है और उससे मुट्ठी बंद करने को कहा जाता है। इसका बताया गया मतलब यह है कि ससुराल की बातें बंद मुट्ठी की तरह बंद रखनी हैं। पुस्तिका इसे एक परिवार का रिवाज़ बताती है, और यह किताब भी इसे उसी रूप में छाप रही है।

इसमें आपकी भूमिका

- **दुल्हन:** मायां उठाने की सुबह अपनी सास के साथ सिर धोइए। यह उन गिनी-चुनी रस्मों में से है जो आप दोनों साथ-साथ करती हैं।
- **दूल्हा:** अपने माता-पिता और अपनी पत्नी के साथ गणेशजी के मंदिर जाइए। यह छोटी-सी मुलाक़ात है, और इससे वह शादी पूरी होती है जो आपके सावा पूजन से शुरू हुई थी।
- **भाई-बहन:** अगर मायां की तख़्ती हॉल से घर लाने के लिए किसी का नाम तय नहीं हुआ है, तो खुद ले आइए और उसे सीधा खड़ा रखिए। सीख के लिए दुल्हन को उसके भाई लेने आते हैं: जो परोसा जाए, खा लीजिए।

बड़ों से पूछिए

1. हमारे परिवार की पिछली शादी में मायां किसने उठाई थी, और किस दिन?

2. जब हमारे परिवार की कोई बहू पहली बार सीख पर पीहर गई, तो उसके साथ क्या भेजा गया था?

अध्याय 33

चूड़ा और गठजोड़े की जात

दुल्हन · दूल्हा



एक मिनट में

दो रिवाज़ शादी को उसके बाद के हफ़्तों तक ले जाते हैं। हाथीदाँत का जो चूड़ा मायरे में दुल्हन के मामा की ओर से आया था, वह उसकी कलाइयों पर बना रहता है; लखेसरी में उसके आगे और पीछे लाख की चूड़ियाँ जोड़ी जाती हैं, और कुछ दिनों या हफ़्तों बाद उसे बाक़ायदा लाख की चूड़ियों से बदला जाता है। और जोड़ा गठजोड़ा बाँधकर परिवार के अपने देवस्थानों पर जात देने जाता है, जैसे बच्चे को उसके पहले मुंडन के लिए वहाँ ले जाया जाता है।

कब	लखेसरी पहले कुछ दिनों में; चूड़ा 7 या 11 दिन, सवा महीने या लगभग चालीस दिन बाद बदला जाता है; जात किसी ऐसे समय जब इसकी मनाही न हो
कौन निभाता है	सास, लखारण या जेठानी; दिन के लिए पंडित जी; जात के लिए बड़ी माँ, माँ या काकी
कहाँ	दूल्हे का घर; परिवार के देवस्थान
भाव	आशीर्वाद; नए घर की ओर

क्या होता है

1. लखेसरी: दुल्हन का सेनासूत और गहने उतारे जाते हैं, और वह सेनासूत अपनी सास या घर की सबसे बड़ी औरत को उनके पैर छूकर देती है।
2. एक लखारण (चूड़ियाँ बनाने वाली), या काकी-सास या जेठानी, अंगारों पर रखे तवे पर लाख की चूड़ियाँ गरम करती है और हर हाथ में हाथीदाँत के चूड़े के आगे एक और पीछे एक चूड़ी चढ़ा देती है। हाथीदाँत का चूड़ा एक बार पहन लेने के बाद इसके लिए उतारा नहीं जाता। दुल्हन बाजरे के दाने लेकर अपने हाथ आग के ऊपर रखती है, चूड़ियों पर पानी डाला जाता है, और ननद हर हाथ की एक चूड़ी पर मौली बाँधती है।
3. ब्यावला चूड़ा बदलना: शादी के 7 या 11 दिन या सवा महीने बाद, उस समय पर जिसे पंडित जी दूल्हे के नाम की राशि के चंद्रमा से तय करते हैं, चूड़ा बदला जाता है। पहले लाख की एक चूड़ी किसी ब्राह्मणी को दी जाती है। दाएँ हाथ का हाथीदाँत का चूड़ा उतरता है और लाख की पाँच लाल चूड़ियाँ चढ़ती हैं; बाएँ हाथ में छह। हर हाथ की एक चूड़ी पर काले ऊन का धागा बाँधा जाता है, और सात दिन बाद लाख की जगह साधारण चूड़ा पहन लिया जाता है।
4. गठजोड़े की जात: चातुर्मास, श्राद्ध पक्ष, मलमास और अधिक मास को छोड़कर, जोड़ा गठजोड़ा बाँधकर जात देने जाता है। उन्हें बड़ी माँ, माँ या काकी लेकर जाती हैं।
5. हर देवस्थान पर वे नारियल, माला और प्रसाद चढ़ाते हैं, धोक देते हैं और परिक्रमा करते हैं।
6. अगर दुल्हन पहली बार पुश्तैनी गाँव जा रही हो, तो आँगन में पगलिए बनाए जाते हैं, जोड़ा तिलक के लिए बैठता है और घर की ठाकुरवाड़ी में दर्शन करता है, और लापसी और बड़ी बनाई जाती है।

हम ऐसा क्यों करते हैं

मायां उठ जाने के बाद ये दो और रिवाज़ ज़रूरत से ज़्यादा लग सकते हैं। असल में ये शादी को भीतर से पूरा करते हैं: दुल्हन की कलाइयाँ नपे-तुले कदमों में रोज़ के पहनावे पर लौटती हैं, और उसे उसके नए परिवार के देवताओं के पास ले जाया जाता है।

हाथीदाँत का चूड़ा माहेश्वरी दुल्हन की सबसे साफ़ पहचान है। हिंदी विवेक में समाज के ही एक व्यक्ति का लेख कहता है कि माहेश्वरी दुल्हन के लिए हाथीदाँत की चूड़ियाँ ज़रूरी हैं और कम से कम चालीस दिन पहनी जाती हैं। दुल्हन का चूड़ा मायरे में उसके मामा की ओर से आया था (अध्याय 11) और लख के समय पहनाया गया था (अध्याय 14)। लखेसरी उसे छेड़े बिना उसके आगे और पीछे लाख जोड़ती है; और हफ़्तों बाद, चुने हुए मुहूर्त में चूड़ा बदलना उसे दुल्हन के पहनावे से एक सुहागिन की रोज़ की चूड़ियों पर ले आता है। तब तक चूड़ा ही उसकी नई स्थिति की निशानी रहता है।

हाथीदाँत अब भारत में ख़रीदा या बेचा नहीं जा सकता; वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 ने, 1986 और 1991 के संशोधनों के साथ, इसका व्यापार बंद कर दिया। परिवार पुश्तैनी चूड़े, या हड्डी या प्लास्टिक के चूड़े इस्तेमाल करते हैं।

मुंबई के एक माहेश्वरी परिवार की लिखी हुई विवाह-पुस्तिका (reetrivaz.in) जात को एक पंक्ति में समझा देती है: जैसे बेटे का पहला मुंडन देवस्थान पर होता है, वैसे ही शादी के बाद जोड़ा जात देने जाता है। दुल्हन के लिए इसका सबसे ज़्यादा महत्व है, क्योंकि रिवाज़ के अनुसार अब वह अपने पति की कुलदेवी को अपनी कुलदेवी मानती है। जात देने का वचन शादी के दौरान बालाजी और माताजी के गीतों में गाया गया था; यह यात्रा उस वचन को निभाती है।

जड़ें **समाज की रीत**

गहरी भक्ति से जुड़ा पारिवारिक रिवाज़, जिसे घर की औरतें निभाती हैं; पंडित जी सिर्फ़ चूड़ा बदलने का मुहूर्त चुनते हैं।

कुछ परिवारों में

अग्रवालों की जात महालक्ष्मी के यहाँ जाती है; माहेश्वरियों की कोई एक कुलदेवी नहीं है। हर खांप की अपनी कुलदेवी है, आम तौर पर किसी राजस्थानी देवस्थान की देवी (भाग शून्य); इंटरनेट पर मिलने वाली सूचियाँ आपस में मेल नहीं खातीं, और परिवार की अपनी जानकारी ही मानी जाती है।

व्यवहार में कुलदेवता परिवार का इष्ट देवता या गाँव का देवता भी हो सकता है। परिवार की पुस्तिका की जात की यात्रा सालासर बालाजी (सवामणी के साथ), डूंगर हनुमानजी, डाबड़ी माताजी, पाबोलाव हनुमानजी और लक्ष्मीजी के मंदिर तक जाती है, जबकि वही परिवार आशापुरा माता को अपनी खांप की कुलदेवी बताता है। पूछिए कि आपका परिवार किन देवस्थानों पर जाता है।

चूड़ा बदलने के लिए पुस्तिका तारा डूबा होने (शुक्र अस्त), मलमास, श्रावण, रिक्ता तिथियों और अमावस्या से बचती है; अपने पंडित जी से पूछिए कि वे किन दिनों से बचते हैं।

जोड़े की पहली महेश नवमी

साल में नए जोड़े के लिए एक दिन और आता है। महेश नवमी, यानी ज्येष्ठ शुक्ल नवमी, वह दिन है जब समाज अपनी शुरुआत को याद करता है: बहत्तर लोगों को फिर से जीवन मिला, उन्होंने अपने हथियार रख दिए, और उन्हें माहेश्वरी नाम मिला (भाग शून्य)। समाज के कुछ विवरणों के अनुसार

नए विवाहित जोड़े उस दिन शिव और पार्वती की पूजा करते हैं। जिस जोड़े की शादी में मामा फेरे के ज़रिए यह कहानी साथ चली हो, वह अपनी पहली महेश नवमी साथ मनाना चाह सकता है।

इसमें आपकी भूमिका

- **दुल्हन:** लखेसरी से पहले अपनी सास से पूछ लीजिए कि चूड़ियाँ कौन पहनाएगा, और अंगारों के ऊपर अपने हाथ बिना हिलाए रखिए।
- **दूल्हा:** चूड़ा बदलने का दिन आपके नाम की राशि के चंद्रमा से देखा जाता है; पक्का कर लीजिए कि पंडित जी के पास आपका नाम हो।
- **दोनों:** यात्रा की योजना बनाने से पहले बड़ों से पूछ लीजिए कि जात किन देवस्थानों पर जाती है, और तारीख़ लिख लीजिए।

बड़ों से पूछिए

1. गठजोड़े की जात के लिए हमारा परिवार किन देवस्थानों पर जाता है, और किस क्रम में? क्या हमारी खांप की कुलदेवी उनमें शामिल हैं?

2. हमारे परिवार की बहुओं का चूड़ा हाथीदाँत का था, हड्डी का या किसी और चीज़ का, और वह कितने दिन बाद बदला गया था?

आम सवाल

क्या थालेड़ी में थालियों की सचमुच कोई आवाज़ नहीं होनी चाहिए?

खेल यही है। दुल्हन दोनों हाथों से सात थालियाँ बिना खनकाए उठाती है और अपनी सास को थमाती है, जो घर की मालकिन के रूप में उससे आगे बैठी होती हैं। नए घर में यह उसका पहला काम होता है, जिसे वह सावधानी से करती है। अगर कोई थाली खनक जाए तो औरतें हँस पड़ती हैं और थालेड़ी का गीत, जो खुद एक नकली झगड़ा है, चलता रहता है। ज़्यादातर परिवारों में कोई भी इसे बहू के ख़िलाफ़ नहीं मानता।

अगर कोथली के लिए घर में गिन्नी न हो तो?

मुंबई के एक माहेश्वरी परिवार की लिखी हुई विवाह-पुस्तिका (reetrivaz.in) में 200 रुपये के सिक्कों के बीच एक सोने का सिक्का रखा जाता है, लेकिन इस रस्म की असली बात उसका यह नियम है कि ख़ास सिक्का आख़िर में बहू को ही मिलता है, क्योंकि अगर उसकी मुट्ठी में न आए तो बड़ा उसे खुद दे देता है। जिस परिवार में गिन्नी न हो, वह कोई भी ऐसा सिक्का चुन सकता है जिसे वह ख़ास मानता हो। माहेश्वरी समाज लुधियाना की रस्मों की सूची में बताया गया मतलब, यानी बहू को यह दिखाना कि घर अपने पैसे की देखभाल कैसे करता है, वही रहता है।

हाथीदाँत पर रोक है, तो हम क्या पहनें?

हाथीदाँत का व्यापार वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 के तहत, 1986 और 1991 के संशोधनों के साथ, बंद कर दिया गया। परिवार घर में पहले से मौजूद पुश्तैनी चूड़ा, या हड्डी या प्लास्टिक का चूड़ा इस्तेमाल करते हैं। चूड़ा चाहे किसी भी चीज़ का हो, रिवाज़ वही रहते हैं: वह मायरे में आता है, लखेसरी में उसके साथ लाख जोड़ी जाती है, और पंडित जी के तय किए दिन उसे बदला जाता है।

अगर हमें अपनी कुलदेवी का पता न हो, तो जात के लिए कहाँ जाएँ?

पिता की तरफ़ के परिवार के सबसे बड़े लोगों से शुरुआत कीजिए, क्योंकि कुलदेवी उसी वंश में आगे चलती है। इंटरनेट पर ऐसी सूचियाँ हैं जो हर खांप को किसी देवी से जोड़ती हैं, लेकिन उनकी बारीकियों में फ़र्क होता है, और परिवार की अपनी याद ही मानी जाती है। व्यवहार में जात परिवार के इष्ट देवता या गाँव के देवता के यहाँ भी जा सकती है; परिवार की पुस्तिका की यात्रा में ज़्यादातर हनुमानजी के मंदिर हैं। कुछ परिवार पहली जात किसी ऐसे देवस्थान पर देते हैं जिसे वे जानते हैं, और परिवार के देवस्थान का पता चलने पर बाद में वहाँ जाते हैं।

शादी "पूरी" कब होती है?

परिवार की पुस्तिका के अनुसार, जब मायां उठा ली जाती है और धन्यवाद के रूप में गणेशजी को पाँच किलो चूरमा चढ़ा दिया जाता है: जो सावा पूजन ने शुरू किया था, वह पूरा हो जाता है। चूड़ा बदलना और गठजोड़े की जात इसे कुछ हफ़्ते और आगे ले जाते हैं। जोड़ा अपनी पहली महेश नवमी भी साथ मनाना चाह सकता है (अध्याय 33)।

क्या खेल दोनों घरों में खेले जाते हैं?

परिवार की पुस्तिका में ऐसा ही है: जूवा-जूई और कांकण डोरा खोलना कंवर कलेवा के समय दुल्हन के घर पर, और फिर दूल्हे के घर पर दोबारा। कुछ परिवार इन्हें एक ही बार खेलते हैं, शादी के अगले दिन जोड़ा जहाँ भी हो। दोनों तरफ़ से पूछ लीजिए कि वे क्या चाहते हैं।

पूरी शादी, एक कहानी की तरह

एक-एक अध्याय करके देखें तो माहेश्वरी शादी रिवाज़ों की एक लंबी सूची जैसी लग सकती है। नान्दीमुख से जात तक पूरी देखें, तो वह एक ही कहानी कहती है: दो परिवार आशीर्वाद माँगते हैं, नाज़ुक दिनों में जोड़े की रक्षा करते हैं, एक-दूसरे से बँधते हैं, गवाहों के सामने वचन देते हैं, और दुल्हन को एक घर से दूसरे घर ले जाते हैं। भाग शून्य के पाँच भाव ही इस कहानी के अध्याय हैं, और वे लगभग इसी क्रम में आते हैं।

आशीर्वाद

शादी माँगने से शुरू होती है। नान्दीमुख दस दिन पहले पुरखों को बुलाता है, ताकि परिवार में कोई भी बात आगे होने वाले काम को रोक न सके। सावा पूजन में गणेशजी का आह्वान होता है और फिर उन्हें परिवार के एक छोटे लड़के, विनायक, के रूप में बिठाया जाता है, जो दाई चौकी पर बैठता है और हर रस्म सबसे पहले उसे मिलती है। गीतों की हर बैठक विनायक, बालाजी, श्यामजी, माताजी और पितरों के पाँच गीतों से शुरू होती है। मायां दीवार पर लगती है और बाक़ी सब की साक्षी बनती है। अंत में कहानी वहीं लौट आती है जहाँ से शुरू हुई थी: मायां उठाई जाती है, चूरमे से गणेशजी का धन्यवाद होता है, और जोड़ा परिवार के अपने देवताओं के पास जात देने जाता है।

रक्षा

जब घर में शादी शुरू हो जाती है, तो दूल्हा-दुल्हन को नाज़ुक माना जाता है, और माहेश्वरी शादी उनकी कड़ी रखवाली करती है। बान उन्हें घर में रखता है; उनके आगे नमक, कोयला और चाँदी की अंगूठी रखी जाती है और उन्हें साथ रखने को चाँदी की चिटिया दी जाती है। दरवाज़े पर उन पर लूणराई वारी जाती है। मायां के सामने कांकण डोरा बँधता है, जिसकी गाँठों में लोहा, लाख और एक कौड़ी होती है। एक छोटी लड़की नमक और राई लेकर दूल्हे के पीछे घोड़ी पर बैठती है, और तोरण पर दूल्हे का सामना काजल, शीशे, नीम और झुनझुने से होता है। इन दिनों ये दोनों घर के सबसे अनमोल लोग होते हैं।

दो परिवारों का बंधन

यह संस्करण सबसे ज़्यादा ज़ोर यहीं देता है, क्योंकि माहेश्वरी शादी का बहुत बड़ा हिस्सा माँ की तरफ़ के लोग निभाते हैं। माँ हर चीज़ बत्तीस-बत्तीस लेकर अपने भाइयों के पास जाती है, और वे मायरा लेकर लौटते हैं: शादी के कपड़े और हाथीदाँत का चूड़ा। मामा बच्चे को पाटे से उठाता है, दुल्हन को मंडप में

लाता है और मामा फेरे करवाता है। दोनों घरों के बीच उपहार तय दिशाओं में जाते हैं, जंवाई घोड़ी की लगाम थामते हैं, बहनें दरवाज़ा रोकती हैं, और आख़िर में दुल्हन अपनी सगाजी की गोद में बैठती है।

सहमति और साक्षी

बीच में वचन है। वरणा में दोनों पंडित दोनों गोत्र और तीन पीढ़ियाँ ज़ोर से बोलते हैं। फिर आता है वह रूप जो माहेश्वरी शादी का अपना है: दरवाज़े पर तीन फेरे, जिनमें मामा दुल्हन को दूल्हे के चारों ओर घुमाता है, उन पत्नियों की याद में जिनके विवाह महेश और पार्वती ने फिर से जोड़े थे; और अग्नि के चार फेरे, जिनमें तीन में दुल्हन आगे चलती है, हाथों में भाई की दी हुई खील लिए, और एक में दूल्हा। फिर शिला, सात कदम और ध्रुव तारा आते हैं, और जब दुल्हन उसकी दाईं तरफ़ से बाईं तरफ़ आ जाती है, तो वह उसकी पत्नी बन जाती है।

नए घर की ओर

आख़िरी हिस्सा घर बदलने का है। दूल्हे की कटार, जिससे उसने दुल्हन के द्वार पर तोरण मारा था, अपने घर पर सात थालियों को अलग करती है, और दुल्हन उन्हें बिना आवाज़ किए अपनी सास के लिए उठाती है। सुहाग थाल में औरतें उसे खिलाती हैं, घर अपना सोने का सिक्का उसके हाथ में रखता है, और उसका भाई उसे पीहर ले जाने आता है। पहले हफ़्तों तक हाथीदाँत का चूड़ा उसकी कलाइयों पर उसकी नई स्थिति की निशानी बना रहता है, जब तक कि उसे लाख से बदला न जाए और जोड़ा एक साथ परिवार के देवताओं के सामने खड़ा न हो जाए।

इस तरह पढ़ें तो छोटे से छोटे रिवाज़ की भी कहानी में अपनी जगह है। कोई परिवार कहानी को छोटा कर सकता है, कुछ दृश्यों का क्रम बदल सकता है या कुछ छोड़ सकता है, और बहुत-से परिवार ऐसा करते भी हैं। इस किताब ने यही दिखाने की कोशिश की है कि हर दृश्य किसलिए है, ताकि परिवार जो भी निभाए, यह जानते हुए निभाए कि क्यों।

रस्मों का मतलब बनाए रखें: परिवारों के लिए कुछ सुझाव

रस्मों का मतलब और गहरा करने के लिए परिवार को शादी में कुछ भी जोड़ने की ज़रूरत नहीं है। जो मदद करता है, वह ज़्यादातर छोटी-छोटी बातें हैं। जब लोग जानते हैं कि कोई रस्म किसलिए है, तो वे उसके ख़त्म होने का इंतज़ार करने के बजाय उसमें हिस्सा लेते हैं।

हर रस्म से पहले एक छोटा हिस्सा पढ़िए

कोई रस्म शुरू होने से पहले किसी एक व्यक्ति से कहिए कि वह उस रस्म के अध्याय का "एक मिनट में" वाला हिस्सा ज़ोर से पढ़ दे। इसमें एक मिनट से भी कम लगता है, और इससे पूरे कमरे के देखने का ढंग बदल जाता है। जिस चचेरे भाई या बहन को पता हो कि मामा फेरे में मामा दुल्हन के पीछे क्यों खड़ा होता है, या अग्नि के पास दुल्हन का भाई उसके हाथ क्यों भरता है, वह उन पलों को अलग नज़र से देखेगा। पंडित जी से समय पहले से तय कर लीजिए, ताकि पढ़ना उनके मंत्रों के बीच में न आए।

मेहमानों के लिए अंग्रेज़ी में एक कार्ड बनाइए

कुछ मेहमान हिंदी या मारवाड़ी नहीं समझते होंगे: दोस्त, दूसरे समाजों से आए जीवनसाथी, विदेश में पले-बढ़े रिश्तेदार। हर कुर्सी पर एक कार्ड रखा जा सकता है, जिसमें शादी की शाम का क्रम हो और हर रस्म पर दो पंक्तियाँ: वरणा, ढुकाव और तोरण, सुवाली और वरमाला, मामा फेरे, कन्यादान, गठजोड़ा और हथलेवा, अग्नि के चार फेरे, सप्तपदी और सिंदूर। फेरों की गिनती पर एक वाक्य ज़रूर जोड़िए, क्योंकि जो मेहमान अग्नि के सात फेरों की उम्मीद कर रहे होंगे, वे वरना उलझन में पड़ जाएँगे: दरवाज़े पर तीन और अग्नि के चार, मिलाकर सात।

पंडित जी से पहले बात कर लीजिए

शादी से लगभग एक हफ़्ता पहले पंडित जी से मिलिए, हो सके तो दोनों पक्षों के साथ। ये बातें पहले से तय कर लेना अच्छा है:

- फेरों की गिनती: क्या आपके परिवार में दरवाज़े पर तीन मामा फेरे होते हैं, और अग्नि के चार फेरे (तीन में दुल्हन आगे, एक में दूल्हा) होते हैं या सात।

- दान का क्रम: कन्यादान अग्नि के फेरों से पहले होता है या, जैसा कुछ परिवारों में बताया जाता है, उनके बाद।
- वरणा और संकल्प के लिए नाम: खांप, गोत्र, और दोनों तरफ़ की तीन पीढ़ियाँ, साफ़-साफ़ लिखकर। अगर आपके परिवार को अपना प्रवर, वेद और शाखा पता हो, तो वह भी उन्हें दे दीजिए।
- क्या वे मुख्य मंत्रों का मतलब साथ-साथ हिंदी या अंग्रेज़ी में समझाएँगे। कहने पर बहुत-से पंडित यह ख़ुशी से करते हैं।
- जोड़ा कोई बदलाव चाहता हो तो वह। उस दिन पंडित जी की अपनी परंपरा ही चलती है, लेकिन ज़्यादातर पंडित पहले से जानना पसंद करते हैं।

बड़ों के लिए एक शाम

शादी से पहले एक शाम अलग रखिए, शायद सावा पूजन के बाद, जब दादा-दादी, नाना-नानी, माता-पिता और बड़ी चाचियाँ-मौसियाँ बताएँ कि हमारे परिवार में यह सब कैसे होता आया है: परिवार उत्पत्ति कथा का कौन-सा रूप मानता है, दरवाज़े पर कितने फेरे लिए गए थे, मायरे में क्या आया था, जात किन देवस्थानों पर गई थी। जिसके पास परिवार के गीतों की कॉपी हो, उससे कहिए कि वह उसे निकाले, और गीत मोबाइल पर रिकॉर्ड कर लीजिए; देवी-देवताओं के पाँच गीतों और कुलदेवी और पितरों के गीतों में आपके अपने परिवार के नाम आते हैं। "बड़ों से पूछिए" वाले सवालों से शुरुआत कीजिए और जवाब दी गई जगह में लिखिए। परिवार की ये बातें किसी किताब में नहीं मिलतीं।

विनायक कौन बनेगा, यह जल्दी तय कीजिए

विनायक बना लड़का सावा पूजन से गणगौर पूजा तक दूल्हे या दुल्हन के पास बैठता है, और हर रस्म सबसे पहले उसे मिलती है। मुंबई के एक माहेश्वरी परिवार की लिखी हुई विवाह-पुस्तिका (reetrivaz.in) में दर्ज है कि सगे भाई को कभी नहीं चुना जाता; काका, बुआ, बहन या मामा की तरफ़ के किसी भाई को चुना जाता है। सावा पूजन से पहले बड़ों के साथ यह तय कर लीजिए, और किसी बड़े चचेरे-ममेरे भाई को उसकी देखभाल का ज़िम्मा दीजिए, क्योंकि शादी के कपड़ों में सजे छोटे बच्चे को किसी के साथ की ज़रूरत होती है।

छोटे भाई-बहनों को नाम लेकर काम सौंपिए

जिन छोटे भाई-बहनों को लगता है कि वे किसी काम के हैं, वे ध्यान देते हैं। हर एक को नाम लेकर एक काम दीजिए, साथ में वह अध्याय जो उसे समझाता है:

- लंबे दिनों में विनायक को सँभालना (अध्याय 8)।

- बान के समय, दूल्हे या दुल्हन के पहली सात बड़ियाँ बना लेने के बाद, मूंग की बड़ियाँ बनाना; परिवार की पुस्तिका यह काम कुंवारी लड़कियों को देती है (अध्याय 9)।
- मामा फेरे के लिए कोनों पर फूलों की चार टोकरियाँ पकड़ना (अध्याय 21)।
- थालेड़ी के लिए सात थालियाँ और जूवा-जूई के लिए परात सजाना (अध्याय 28 और 30)।
- हर रस्म से पहले "एक मिनट में" वाला हिस्सा पढ़ना, और बड़ों के जवाब रिकॉर्ड करना।

शादी को हॉल से घर लाइए

रस्मों की चीज़ें हॉल में आसानी से छूट जाती हैं। परिवार की पुस्तिका कहती है कि किसी ज़िम्मेदार व्यक्ति को भेजकर तोरण, तणी, थांब कलश और बेह के सात मटके घर वापस मँगवाए जाएँ, और उस परिवार में तणी घर के मंदिर में बाँधी जाती है। इस सूची में मायां की तख़्ती भी जोड़ लीजिए। उस व्यक्ति का नाम पहले से तय कर दीजिए, क्योंकि तख़्ती के बिना मायां उठाना (अध्याय 32) हो ही नहीं सकता।

परिवार को अपने फ़ैसले खुद करने दीजिए

यहाँ कुछ भी परिवार से ज़्यादा रस्में या लंबी रस्में करने को नहीं कहता। कुछ परिवार शादी के दिन घटाएँगे; कुछ ऐसे रिवाज़ को वापस लाएँगे जो उनके दादा-दादी को याद है। जो भी निभाया जाए, वह ध्यान से निभाना तब आसान होता है जब वहाँ मौजूद हर कोई जानता हो कि वह किसलिए है।

शब्दावली

इस किताब में आए शब्द देवनागरी में, और साथ में कोष्ठक में उनकी वह रोमन वर्तनी, जो किताब के अंग्रेज़ी संस्करण में इस्तेमाल हुई है। कई शब्दों को अलग-अलग परिवार अलग ढंग से बोलते और लिखते हैं, और कुछ परिवार एक ही चीज़ के लिए दूसरे शब्द इस्तेमाल करते हैं; अध्याय के नंबर बताते हैं कि हर शब्द कहाँ समझाया गया है।

अंतरपट (Antarpat)
मंडप की विधियों में दो मौकों पर दुल्हन और दूल्हे के बीच पकड़ा जाने वाला कपड़े का परदा; मराठी और गुजराती शादियों में यह ज़्यादा जाना-पहचाना है (अध्याय 22)।

अटाण (Atan)
झोळ के लिए गुनगुने दही की मिट्टी की छोटी हांडी; अटाण घालना उसी रस्म का दूसरा नाम है (अध्याय 10 और 14)।

आरता (Aarta)
आदर के लिए किसी के सामने दीया या थाली घुमाना, जो आम तौर पर बुआ या बहन करती है; यह आरती का राजस्थानी रूप है (अध्याय 2 और आगे)।

उत्पत्ति कथा (Utpatti katha)
समाज की उत्पत्ति की कहानी, जो पवित्र परंपरा के रूप में सुनाई जाती है (भाग शून्य)।

उप-खांप (Up-khap)
देखिए नख (भाग शून्य)।

उमराव (Umrav)
सरदार; उत्पत्ति कथा के बहत्तर साथी; गीतों में दूल्हे का एक नाम भी (भाग शून्य, अध्याय 5)।

उवारी (Uvari)
किसी के सिर पर से वारकर फिर सेवक या नाई को दिए जाने वाले रुपये (अध्याय 2, 11 और 17)।

ओळ्यूं (Olyun)
बिदाई के समय गाए जाने वाले याद के गीत (अध्याय 27)।

कंवर कलेवा (Kanwar Kaleva)
कंवर यानी राजकुमार का नाश्ता: शादी के अगले दिन दुल्हन के घर दूल्हे का भोजन। कलेवा यानी वह भोजन जो दोनों घरों के बीच भेजा या परोसा जाता है (अध्याय 31)।

कटार (Katar)

दूल्हे के पास रहने वाली कटार, जो तोरण पर और थालेड़ी में काम आती है (अध्याय 17, 19 और 28)।

कन्यादान (Kanyadaan)

दुल्हन के माता-पिता का अपनी बेटी को दूल्हे को सौंपना (अध्याय 22)।

कन्यावल (Kanyaval)

दुल्हन के बड़े-बुज़ुर्गों का व्रत, जो वे शादी के बाद उसका मुंह देखने तक रखते हैं (अध्याय 16 और 25)।

कलंगी (Kilangi)

दूल्हे के साफ़े पर लगी पंख जैसी सजावट; परिवार की पुस्तिका इसे किंलगी लिखती है, आम हिंदी में इसे कलंगी कहते हैं (अध्याय 17)।

कलश (Kalash)

मिट्टी या धातु का पानी का पात्र, जिस पर आम के पत्ते और नारियल रखकर उसे भरे-पूरेपन की निशानी के रूप में रखा जाता है (अध्याय 8 और आगे)।

कस (Kas)

दूल्हे के कोट की पिन, जिसे दरवाज़े पर दुल्हन की माँ ले लेती है (अध्याय 17 और 19)।

कांकण डोरा (Kankan Dora)

सात गाँठों वाला रक्षा का धागा, जो मायां के समय दुल्हन और दूल्हे को बाँधा जाता है और शादी के बाद खोला जाता है (अध्याय 15 और 30)।

कान पकड़ाई (Kan pakdai)

दुल्हन अपने देवर के कान पकड़ती है और उसे लिफ़ाफ़ा देती है (अध्याय 29)।

कामण (Kaman)

दुल्हन के घर में गीतों की बैठक के आख़िर में गाए जाने वाले गीत (अध्याय 5)।

कुमकुम पत्रिका (Kumkum patrika)

शादी का औपचारिक निमंत्रण-पत्र, जो लगभग एक महीना पहले भेजा जाता है (अध्याय 3)।

कुलदेवी (Kuldevi)

परिवार की देवी, जो माहेश्वरियों में खांप के हिसाब से अलग-अलग होती हैं (भाग शून्य, अध्याय 33)।

कूकड़ी (Kukdi)

रात भर के जागरण का आख़िरी गीत (अध्याय 13)।

कोथली (Kothli)

कपड़े की थैली; दूल्हे के घर, सिक्कों से भरी वह लाल थैली, जिसमें से दुल्हन सिक्के निकालती है (अध्याय 29)।

कोरा भाता (Kora bhata)

मायरे में आया सादा सफ़ेद कपड़ा, जिसे दुल्हन शादी के जोड़े के नीचे पहनती है और जिसे बाद में रंगा जाता है (अध्याय 11 और 14)।

खांप (Khap)

उपनाम के स्तर का कुल, जिसकी जड़ परंपरा के अनुसार बहत्तर उमरावों में से किसी एक तक जाती है; इसे खाप या खम्प भी लिखा जाता है (भाग शून्य)।

खील (Khil)

धान का लावा: वही लाजा, जिसे अग्नि के पास दुल्हन का भाई उसके हाथों में डालता है (अध्याय 23)।

खुनखुनिया (Khunkhuniya)

झुनझुना, जो दरवाज़े पर दूल्हे के कान के पास बजाया जाता है (अध्याय 19)।

खोळ (Khol)

गोद, जिसे कपड़े की तह के रूप में आगे फैलाया जाता है; खोळ भरना यानी उसे उपहारों से भरना (अध्याय 1 और आगे)।

गठजोड़ा (Gathjoda)

दूल्हे के कपड़े को दुल्हन की ओढ़नी से बाँधने वाली गाँठ, जिसमें मूंग, चावल, हल्दी, सुपारी और एक रुपया होता है (अध्याय 22); गठजोड़े की जात यह गाँठ बँधी रहते हुए ही की जाती है (अध्याय 33)।

गणगौर (Gangaur)

ईसर के साथ गौरी, यानी शिव के साथ पार्वती; विवाहित जोड़े का राजस्थान का त्योहार, और वह पूजा जो शादी से पहले दुल्हन और दूल्हा, दोनों अपने-अपने घर सात सुहागिनों के साथ करते हैं (अध्याय 3 और 15)।

गिन्नी (Ginni)

सोने का सिक्का, जैसे कोथली की थैली में छिपाया गया सिक्का (अध्याय 29)।

गुड़ (Gud)

गन्ने से बना गुड़; लगभग हर रस्म में इससे मुंह मीठा कराया जाता है (पूरी किताब में)।

गोत्र (Gotra)

खांप से जुड़ा ऋषि का नाम, जो वरणा और कन्यादान के समय बोला जाता है; कई खांपों का एक ही गोत्र हो सकता है (भाग शून्य, अध्याय 18 और 22)।

गोत्रोच्चार (Gotrochar)

दोनों पक्षों के गोत्र और तीन पीढ़ियों के नाम ज़ोर से बोलना (अध्याय 18)।

गोदान (Godaan)

कन्यादान के समय गाय का दान; आज यह गाय के नाम पर दिया जाने वाला दान है (अध्याय 22)।

घट विवाह (Ghat Vivah)

कुछ परिवारों में, शादी से पहले की रात दुल्हन का मिट्टी के घड़े से घर के भीतर ही विवाह, ज्योतिष के उपाय के रूप में (अध्याय 13)।

घुमाई (Ghumai)

बड़े-बुज़ुर्ग दूल्हे और दुल्हन को घुमाते हैं और उन्हें लिफ़ाफ़े देते हैं (अध्याय 29)।

घूंघट (Ghunghat)

दुल्हन का ओढ़ने के पल्लू से अपना चेहरा ढकना; यह एक रिवाज़ है, कोई विधि नहीं (अध्याय 29)।

घोड़ी (Ghodi)

वह घोड़ी जिस पर दूल्हा निकासी में बैठता है; दूल्हे के लिए गाए जाने वाले गीत भी घोड़ी कहलाते हैं (अध्याय 5 और 17)।

चंदवा (Chandwa)

ऊपर तना हुआ कपड़ा, अक्सर एक ओढ़ना, जिसे चार महिलाएँ ऊँचा थामती हैं और जिसके नीचे दुल्हन या दूल्हे को लाया जाता है (अध्याय 13 और 29)।

चाक पूजन (Chak Puja)

कुम्हार के चाक की पूजा, जिससे कभी शादी के बर्तन आते थे (अध्याय 10)।

चिटिया (Chitiya)

चाँदी का एक छोटा टुकड़ा, जिसे दुल्हन या दूल्हा बान से ही रक्षा के लिए अपने पास रखते हैं (अध्याय 9)।

चीकणी कोथली (Chikni Kothli)

लड़के वालों की महिलाएँ उपहार लेकर दुल्हन से मिलने आती हैं; यह मुद्दा टीके का जवाब है (अध्याय 2)।

चुनरी (Chunri)

बंधेज की ओढ़नी; मायरे में भाई अपनी बहन को चुनरी ओढ़ाते हैं (अध्याय 11)।

चूड़ा (Chuda)

चूड़ियों का पूरा जोड़ा; यहाँ दुल्हन का हाथीदाँत का चूड़ा, जो मायरे में आता है और बाद में लाख के चूड़े से बदला जाता है (अध्याय 11 और 33)।

चूरमा (Churma)

कुटे हुए गेहूँ, घी और चीनी की मिठाई; शादी के समापन पर गणेशजी को पाँच किलो चूरमा चढ़ाया जाता है (अध्याय 32)।

चौकी (Chauki)

लकड़ी का नीचा पाटा या आसन, जो ज़्यादातर रस्मों में काम आता है (अध्याय 7 और आगे)।

छात (Chhat)

फेरों के बाद नाई जोड़े के पीछे जो कपड़ा बिछाता है, और जिसके लिए उसे नेग मिलता है (अध्याय 25)।

जंवाई (Jamai)
घर का दामाद (अध्याय 17 और आगे)।

जात (Jaat)
परिवार के देवस्थानों के दर्शन के लिए जाना; गठजोड़े की जात शादी के बाद जोड़े की ऐसी ही यात्रा है (अध्याय 33)।

जाला (Jala, Jalo)
लड़की वालों की महिलाओं का बारात का डेरा देखने जाना, और उस समय गाया जाने वाला गीत (अध्याय 5 और 18)।

जूवा-जूई (Juva-jui)
शादी के बाद के खेल: दूधिया पानी में अंगूठी और सिक्के ढूँढना, और कांकण डोरा खोलना (अध्याय 30)।

झोळ (Jhol)
नहाने से पहले पिता बेलन से दुल्हन या दूल्हे पर दही डालते हैं (अध्याय 14)।

टूंटिया (Toontiya)
बारात के जाने के बाद महिलाएँ पहले घर में जो नकली शादी रचाती थीं (अध्याय 17)।

ठाकुर बाड़ी (Thakur bari)
घर का पूजा-घर; परिवार की पुस्तिका के अनुसार शादी के बाद तणी वहीं बाँधी जाती है, और पुश्तैनी घर के पूजा-घर को पुस्तिका ठाकुरवाड़ी कहती है (अध्याय 9 और 33)।

ढुकाव (Dhukav)
बारात का दुल्हन के घर के द्वार पर या शादी की जगह के मुख्य द्वार पर पहुँचना (अध्याय 19)।

तणी (Tani)
मंडप के आर-पार बाँधी जाने वाली शुभ डोरी, जिसे फेरों के बाद दूल्हा खोलता है (अध्याय 9 और 26)।

तोरण (Toran)
दुल्हन के दरवाज़े के ऊपर लगा सजा हुआ ढाँचा, जिस पर दूल्हा वार करता है (अध्याय 19)।

थली पूजन (Thali Puja)
बिदाई से पहले रसोई की देहरी या भवन के द्वार की पूजा (अध्याय 26)।

थालेड़ी (Thaledi)
दूल्हे के दरवाज़े के अंदर रखी सात थालियाँ, जिन्हें उसकी कटार से अलग किया जाता है और दुल्हन बिना आवाज़ किए उठाती है (अध्याय 28)।

दस्तूर (Dastoor)
रीत से निभाई जाने वाली रस्म; सगाई के दो दस्तूर होते हैं, दोनों घरों में एक-एक (अध्याय 1)।

धान रोळना (Dhan Rolna)

महिलाएँ ओढ़ने के नीचे सात बार अनाज एक छाज से दूसरे छाज में डालती हैं; इसी से शादी की रसोई शुरू होती है (अध्याय 10)।

धोक (Dhok)

श्रद्धा से झुककर प्रणाम करना, ख़ासकर मायां और परिवार के देवी-देवताओं के आगे (अध्याय 15 और आगे)।

ध्रुव दर्शन (Dhruva darshan)

रात की शादी में दुल्हन को ध्रुव तारा दिखाना, या दिन की शादी में सूरज (अध्याय 24)।

नख (Nakh)

खांप की एक उप-शाखा, जिसका नाम अक्सर किसी गाँव या पेशे पर होता है; इसे उप-खांप भी कहते हैं (भाग शून्य)।

नान्दीमुख (Nandimukh)

शादी से पहले पुरखों के लिए की जाने वाली रस्म, जिसके बाद परिवार में किसी का जन्म या मृत्यु होने पर भी शादी नहीं रुकती (अध्याय 4)।

निकासी (Nikasi)

दूल्हे का घोड़ी पर बैठकर घर से निकलना (अध्याय 17)।

नीमझारी (Neemjhari)

दरवाज़े पर दूल्हे के ऊपर कंधे से छाती तक नीम की हरी डाली फेरना (अध्याय 19)।

नेग (Neg)

रीत के अनुसार किसी ख़ास रिश्तेदार को किसी ख़ास मौके पर दिया जाने वाला उपहार (पूरी किताब में)।

नेतरा (Netra)

बिलोने की रस्सी, चाँदी की ज़ंजीर, मोतियों और मौली से बनी डोरी, जिससे कोई महिला अपने भाई या बेटे को चार बार आड़े-तिरछे नापती है (अध्याय 11, 17, 19 और 28)।

पग पकड़ाई (Pag pakdai)

दूल्हे के घर दुल्हन हर बड़े जोड़े के पैर पकड़ती है (अध्याय 29)।

पतासा (Patasa)

चीनी की बूंद जैसी मिठाई, जिसे बताशा भी कहते हैं (अध्याय 6 और 9)।

परात (Parat)

धातु की चौड़ी और उथली थाली, जो जूवा-जूई में काम आती है (अध्याय 30)।

परिवार की पुस्तिका (Family manual)

मुंबई के एक माहेश्वरी परिवार की लिखी हुई विवाह-पुस्तिका (reetrivaz.in) के लिए इस किताब का छोटा नाम (इस किताब को कैसे पढ़ें; स्रोत और आगे पढ़ने के लिए)।

पाटा (Pata)

लकड़ी का नीचा तख़्ता, जिस पर दुल्हन या दूल्हा खड़े होते या बैठते हैं (अध्याय 14)।

पाणिग्रहण (Panigrahan)

दुल्हन का हाथ थामने की वैदिक विधि, जो हथलेवा का मूल है (अध्याय 22)।

पितरजी (Pitarji)

पुरखे, जिनके लिए देवी-देवताओं का पाँचवाँ गीत गाया जाता है (अध्याय 4 और 5)।

पीठी (Pithi)

दुल्हन या दूल्हे को लगाया जाने वाला हल्दी का लेप (अध्याय 14)।

पीले चावल (Peele chawal)

घी और हल्दी में मले चावल, जो दूल्हे की शादी में सावा पूजन पर बारात के न्योते के लिए बनाए जाते हैं (अध्याय 8)।

पीहर (Pihar)

विवाहित महिला के माता-पिता का घर (अध्याय 6 और 32)।

पेचा (Pecha)

कलफ़ लगे सूती कपड़े की लंबी पगड़ी, जो साफ़े की जगह पहनी जाती है (अध्याय 17)।

पेहरावनी (Pehravani)

शादी के बाद लड़की वाले कपड़े और उपहार देकर लड़के वालों का मान करते हैं (अध्याय 26)।

फेर-पाटा (Pher-pata)

फेरों की जगह पर दो गद्दियों पर बैठे जोड़े की पूजा (अध्याय 26)।

बड़ा भात (Bada Bhat)

फेरों के बाद का मुख्य भोज, जो देवी-देवताओं और पुरखों के लिए निकाली गई थालियों से शुरू होता है (अध्याय 25)।

बड़ी (Badi)

पिसी मूंग की छोटी सूखी गोलियाँ; बान में दुल्हन या दूल्हा सात बड़ी बनाते हैं, और बत्तीसी पर बड़ी की सब्ज़ी बनती है (अध्याय 6 और 9)।

बत्तीसी (Battisi)

बत्तीस: माँ हर चीज़ बत्तीस-बत्तीस लेकर अपने भाइयों के घर जाती है और उन्हें मायरा भरने का न्योता देती है; इसे बत्तीसी न्यूतना कहते हैं (अध्याय 6)।

बधाईदार (Badhaidar)

ख़ुशख़बरी लाने वाला: पुराने चलन में वह जंवाई, जो बारात के लौटने की ख़बर देने पहले आ जाता था (अध्याय 28)।

बधावा (Badhava)

कोई शुभ काम पूरा होने पर गाए जाने वाले ख़ुशी के गीत, जैसे बिदाई से लौटने पर और मायां उठाने के समय (अध्याय 27, 28 और 32)।

बनड़ा, बनड़ी (Banda, bandi)

राजस्थानी घरेलू बोलचाल में दूल्हा और दुल्हन (अध्याय 7 और आगे)।

बनोरी (Banori)

बान के दिनों में दुल्हन या दूल्हे की शाम की सवारी; पहली बनोरी ब्राह्मण बनोरी होती है, जिसमें कोई ब्राह्मण आशीर्वाद देता है (अध्याय 13)।

बन्ना, बन्नी (Banna, banni)

शादी के गीतों में दूल्हा और दुल्हन; बन्ना गीत और बन्नी गीत दोनों पक्षों के अपने-अपने गीत हैं (अध्याय 5)।

बरी (Bari)

शादी की सुबह लड़के वालों की ओर से भेजे गए दुल्हन के कपड़े, गहने और श्रृंगार (अध्याय 16)।

बाजोट (Bajot)

लकड़ी का नीचा आसन या पीढ़ा (अध्याय 28 और 29)।

बाड़-रुकाई (Baad-rukai)

दूल्हे की बहनें उसके घर का दरवाज़ा तब तक रोके रखती हैं, जब तक उन्हें पैसे न मिल जाएँ (अध्याय 28)।

बान (Baan)

वे दिन जब दुल्हन या दूल्हे को उबटन लगाया जाता है और घर में ही रखा जाता है; अब यह सावा पूजन के साथ होता है। बान भरना यानी उस मौके पर तिलक करना और रुपये देना (अध्याय 9)।

बिदाई (Vidai)

दुल्हन का अपने माता-पिता का घर छोड़कर जाना (अध्याय 27)।

बिनणी (Binani)

परिवार की पुस्तिका में दुल्हन के लिए आया शब्द, ख़ासकर घर की नई बहू के रूप में (अध्याय 28 और आगे)।

बिहाणा (Bihana)

भोर की रस्म और गीत, जिनसे शादी का दिन शुरू होता है (अध्याय 13)।

बीन राजा (Beend Raja)

शादी के लिए सज जाने के बाद दूल्हा; बीन यानी दूल्हा (अध्याय 17)।

बीर (Bir)

भाई, सबसे बढ़कर बत्तीसी और मायरे के गीतों में माँ का भाई (अध्याय 6 और 11)।

बीर भोजन (Bir Bhojan)

मायरे के बाद का भोजन, जिसमें बहन अपने हाथों से भाइयों को खाना परोसती है (अध्याय 11)।

बेस (Bes)

कपड़ों का एक जोड़ा; बरी में ऐसे कई बेस होते हैं (अध्याय 16)।

बेह के सात मटके (Beh ki handi)

कुम्हार के यहाँ से आए मिट्टी के सात मटके, एक के ऊपर एक, जो मंडप के खंभे के पास रखी जाती हैं और आख़िर में दूल्हे के घर पहुँचती हैं (अध्याय 10, 16, 26 और 31)।

भट्टी (Bhatti)

शादी की रसोई का चूल्हा, जिसका नेग फेरों के बाद दूल्हा करता है (अध्याय 26)।

भैरूं (Bhairun)

भैरव, रक्षा करने वाले देवता, जो कुलदेवी के साथ रहते हैं; जो परिवार उन्हें मानता है, वह भैरूंजी का एक गीत भी जोड़ता है (अध्याय 5 और 13)।

मंगलाष्टक (Mangalashtak)

कुछ परिवारों में वरमाला से पहले पढ़े जाने वाले आशीर्वाद के श्लोक (अध्याय 20)।

मनुहार पत्रिका (Manuhar patrika)

पहला न्योता, जो लगभग तीन महीने पहले भेजा जाता है; उसके बाद कुमकुम पत्रिका लगभग एक महीना पहले जाती है (अध्याय 3)।

महेश नवमी (Mahesh Navami)

ज्येष्ठ शुक्ल नवमी, जिस दिन समाज अपनी उत्पत्ति को याद करता है (भाग शून्य, अध्याय 33)।

मांडा झांकना (Manda Jhankna)

मांडे में झांकना: शादी के बाद जोड़े का पहली बार दुल्हन के घर आना, जब उसका भाई उन्हें लेने जाता है (अध्याय 31)।

मामा फेरे (Mama Phere)

अग्नि की विधियों से पहले दुल्हन के दूल्हे के चारों ओर तीन फेरे, जिनमें उसके मामा आगे रहते हैं; इन्हें बाहर के फेरे भी कहते हैं (अध्याय 21)।

मायरदार (Mayardar)

माँ के पीहर वाले, जो मायरा भरते हैं (अध्याय 8 और 11)।

मायरा (Mayra)

बहन के बच्चे की शादी पर माँ के भाई जो उपहार लाते हैं; इसे भात भी कहते हैं (अध्याय 11)।

मायां (Maya)

घर में शादी का पूजा-स्थान: छपा हुआ एक शुभ चित्र, जो पहले दीवार पर बनाया जाता था; हर मौके पर इसकी पूजा होती है और शादी के बाद इसे उठाया जाता है (अध्याय 15 और 32)।

मुंह दिखाई (Munh Dikhai)

बड़े-बुज़ुर्ग दुल्हन का मुंह देखकर उसे उपहार देते हैं; दुल्हन के अपने घर में, इसी से उसके परिवार का कन्यावल व्रत खुलता है (अध्याय 25 और 29)।

मुद्दा टीका (Mudda Tika)

दुल्हन का भाई दूल्हे के घर जाकर उसका तिलक करता है (अध्याय 2)।

मूंग बिखेरना (Moong Bikherna)

शादी शुरू होते समय घर की महिलाओं को बीनने के लिए हरी मूंग देना (अध्याय 7)।

मूंगधणा (Moongdhana)

शादी की रसोई के लिए लकड़ियों के गट्ठर की पूजा, नीम की एक टहनी के साथ (अध्याय 10)।

मेहंदी (Mehendi)

दुल्हन की मेहंदी ससुराल की ओर से आती है, और हथलेवा के लिए दाहिनी हथेली पर एक गोल जगह खाली छोड़ी जाती है (अध्याय 12)।

मौली (Moli)

लाल और पीला पवित्र धागा (पूरी किताब में)।

रंग भात (Rang Bhat)

दुल्हन के आने पर दूल्हे के घर होने वाला भोज (अध्याय 28)।

रातीजगा (Rati-juga)

देवी-देवताओं के लिए महिलाओं के गीतों की रात; परिवार की पुस्तिका में दुल्हन के आने के बाद दूल्हे के घर एक रातीजगा दर्ज है (अध्याय 13 और 29)।

लख (Lakh)

वह रस्म जिसमें सात सुहागिनें दुल्हन या दूल्हे के ऊपर से लखधन घुमाती हैं, इस कामना के साथ कि वे लाखों में फलें-फूलें (अध्याय 14)।

लखधन (Lakhdhan)

गुड़, मसालों, लाख और धातुओं का गोला, जो लख की रस्म में काम आता है (अध्याय 14)।

लखारण (Lakharan)

लाख की चूड़ियाँ बनाने और पहनाने वाली महिला (अध्याय 33)।

लखेसरी (Lakhesari)

दूल्हे के घर दुल्हन के हाथीदाँत के चूड़े के आगे और पीछे लाख की चूड़ियाँ जोड़ना (अध्याय 33)।

लग्न (Lagan)

शादी का शुभ समय, जो सावा पूजन पर गुलाबी कागज़ पर लिखा जाता है (अध्याय 3 और 8)।

लग्न पत्रिका (Lagan patrika)

लड़की वालों की ओर से शादी का समय तय करने वाली पुराने ढंग की औपचारिक चिट्ठी, जो वरणा के समय दूल्हे के पास ले जाई जाती है (अध्याय 3 और 18)।

लाजाहोम (Lajahoma)

फेरों के समय अग्नि में खील की आहुति (अध्याय 23)।

लापसी (Lapsi)

दलिये की मिठाई, जो बत्तीसी, सुहाग थाल और मायां उठाने पर बनती है (अध्याय 6, 29 और 32)।

लूणराई (Lunrai)

नज़र से बचाने के लिए किसी के चारों ओर नमक और राई घुमाना (अध्याय 13, 15 और 17)।

वधू प्रवेश (Vadhu Pravesh)

दुल्हन का अपने पति के घर में प्रवेश (अध्याय 28)।

वरणा (Varana)

वह रस्म जिसमें दुल्हन के पिता दूल्हे के पैर धोते हैं और दोनों पंडित दोनों गोत्रों का उच्चारण करते हैं (अध्याय 18)।

वरमाला (Varmala)

मालाओं का आदान-प्रदान, जिसमें पहले दुल्हन माला पहनाती है (अध्याय 20)।

विनायक (Vinayak)

गणेश; परिवार का वह छोटा बालक भी, जो सावा पूजन से गणगौर पूजा तक उनके रूप में दुल्हन या दूल्हे के पास रहता है (अध्याय 8 और 15)।

विरद विनायक (Virad Vinayak)

शादी से पहले पीठी के दिनों के लिए परिवार की पुस्तिका का नाम; पहले ये दिन पाँच या सात होते थे (अध्याय 13 और 14)।

विवाह हाथ (Vivah Hath)

वह रस्म जिसमें तिलक, मौली और मूंग बाँटने के साथ घर शादी में प्रवेश करता है (अध्याय 7)।

शगुन (Shagun)

शुभ निशानी या शुभ संकेत (पूरी किताब में)।

शिलारोहण (Shilarohan)

अग्नि के हर फेरे पर दुल्हन का पत्थर पर पैर रखना (अध्याय 23)।

सगाई, रोकना (Sagai, Rokna)

सगाई, और सबके सामने रिश्ता पक्का करना (अध्याय 1)।

सगाजी (Sagaji)

दुल्हन की सास के रूप में दूल्हे की माँ, यानी समधन (अध्याय 26)।

सप्तपदी (Saptapadi)
सात कदम (अध्याय 24)।

सवामणी (Savamani)
किसी देवस्थान पर सवा मन, यानी एक बड़े नाप में, चढ़ाया जाने वाला प्रसाद (अध्याय 33)।

सांकड़ी (Sankadi)
शादी से पहले की रात, जो उत्सव मनाते और जागते हुए बिताई जाती है (अध्याय 13)।

सांकळी (Sankali)
दूल्हे के दरवाज़े पर बनाई जाने वाली ज़ंजीर जैसी आकृति, जो जोड़े के लिए खुली छोड़ी जाती है और दुल्हन के अंदर आने के बाद बंद कर दी जाती है (अध्याय 28)।

सांझा (Sanjha)
बान के दिनों के शाम के गीत (अध्याय 13)।

सावा पूजन (Sava Pujan)
गणेश पूजा, जिससे शादी शुरू होती है; इसी में विनायक के रूप में बालक बिठाया जाता है और लग्न लिखा जाता है (अध्याय 8)।

सिंजारा (Sinjara)
तीज और गणगौर पर लड़के वालों की ओर से सगाई हुई लड़की को भेजे जाने वाले उपहार (अध्याय 3)।

सिंदूर (Sindoor)
माँग में भरा जाने वाला लाल रंग, जिसे दूल्हा भरता है (अध्याय 24 और 26)।

सिकोरा (Sikora)
मिट्टी की छोटी तश्तरी, जिसे दुल्हन या दूल्हा दाहिने पैर से तोड़ते हैं (अध्याय 14)।

सिर-गूंथी (Sir-gunthi)
दुल्हन के बालों में तेल डालकर चोटी गूँथना और माँग भरना, पहले दुल्हन के घर और फिर दूल्हे के घर (अध्याय 26 और 29)।

सिरोपाव (Siropav)
मान में दिया जाने वाला कपड़ों का जोड़ा; यहाँ पेहरावनी में दूल्हे को दिया जाता है (अध्याय 26)।

सीख (Sikh)
जाने वाले को दिए जाने वाले बिदाई के उपहार; शादी के बाद दुल्हन का पहली बार रीत से पीहर जाना भी सीख कहलाता है (अध्याय 31 और 32)।

सीठणे (Sithne)
छेड़छाड़ के गीत, जो राजस्थानी शादियों में महिलाएँ गाती हैं (अध्याय 5)।

सुवाली (Suvali)
गेहूँ की तली हुई गोल टिकिया; वरमाला से पहले सात सुवालियों की माला लाई जाती है (अध्याय 20)।

सुहाग थाल (Suhag Thal)
चाँदी की वह थाली, जिसमें से दूल्हे के घर की महिलाएँ नई दुल्हन को खिलाती हैं (अध्याय 29)।

सुहागबीड़ी (Suhag-bidi)
फेरों के बाद दुल्हन की बहनें, बुआएँ, मौसियाँ, मामियाँ और भाभियाँ उसे जो साड़ी देती हैं (अध्याय 25)।

सुहागिन (Suhagin)
विवाहित महिला, जिसके पति जीवित हैं; कई रस्मों में पाँच या सात सुहागिनें आगे रहती हैं (अध्याय 14 और आगे)।

सूतक (Sutak)
परिवार में जन्म या मृत्यु के बाद की रस्मी अशुद्धि (अध्याय 4)।

सूप (Soop)
अनाज फटकने का छाज (अध्याय 10 और 23)।

सेनासूत (Senasut)
ससुराल से आया चाँदी के तार का कलाई-बंद, जिसे दुल्हन पहनती है और बाद में अपनी सास को दे देती है (अध्याय 14, 16 और 33)।

सेवरा (Sevra)
दूल्हे के सिर की सजावट, जिनमें से दो उसके साफ़े पर बाँधे जाते हैं; दूल्हे के घर में गीतों की बैठक ख़त्म करने वाला गीत भी सेवरा कहलाता है (अध्याय 5 और 17)।

स्तम्भ रोपण (Stambh Ropan)
दुल्हन के घर लड़के वालों के कोई बड़े या जंवाई मंडप के खंभे की पूजा करते हैं (अध्याय 16)।

हथलेवा (Hathleva)
दुल्हन और दूल्हे के दाहिने हाथ मिलाना, दोनों हथेलियों के बीच मेहंदी का गोला रखकर (अध्याय 12 और 22)।

हृदय स्पर्श (Hridaya sparsha)
सात कदमों के बाद हृदय को छूने की विधि (अध्याय 24)।

स्रोत और आगे पढ़ने के लिए

अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा की कोई छपी हुई विवाह-पुस्तिका नहीं है। इस किताब के अध्याय नीचे दिए गए समाज के स्रोतों पर, 1916 में छपे जातियों के एक विवरण पर, महासभा के अपने इतिहास पर, और "वैदिक संस्कार" लिखी विधियों के लिए पारस्कर गृह्यसूत्र पर टिके हैं। जहाँ कोई रिवाज़ सिर्फ़ एक स्रोत पर टिका है, वहाँ अध्याय यह बताता है। वेब पते वैसे ही दिए गए हैं जैसे वे किताब लिखते समय थे।

समाज के स्रोत

- reetrivaz.in: "Reeti Rivaaj: Maheshwari Samaj ke Reeti Rivaaj", मुंबई के एक माहेश्वरी परिवार की लिखी हुई विवाह-पुस्तिका, हिंदी में, जिसमें राजस्थानी शब्द, गीत, ख़रीदारी की सूचियाँ और लगभग दो सौ गीतों का सूची के साथ ऑडियो संग्रह है (वेब और डाउनलोड होने वाली पीडीएफ़, 2025)। संकलन: Suman Shriram Tapadia; प्रेरणा: Shriram Tapadia (1928 से लगभग 2014)। परिवार नागौर ज़िले की लाडनूं तहसील के जसवंतगढ़ का है और मुंबई में आकर बसा। हिंदी में यह उपनाम तापड़िया लिखा जाता है; साइट अंग्रेज़ी में इस खांप को Taparia लिखती है, और खांपों की सूचियों में यह Tapdia है। पुस्तिका अपने परिवार के अलग तरीकों को अलग से बताती है, और अध्याय उन्हें एक परिवार का चलन ही मानते हैं। https://www.reetrivaz.in/
- Maheshwari Samaj Ludhiana, "Customs and Traditions of Maheshwari Samaj", 38 बातों की एक सूची, जो हिंदी मूल से अंग्रेज़ी में अनुवाद की गई है। http://maheshwari-samaj-ludhiana.com/maheshwarirituals.html
- Akhil Bharatvarshiya Maheshwari Mahasabha, इतिहास वाला पेज, 1891 से महासभा और उसके सुधारों के बारे में। https://www.maheshwarimahasabha.org/history-of-abmm/ ; साथ में महासभा पर उसका पेज (https://www.maheshwarimahasabha.org/about-abmm/), समाज और उसके प्रतीक-चिह्न पर पेज (https://www.maheshwarimahasabha.org/about-the-maheshwari-samaj/) और महेश नवमी पर पेज (https://www.maheshwarimahasabha.org/mahesh-navami/)।

- Hindi Vivek, "Maheshwari samaj ki sanskriti" (2015), समाज के ही एक व्यक्ति का लिखा विवरण, रीति-रिवाज़ों, खान-पान और त्योहारों पर। https://hindivivek.org/253
- Sri Maheshwari Times, समाज की पहचान के चिह्नों, विवाह के नियम और समाज में गणगौर की जगह पर। https://srimaheshwaritimes.com/maheshwari-community/
- Mumbai Maheshwari Samaj, उत्पत्ति और त्योहारों वाला पेज। https://www.mumbaimaheshwari.com/orgin_of_maheshwari ; और themaheshwari.com, उत्पत्ति, खांपों और गोत्रों पर। https://www.themaheshwari.com/
- Premsukhanand Maheshwari, "Maheshwari Utpatti evam Sankshipt Itihas", part 1 (Mahesh Navami, 2014)। भक्ति-भाव से लिखा इतिहास, जिसे एक लेखक के बताए रूप में ही उद्धृत किया गया है।

विद्वान उत्पत्ति कथा के जिस सबसे पुराने छपे रूप का हवाला देते हैं, वह Sivkaran Ramratan Darak का 1923 का इतिहास है; इस किताब के लिए उसकी कोई प्रति नहीं मिल पाई।

1916 का विवरण

- R. V. Russell and Hira Lal, **The Tribes and Castes of the Central Provinces of India** (London: Macmillan, 1916), vol. II, article "Bania: Maheshri"। Indpaedia पर उपलब्ध: http://indpaedia.com/ind/index.php/Bania:_Maheshri/_Maheswari । Indpaedia का यह पेज समाज की उत्पत्ति पर एक आधुनिक हिस्से से शुरू होता है, जिसके लेखक का नाम नहीं दिया गया है; यह किताब उस हिस्से को अलग से, समाज में कही जाने वाली कथा के रूप में उद्धृत करती है, और उसे Russell और Hira Lal के नाम नहीं करती।

वैदिक ग्रंथ और कानून

- Hermann Oldenberg (translator), **The Grihya-Sutras: Rules of Vedic Domestic Ceremonies, Part I**, Sacred Books of the East, vol. 29 (Oxford: Clarendon Press, 1886)। इसमें पारस्कर गृह्यसूत्र के कांड 1 की कंडिका 4 से 8 तक में हाथ थामना, खील की आहुतियाँ, शिला, सात कदम, ध्रुव तारा और हृदय छूना आता है।
- ऋग्वेद, मंडल 10, सूक्त 85, सूर्या का विवाह-सूक्त। इसका आसानी से मिलने वाला एक अंग्रेज़ी अनुवाद है: Ralph T. H. Griffith, **The Hymns of the Rigveda** (Benares: E. J. Lazarus, 1889 to 1892)।

- Rajbali Pandey, **Hindu Samskaras: Socio-Religious Study of the Hindu Sacraments** (Delhi: Motilal Banarsidass, 2nd edition 1969, and reprints)।
- P. V. Kane, **History of Dharmasastra**, vol. II, part 1 (Poona: Bhandarkar Oriental Research Institute, 1941), विवाह पर।
- The Hindu Marriage Act, 1955, धारा 7: हिंदू विवाह किसी भी पक्ष के रीति-रिवाज़ों के अनुसार हो सकता है, और जहाँ उन रिवाज़ों में सप्तपदी शामिल है, वहाँ सातवाँ कदम रखते ही विवाह पूरा हो जाता है।
- The Wildlife (Protection) Act, 1972, 1986 और 1991 के संशोधनों के साथ, जिसके तहत भारत में हाथीदाँत का व्यापार बंद है।

विद्वानों की किताबें और लेख

- Lawrence A. Babb, **Alchemies of Violence: Myths of Identity and the Life of Trade in Western India** (New Delhi: Sage, 2004)। माहेश्वरी उत्पत्ति कथा को विद्वान की नज़र से पढ़ने वाली किताब।
- Lawrence A. Babb, "Violence and construction of trading-caste identity", in Lawrence A. Babb, Varsha Joshi and Michael W. Meister (eds), **Multiple Histories: Culture and Society in the Study of Rajasthan** (Jaipur: Rawat, 2002)।
- Karen Isaksen Leonard, "Family Firms in Hyderabad: Gujarati, Goswami, and Marwari Patterns of Adoption, Marriage, and Inheritance", **Comparative Studies in Society and History** 53(4), 2011, pp. 827 to 854।
- Veronique Pache, "Marriage Fairs among Maheshwaris: A New Matrimonial Strategy", **Economic and Political Weekly** 33(17), 1998, pp. 970 to 975।
- Lindsey Harlan, **Religion and Rajput Women: The Ethic of Protection in Contemporary Narratives** (Berkeley: University of California Press, 1992), रातीजगा, कुलदेवी और दुल्हन पर।
- Ann Grodzins Gold, "Outspoken Women: Representations of Female Voices in a Rajasthani Folklore Community", **Oral Tradition** 12(1), 1997, pp. 103 to 133।

- Gloria Goodwin Raheja and Ann Grodzins Gold, **Listen to the Heron's Words: Reimagining Gender and Kinship in North India** (Berkeley: University of California Press, 1994)।
- Vishes Kothari, राजस्थान में रस्मों के गायन पर लेख और महिलाओं के गीतों के अनुवाद, Sahapedia। http://www.sahapedia.org/ritual-singing-tradition-rajasthan-navigating-gendered-space-religion

आगे पढ़ने के लिए

- Anne Hardgrove, **Community and Public Culture: The Marwaris in Calcutta, c. 1897 to 1997** (New York: Columbia University Press, 2004)।
- Thomas A. Timberg, **The Marwaris: From Jagat Seth to the Birlas** (New Delhi: Penguin, 2014)।

रिकॉर्डिंग

- Rupayan Sansthan, Jodhpur (the Komal Kothari collection), राजस्थानी शादी के गीतों की गाँव-गाँव जाकर की गई रिकॉर्डिंग, जो Internet Archive पर डिजिटल रूप में मौजूद हैं, जैसे https://archive.org/details/dni.ncaa.RS-1119-AC । ये कई समुदायों की रिकॉर्डिंग हैं, माहेश्वरी समाज की नहीं।
- reetrivaz.in पर शादी के गीतों का सूची के साथ ऑडियो संग्रह, जिसका ज़िक्र ऊपर है।

गीत और परिवार की यादें

इस किताब की बहुत-सी बातें इनमें से किसी भी जगह लिखी हुई नहीं हैं। बत्तीसी, मायरा, मायां, मामा फेरे, थालेड़ी और जात महिलाओं के गीतों और परिवार की यादों में ज़िंदा हैं। ये सास से बहू तक और दादी-नानी से नाती-पोतों तक पहुँचती आई हैं, और हर परिवार अपने लोगों के नाम इन गीतों में जोड़कर गाता है। हर परिवार का रूप थोड़ा अलग होता है। हर अध्याय के आख़िर में दिए सवालों के जो जवाब आपके बड़े-बुज़ुर्ग देते हैं, वे अपने आप में एक मूल स्रोत हैं, और एक बार लिख लिए जाएँ तो अगली पीढ़ी के लिए भी स्रोत बन जाएँगे।

लेखक के बारे में

अरुण अग्रवाल 1986 से आईटी के क्षेत्र में हैं। वे EbizIndia Consulting Pvt. Ltd. के संस्थापक और सीईओ हैं, और उन्होंने जादवपुर विश्वविद्यालय से एम.ई. (स्वर्ण पदक) किया है। उन्होंने **The Marwari Wedding Rituals** भी लिखी है, जो अग्रवाल परिवारों के लिए इसी किताब की साथी किताब है, और **Invisible to Prominent** भी, जो ऑनलाइन ढूँढे जाने के बारे में है।

सही जानकारी के बारे में एक बात

माहेश्वरी शादी के रीति-रिवाज़ हर परिवार में, हर खांप में और हर इलाके में अलग होते हैं: राजस्थान की मूल धरती पर, महाराष्ट्र, मालवा, हैदराबाद, बंगाल में, और हर उस जगह जहाँ माहेश्वरी परिवार जाकर बसे हैं। यह किताब वही चलन बताती है जो इसके स्रोतों में दर्ज है, और जो अलग-अलग रूप मिले, उनका भी ज़िक्र करती है। यह हर परिवार का तरीका नहीं बता सकती। जहाँ आपका परिवार कुछ अलग करता है, वहाँ आपके लिए आपके परिवार का तरीका ही सही है।

स्रोतों की सूची इसलिए दी गई है ताकि पाठक ख़ुद जाँच सकें कि कहाँ क्या छपा है। जहाँ कोई रिवाज़ सिर्फ़ एक स्रोत पर टिका है, वहाँ अध्याय यह बताता है; जहाँ किसी भी स्रोत में किसी रस्म का मतलब दर्ज नहीं है, वहाँ अध्याय यह भी बताता है। शादी के दिन परिवार के पंडित जी की अपनी परंपरा ही मानी जाती है।

फिर भी कुछ ग़लतियाँ रह गई हो सकती हैं, और हम उनके बारे में जानना चाहेंगे।

सुधार भेजने के लिए

अगर आपको कोई ग़लती दिखे, कोई ऐसा रूप पता हो जो हमसे छूट गया है, या "बड़ों से पूछिए" वाले किसी सवाल का जवाब हो जो आप बताना चाहें, तो कृपया **+91 98310 27107** पर व्हाट्सऐप संदेश भेजिए। अध्याय का नंबर ज़रूर लिखिए, और बताइए कि आपका तरीका किस परिवार, खांप या इलाके का है। किताब की अगली छपाई में सुधारों और परिवारों के अलग-अलग तरीकों पर विचार किया जाएगा।